भारतेंदुकालीन हास-परिहास

(शिष्ट हास्य का संकलन)

सम्पादक—

ब्रजेन्द्र नाथ पाण्डेय, एम० ए०

प्रकाशक—

पंकज प्रकाशन

काशी

प्रकाशक
पंकज प्रकाशन : बनारस

प्रथम संस्करण
नवम्बर '५६
मूल्य—एक रुपया बारह आना

अधिकृत विक्रेता—
सुभाष पुस्तक मन्दिर
अवधगर्वी, बनारस

मुद्रक
लक्ष्मीचन्द
राष्ट्रभाषा मुद्रणालय,
लहरतारा, बनारस—४

आधुनिक-हिन्दी के जन्म-दाता
हास्य-साहित्य के जनक
भारतेंदु
को

प्रकाशक
पंकज प्रकाशन : बनारस

प्रथम संस्करण
नवम्बर '५६
मूल्य—एक रुपया बारह आना

अधिकृत विक्रेता—
सुभाष पुस्तक मन्दिर
अवधगर्बी, बनारस

मुद्रक
लक्ष्मीचन्द
राष्ट्रभाषा मुद्रणालय,
लहरतारा, बनारस—४

आधुनिक-हिन्दी के जन्म-दाता

हास्य-साहित्य के जनक

भारतेंदु

को

अनुक्रम

वक्तव्य

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी साहित्य के कृतिकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम द्वारा देश की शोचनीय और पराधीन अवस्था को निरख कर अनेक प्रकार से नवचेतना का बीज बोया। कुछ अपने हृदय की व्याकुलता पाठकों के समक्ष उड़ेल कर उन्हें सुखी और सम्पन्न बनाने में प्रयत्नशील रहे। तथा देश की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों पर कुछ ने प्रकाश डाला। बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उन साहित्यकारों के अग्रदूत नेता थे, अपने क्रान्तिकारी नेता से प्रभावित होकर अन्य सहवर्गीय लेखकों ने उनके नव मार्ग का अनुसरण किया। भारतीयों को अधोगति से उबारने का प्रयत्न ये लेखक करते रहे।

भारतेन्दु-कालीन साहित्य में एक जिन्दादिली थी, जो कि अन्य युग के लेखकों में प्रायः दुर्लभ दृष्टिगोचर होती है। लेखक गण अपने जागरूक मनोविनोदी व्यक्तित्व का परिचय स्थान-स्थान पर देते रहे। व्यंग्य तथा परिहास से युक्त भावात्मक निबन्ध तथा चोंज उस समय के पत्र-पत्रिकाओं में परिपूर्ण है, जिसे पढ़कर पाठक हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं। मैं कुछ चुने हुए निबन्धों का एक अघन्य संग्रह व सम्पादन 'भारतेन्दु कालीन व्यंग्य परम्परा" नामक पुस्तक में कर चुका हूँ।

सजीव और चेतना से पूर्ण युग के पत्रों में आये हुए चोंज अथवा चुटकुलों का सम्पादन इस बालमनोवृद्धि से प्रेरित पुस्तक में करते हुए मुझे अत्यन्त ही आनन्द प्राप्त हो रहा है। हमारे आधुनिक पाठक उस युग के चुने चुटकुलों से पूर्ण परिचय प्राप्त कर सकेंगे। भारतेन्दु द्वारा सम्पादित हरिश्चन्द्र मैगजीन (१८७३), हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका (१८८०) हिन्दी प्रदीप (१८७८, पं० बालकृष्ण भट्ट), क्षत्रिय पत्रिका (१९३९, राधाचरण गोस्वामी) आनन्द कादम्बिनी (सम्पादक बद्रीनाथ चोधरी, प्रेमघन) इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं से ये चुटकुले संग्रहित किये गये हैं। "ब्राह्मण पत्र" के मनमौजी हास्यप्रधान फक्कड़ सम्पादक पं० प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दुयुग के एक अत्यन्त सर्वप्रिय लेखक थे।

सन् १८९५ ई० में पं० सूर्यनारायण शर्मा ने "हास्य मञ्जरी" नामक उस युग के चुटकुलों का संग्रह प्रकाशित किया था। "हास्य मञ्जरी" के कुछ भाग स्वयं पण्डित जी द्वारा लिखित भी हैं। आपकी अन्य पुस्तकें "दिल्लगी की पुड़िया" तथा "हास्यरत्नाकर" लक्ष्मी वेङ्काटेश्वर प्रेस से ही प्रकाशित हुई थीं। शर्मा जी ने इन चुटकुलों को हास्य रस से युक्त शिक्षापूर्ण पुस्तक कहा है, निम्नलिखित वाक्य आपकी रचना में सर्वप्रथम लिखे रहते थे :—

"देखा सो हँसा और हँसा सो फँसा।"

"जिसमें एक से एक उत्तम शिक्षा और हास्य रस पूर्ण रसीले गर्वीले चटपटे चुटीले चुटकले हैं जिनके पढ़ने वा सुनने से—

"वेहु हँसे न हँसे कबहूँ अरू नित्य हँसे सो हँसे ही हँसेंगे।"

हास्यावतार की अपनी अनोखी सूझ से पूर्ण सुन्दर चुटकुलों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

गधा

एक गधे से किसी ने पूछा कि तू सब घास-फूस खा जाता है मगर भङ्ग नहीं खाता इसका क्या कारण है ? गधे ने कहा कि मुझे उससे बहुत डर लगता है, पूछा क्यों ? बोला कि जब मनुष्य इसको खा लेता है तो मेरे दर्जे को पहुँच जाता है अगर यह मैं खाऊँगा तो फिर न जाने किस दर्जे को पहुँच जाऊँगा—

सुन्दर बीबी

एक शख्स अपनी हसीन बीबी को मलामत कर रहा था। औरत के बाज रिश्तेदारों ने कहा तुम इससे क्यों लड़ते हो क्या यह खूब-सूरत नहीं है। मर्द ने अपने पाँव की जूती जो नई और चमकदार थी अपने ससुराल वालों को दिखाकर कहा, कि "क्या यह खूब-सूरत नहीं है मगर पहनने वाले के सिवा दूसरे को क्या मालूम कि यह किस कदर काटती है"।

एक पैसा भी पूरा न हुआ

एक आदमी ने किसी भले मनुष्य से पूछा "क्यों साहब आपका नाम क्या है" ? भले मनुष्य ने उत्तर दिया "कि साहब मेरा नाम दमड़ी लाल है"—"फिर उसने पूछा कि आपके पिता का नाम क्या है"। भले आदमी ने कहा "कि लाला छदम्मीलाल"। फिर उसने पूछा कि "आपके दादा का नाम क्या था ?" भले आदमी ने कहा कि "भाई साहब ! मेरे दादा का नाम पचकौड़ी मल था"। तब तो प्रश्नकर्त्ता ने कहा "क्या खूब ? आपके तीन पुश्त में भी एक पैसा पूरा न हुआ"।

"भङ्ग महिमागान" श्री वाराङ्गना रहस्य महानाटक के चतुर्थ गर्भाङ्क से उद्धरित किया है जो कि सं० १९६६ में प्रकाशित हुआ

था। "अलमस्ती का एक चित्र" हिन्दी प्रदीप नवम्बर १९०६ ई० में लोचन प्रसाद जी द्वारा लिखा गया था। गर्दभ, श्वान, ऊष्ट्र और आदमी शीर्षक पद्य भाग मार्च १९०६ ई० में प्रकाशित हुए थे।

"रीतिकालीन काव्य की परम्परा में पला हुआ भारतेन्दु-युग इस प्रकार की छेड़छाड़, चुहुलबाजी, कौतुक प्रियता और चतुराई का युग था। भारतेन्दु और उनके समकालीन कवियों के काव्य में इस प्रकार की चुहुलबाजो और चतुराई के अनेक उदाहरण है।" (डा० श्री कृष्ण लाल)

इस युग के साहित्यिक देश सुधार के लिए जिस लगन और फक्कड़पन से व्यंग्य और परिहास (चोज) मार्ग का अनुसरण किया वह हिन्दी साहित्य में एक अद्वितीय कार्य है। जिसे हिन्दी साहित्य के पाठक कभी भूल नहीं सकते। ये छोटे-छोटे चुटकुले व्यंग्य, शिक्षा और सुधार की भावना से ओत-प्रोत है। बीरबल के चुटकुलों की तरह इनमें भी एक विचित्र आनन्द प्राप्त होता है। कुछ में शृङ्गारिकता भी झलकती है। जिन्हें प्रतीक रूप में ही रक्खा गया है।

उस युग के चोज भरी बातों में मथुरा के चौबे का मुख्य स्थान है उनकी बुद्धिमानी और अल्पज्ञता का परिचय इन चुटकुलों में प्रायः प्राप्त होता है। जैसा कि डाक्टर लाल अपने सम्पादित ग्रन्थ "श्री निवास ग्रन्थावली" में लिखते हैं। "इसी प्रकार चोबे जी की ह्रास-परिहास और चोज भरी बातें भी भारतेन्दु युग की अपनी विशेषता थी।" "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" में प्रायः प्रत्येक मास "चोज की बातें" शीर्षक स्तम्भ में छोटे-छोटे चुटकुले रहते थे। जिनमें विनोद की समुचीपूर्ण मात्रा में होती थी इन चोज की बातों में "चौबे जी" पर प्रायः चुटकुले निकलते रहते थे।"

"रणधीर और प्रेममोहिनी" नाटक के चतुर्थ गर्भांक में चित्रित चौबे जी का एक सुन्दर चरित्र देखिए।

"चौबे जी—(दर्पण में दूसरा चौबे समझ कर) चौबे जू तुम राजी हो, मधुपुरी ते आये किते दिन भये ? हमारे घरहू गये हे, हमारे छोरातै तुमको अपनो बाबा तो नाय समझ लिओ, (डर कर मन में) इनको यहाँ रहबो अच्छो नाहि। (प्रकट) भैय्या यहाँ का तत है तुम कहो तो हमहूँ तुम्हारे सङ्ग परदेस चलें, तुमनै भागहू पीई के नांहि ? नांहि पीई होई तो हमारे पास लुगदी (भाँग की गोली) तैयार है, छान डारै"

नीति शिक्षा का एक सुन्दर चित्र कहीं-कहीं चुटकुलों में भी दिखलाई पड़ जाता है। पात्रोचित भाषा के बीच-बीच में कुछ पद्यान्श भी दिखलाई पड़ जाते हैं। जो कि पहले की परम्परा का सुन्दर नमूना है। भाषा में प्रान्तीयता और विनोद की सामग्री सहज ही देखी जा सकती है। स्थान-स्थान पर विदेशियों की ओर व्यंग्य की दुधारी तलवार चमकती हुई दिखलाई पड़ती है।

शारीरिक और मानसिक थकान को दूर करने वाले इन चुटकुलों की रोचकता प्रत्येक युग में बारम्बार पढ़ने पर भी अवश्य बनी रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि इन चुने हुए चुटकुलों से प्रिय पाठकों का विशेष मनोरञ्जन होगा। विशेष क्या ?

जैतपुरा, वाराणसी
ज्येष्ठ कृष्ण आमावस्या,
सं० २०१३

ब्रजेन्द्र नाथ पाण्डेय
"दुर्यन्त"

'भारतेन्दु कालीन हास-परिहास' शीर्षक ही कुछ इतना आकर्षक है कि एक बार पुस्तक पढ़ जाने की इच्छा होती है। लगभग ६० वर्ष पूर्व १८९५ ई० में नागरी साहित्य रसिक सभा के सेक्रेटरी पं० सूर्य-नारायण शर्मा ने 'हास्य मंजरी' नाम से भारतेन्दु कालीन चुटकुलों का संग्रह प्रकाशित किया था जिसके विवरण में संग्रहकर्ता ने लिखा है जिसमें उम्दा नसीहत और दिल्लगी से भरे चुटकुले संग्रह किये गये हैं कि जिनमें पढ़ने सुनने से दिल 'बागोबाग' हो जाता है। भारतेन्दु कालीन इन चुटकुलों का उद्देश्य शिक्षा और मनोरञ्जन दोनों साथ ही साथ रहा है और सच पूछिए तो साहित्य है क्या? मनो-रञ्जन के साथ शिक्षा ही तो साहित्य है। परन्तु शिक्षा इन चुटकुलों में कम ही है इसका प्रधान उद्देश्य मनोरञ्जन या कुछ चुटीली बात कहना है। और प्रस्तुत संग्रह में चुटीली बातों से भरपूर चुटकुलों का अभाव नहीं है।

भारतेन्दु काल में ऐसे चुटकुलों का काफी प्रचार था, आज उसका उतना प्रचार नहीं है। कारण यह है कि भारतेन्दु काल के साहित्यिकों में जिन्दादिली थी और था जीवन के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण। जीवन में पाई-पाई पैसे-पैसे और क्षण-क्षण का हिसाब लगाना उस युग के लोग नहीं जानते थे। उपयोगितावाद का इतना दौर-दौरा उस युग में न था। लोग रसीली और चुटीली बातों का

आनन्द लेना जानते थे। आज हमारे जीवन में रस नाम की वस्तु है ही नहीं। वर्ड्सवर्थ के शब्दों में—

World is too much with us. हम सांसारिक मोहमाया में अत्यधिक व्यस्त हैं और इसी लिए हममें आनन्द ग्रहण करने की क्षमता भी नहीं रह गई है। भारतेन्दु कालीन इन चुटकुलों को पढ़कर यदि हमारे जीवन में कुछ रस का संचार हो सके तो यह अलभ्य लाभ होगा।

श्री ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय ने भारतेन्दु कालीन चुटकुलों का संग्रह करके हमारा बड़ा उपकार किया है। इस संग्रह में उन्होंने विशेष रूप से ऐसे चुटकुलों को ही स्थान दिया है जिसमें मनोरञ्जन के साथ ही साहित्यिक छटा भी पर्याप्त है साथ ही जिसमें अश्लीलता का अभाव है। इस कारण यह संग्रह विशेष पठनीय बन गया है। पाण्डेय जी भारतेन्दु काल के निपुण अध्येता रहे हैं। हिन्दी एम० ए० की परीक्षा में भी आपने विशेष अध्ययन के लिए भारतेन्दु कालीन साहित्य चुना था और आप का उस युग के साहित्य का अध्ययन व्यापक और गम्भीर है। आशा है आप भविष्य में भी इसी प्रकार उस युग के साहित्य के अमूल्य रत्न चुन-चुन संग्रहीत करेंगे और आज के पाठकों का मनोरञ्जन के साथ ही उपकार भी करते रहेंगे।

दुर्गाकुण्ड, वाराणसी
ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
सं० २०२३

श्रीकृष्ण लाल
एम-ए० डी० फिल्

श्री व्रजेन्द्र जी,

'भारतेन्दु-कालीन हास्य-परिहास' के प्रकाशन का प्रयास सराहनीय है। आधुनिक हिन्दी का आरम्भ जिस काल में हुआ उस युग की सामग्री का महत्व बहुत ही महत्वपूर्ण है। पर, यह खेद का विषय है कि उस युग की सामग्री बड़ी तीव्र गति से लुप्त होती जा रही है। होना तो यह चाहिये कि उस काल की समस्त पत्र-पत्रिकायें पुस्तकाकार में प्रकाशित कर दी जाँय जिससे वह सामग्री स्थायी और सुलभ बन सके, अन्यथा कुछ दिनों बाद ढूढ़ने पर भी वह सामग्री प्राप्त न हो सकेगी।

उसके जिस एक अङ्ग को संकलित करके आप प्रकाश में ला रहे हैं वह भी पूर्वोक्त अनुष्ठान का एक अङ्ग ही है। उसके द्वारा भारतेन्दुकालीन साहित्यिकों के जीवन और मन की सजीवता तथा विनोद प्रियता का परिचय मिलेगा।

आशा है आपके इस प्रयत्न का उत्तरोत्तर विकास हिन्दी के साहित्यिक करेगें। तथा आपकी कृति का हिन्दी में स्वागत होगा।

हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्व विद्यालय

करुणापति त्रिपाठी

[ह०, च०, १८७७ ई०]

सीधा इन्साफ

किसी ने एक लड़के से पूछा "चाँद और सूरज में तुम किसको बड़ा समझते हो," लड़का बोला "चाँद को, क्योंकि जब दिन को रोशनी की जरूरत नहीं रहती तब सूरज रोशनी देता है पर प्यारा चाँद रात को रोशनी देता है जब कि उसकी सबको जरूरत रहती है।

●

एक कायस्थ अनचढ़ घोड़े पर बैठा हाट में चला जाता था। किसी घुड़चढ़े ने उसे मेड़की से भी पीछे हटा बैठा देख के कहा, "भैया जी! कुछ आगे हट बैठो," बोला, "क्यों?" कहा "आसन खाली है" फिर उसने उत्तर दिया, "क्या तुम्हारे कहे से हट बैठेंगे? जैसे साईस ने बैठा दिया है, तैसे बैठे चले जाते हैं"

●

किसी बड़े आदमी के पास एक ठठोल आ बैठा था और इसके यहाँ कहीं से गुड़ आया, उसने ठट्ठे से कहा, कि महाराज! मैंने जन्म भर में तीन बिरियाँ (बार) गुड़ खाया है, बोला, बखान कर कहा, "एक तो छठी के दिन जनमघूँटी में खाया था; और एक कान छिदाये थे तब, और एक आज खाऊँगा" उसे कहा, "जी मैं न दूँ"? बोला, "दो ही बार खाया सही"।

●

एक कायस्थ ने गाने-बजाने के संसर्ग में किसी गवैये से यह कविता सुनी, "इश्क क्या है किसी कामिल से पूछा चाहिये।"

तभी से वह सिद्ध के ढूँढ़-ढाढ़ में था कि एक गोसाईं उसे मिला। इसने दण्डवत कर उससे पूछा कि महाराज इश्क क्या वस्तु है मुझे दया कर बतलाइये। इसकी बात सुनकर उसने कहा बाबा मैंने तो अपने गुरुदेव के मुख से यों सुना है।

इश्क उसी की झलक है जो सूरज की धूप।
जहाँ इश्क तहाँ आप हैं कादिर-नादिर रूप॥

●

एक दिन अकबर बादशाह के सामने किसी मुगल ने परिहास के प्रकार से राजा टोडरमल से पूछा कि राजा जी तुम्हारे यहाँ मल शब्द के क्या अर्थ है? योंही समझ कर राजा ने उत्तर दिया कि मिरजा साहिब जो बेग शब्द के अर्थ है सोई मल के है। इतने बात के सुनते ही वह मुगल बहुत लज्जित हुआ। अभिप्राय इसका यह है कि संस्कृत में ये दोनों नाम मल ही के है।

●

जादूगरनी :—

दो कुमारियों को एक जादूगरनी ने खूब ठगा, उसने कहा कि हम एक रुपये में तुम दोनों को तुम्हारे पति का मुख दिखा देंगे और रुपया जट कर उन दोनों को एक आइना दिखा दिया। बिचारियों ने जब पूछा "यह क्या है" तो वह डोकरी बोली "बलैया लो जब ब्याह होगा तब यहाँ मुँह दुल्हे का हो जायगा"॥

●

खुशामद :—

एक ना मुराद आशिक से किसी ने पूछा "कहो जी तुम्हारी माशूकः तुम्हें क्यों नहीं मिली "बिचारा उदास होकर बोला "यार कुछ न पूछो मैंने इतनी खुशामद की कि उसने अपने को सचमुच परी समझ लिया और हम आदमियों से बोलने में भी परहेज किया" ॥

●

अङ्गहीन धनी :—

एक धनी के घर उसके बहुत से प्रतिष्ठित मित्र बैठे थे, नौकर बुलाने को घण्टी बजी, सोहना भीतर दौड़ता पर हँसता हुआ लौटा और नौकरों ने पूछा "क्यों बे हँसता क्यों है ?" तो उसने जबाब दिया, "भाई, सोलह हट्टे-कट्टे जवान थे उन सभों से एक बत्ती न बुझी, जब हम गये तब बुझी" ॥

●

अद्भुत संवाद :—

"ए जरा हमारा घोड़ा तो पकड़े रहो"

"वह कूदेगा तो नहीं"

"कूदेगा। भला कूदेगा क्यों ? लो सँभालो"

"यह काटता है ?"

"नहीं काटेगा, लगाम पकड़े रहो"

"क्या इसे दो आदमी पकड़ते है तब सम्हलता है"

"नहीं"

"फिर हमें क्यों तकलीफ देते हैं ? आप तो हई हैं" ॥

●

किसी राजा के सभा में एक कवि जा के चुपचाप बैठ रहा, इतने में कोई राजसभा में से बोला कि आज क्या है जो कवि जी तुम मौन भये बैठे हो ! इसने उसकी बात का उत्तर तो न दिया पर यह दोहा पढ़ा;

अति का भला न बरसना अति की भली न धुप्प ।
अति का भला न बोलना अति की भली न चुप्प ॥

उसी ने भी इस दोहे को पढ़ सुनाया;

कौन चहे है बरसना कौन चहे है धुप्प ।
कौन चहे है बोलना कौन चहे है चुप्प ॥

फिर कवि ने यह दोहा कह सुनाया;

माली चाहे बरसना धोबी चाहे धुप्प ।
साह जो चाहे बोलना चोर जो चाहे चुप्प ॥

●

एक सिपाही बड़ा जारी था जब जीतता तब मारे आनन्द के ऐसा अज्ञान हो जाता कि कोई उसके पहरने के कपड़े उतार लेता तौ भी उसे न जान पड़ता। इसी आस से दस-पाँच लुच्चे हर घड़ी उसके साथ लगे रहते और जब सुभीता पाते तब उसका माल उड़ाते एक दिन किसी पराई ठाँव जुआ खेलने गया और लगा जीत-जीत कर रुपये अपने आगे-पीछे खिसकाने और उसके साथ के लुच्चे लगे उड़ाने। इसमें किसी ने देखकर एक से कहा कि देखो किसी की कौड़ी कोई उड़ावै। दूसरे ने उत्तर दिया क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी जो अचरज करते हो !!

"अन्धी पीसे कुत्ता खाय, पापी का माल अकारथ जाय" ॥

●

कोई पुरुष किसी पर मोहित था पर मारे लाज के अपना प्रेम उसके आगे प्रगट न करता, और जिस पै मोहित था वह भी जान-बूझकर लाज से कुछ न कहती। एक दिन वे दोनों किसी ठौर पर रात को बैठे थे कि एक पतङ्ग दिये पर आ जाता। उसको जलता देख नायक ने व्यङ्ग से यह दोहा पढ़ा;

आह दई कैसी बनी अनचाहत को सङ्ग।
दीपक को भावै नहीं जल-जल मरे पतङ्ग॥

इसके उत्तर में नायक ने कह सुनाया;

आप पतङ्ग निसङ्क जल जलत न मोड़ी अङ्ग।
पहले तो दीपक जले पाछे जले पतङ्ग॥

●

एक भले आदमी ने किसी हकीम से पूछा सुँघनी से दिमाग को कुछ नुकसान तो नहीं पहुँचता? हकीम ने जवाब दिया हरगिज नहीं क्योंकि जिनको कुछ भी दिमाग है वे सुँघनी सूँघते ही नहीं॥

(का० प०)

●

एक ने किसी अपने दोस्त से पूछा, "तुमने ऐसी छोटी (कम उम्र) औरत से क्यों शादी की?"

उसने जवाब दिया, "तुमने सुना नहीं पाप जितना छोटा पल्ले बँधे उतना ही अच्छा है"।

(का० प०)

●

एक जमींदार बैठा आम खा रहा था और उसके पास एक गरीब मर उन आमों पर टकटकी बाँधे खड़ा था मगर जमींदार उसकी तरफ

झूठ मूठ भी नहीं देखता था, एक बेर जमींदार ने उसकी ओर मुँह फेरा और पूछा "तोहरे जानवर कै का हाल है?" भर ने कहा "एक एक सुअरी तेरह ठे बचा दिहलेस है पर ओके थन बरहै हौ" जमींदार ने कहा "जब और बचवा दूध पीयत होइहैं तब एक ठे बिचारा का करत होई"

बदमाश भर ने मुँह बनाकर जवाब दिया "रौरे आम चुहकै ली तब गुलाम जौन कर: ला"

●

बलायत का वर्ल्ड अखबार लिखता है कि हाल में एक मेम साहिब कुछ लोगों को बड़ी चालाकी के साथ अपनी उमर का हिसाब समझाकर अपने सिन को हद से जिआदा घटा रही थीं, उनकी लड़की निहायत हाजिर जवाब थी उससे न रहा गया और बात को कुछ काटकर बोल उठी, "अम्मा भला अपनी और मेरी उमर में कम-से-कम नौ महीने का फर्क तो छोड़ दो ॥

(का० प०)

●

एक गृहस्थ को सात-आठ लड़के थे, एक आदमी से उसने कहा "मेरी किस्मत कुछ ऐसी फिरी है कि मुझसे एक रुपया भी नहीं पैदा होता" वह आदमी बोला "तब चार-चार लड़के तुमने कैसे पैदा किए" ॥

●

एक भले आदमी से किसी ने पूछा "औरतों के पेट में भी कोई बात पच सकती है" उसने जवाब दिया "हाँ सिर्फ एक बात"

"कौन-सी"

"उनकी उमर"

●

[हि० प्र० जुलाई १९०७ ई०]

चुहल

एक लाला की बारात की साइत ६ बजे की थी लेकिन सामान ठीक न रहने से देर हो रही थी। साइत टलती देख लालाजी पण्डित से पूछने लगे। महाराज अब क्या किया जाय सामान तैयार नहीं है और साइत बीतती है।

पण्डित जी—क्या चिन्ता। घड़ी में जब ६ बजने को ५ मिनट रहे तो घड़ी बन्द कर दीजिये। बारात सज जाने पर फिर चला देना। बारात भी सज जायगी और साईत भी न टरेगी।

(ल० म्ह)

●

[सन् १९०१ ई०]

एक जुलाहे को एक बार घोड़े सवारी का शौक हुआ पर रुपया पास न था उसने कुछ खेत जमींदार से लेकर बोया और मस्जिद में नित्य जाकर दुआ माँगने लगा कि या अल्ला मेरी खेती ऐसी हो जाय कि पाँव जमीन से दो हाथ ऊँचे रहे—संयोग बस पानी की कमी से खेती खराब हो गई अब जमींदार ने मालगुजारी के लिये जुलाहे को पकड़वाकर हाथ बँधवा कर लटका दिया, तो आप कहते हैं कि "खोदा ने दुआ कबूल तो जरूर किया पर बात ठीक उसके समझ में न आई"

●

[जु० अ० १८९२]

चोज

एक साहब के डाढ़ी और मोछों के बाल पक चले पर सिर के

जैसे के तैसे स्याह बने रहे इस पर अचरज में आय उन्होंने एक अपने मित्र से इसका कारण पूछा—मित्र उनके बड़े बेतकल्लुफ और ठठोल थे कहने लगे—अगर माफ कीजिये तो इसका ठीक कारण मैं बतलाऊँ—"आपने अपने मुँह से जियादह काम लिया और सिर को बिल्कुल काम में नहीं लाये—अर्थात् आपने सोचा बहुत कम है और बकवाद जियादह किया है।

●

किसी वकील से एक जज्ज ने कहा कि यदि हम और तुम दोनों घोड़ा और गदहा हो तो तुम क्या होना पसन्द करोगे—वकील ने कहा गधा—जज्ज ने पूछा क्यों? वकील ने कहा गधा तो जज्ज होते सुना है परन्तु घोड़ा नहीं—

●

एक वकील ने किसी डाक्टर से पूछा "अगर किसान और शैतान का मुकद्दमा हो तो कौन जीते," डाक्टर ने कहा "शैतान क्योंकि सब वकील उसी के साथी हो जायेंगे"—इसलिये कि अपने साथी की भलाई सब चाहते हैं, कहावत है "आत्मवर्गं हितमिच्छति सर्वः"—

●

एक वकील जज्ज के सामने बहस कर रहा था और जज्ज के पास उनका कुत्ता बैठा था, जज्ज का ध्यान जो बहस से उचटा तो कुत्ते को प्यार करने लगें—वकील साहब चुप रहे, जज्ज साहब ने कहा आप बहस करते जाइये चुप क्यों हो रहे—वकील ने कहा जो इजाज़त—माफ़ कीजिये—मैं इसलिए चुप हो गया कि मैंने समझा आप अपने अजीज़ से इस मुकद्दमे की बाबत कुछ मशविरा कर रहे हैं—

●

एक सेठजी के घर में कुछ बेवकूफ चोर घुसे—सेठानी ने सेठजी से कहा कि चोर आये हैं; इस पर सेठजी बोले कि कोई हर्ज नहीं ले जाने दो, कल्ह पितरपक्ष की अमावस है रुपये का रुपया भर तिल बिकेगा, बस सब वसूल हो जायेगा। चोरों ने देखा कि तिल ही ले चलो इसमें पकड़ जाने का भी डर नहीं है और माल भी अच्छे हाथ लगेंगे—बस फिर क्या था चोर लोग एक-एक बोरा तिल ले भागे और दूसरे दिन गङ्गाजी के तीर पर दुकान लगा दी—प्रातःकाल सेठ जी भी धोती लोटा ले गङ्गा स्नान करने चले, देखा कि तिल की दूकानें खुली हैं। दूकानदारों से पूछा कहो भाई तिल क्या भाव—एक चट जवाब दिया रुपये का रुपया भर—सेठजी ने पहचान लिया कि यह रात वाले हैं और बोले कि भाई वह तो रात का भाव था अब तो दिन है उसकी कहु—

●

एक मियाँ का तकिया कलाम था "आपके मुँह में" जब बोलते तो कहते "यह बात आपके मुँह में वह बात आपके मुँह में"—एक बार संयोगवश उनका नौकर कहीं चला गया—आप बड़े जोश में आकर उसे मारने के लिए घर ही से जूता हाथ में लेकर बदहवास चल पड़े—रास्ते में उनको एक मित्र मिल गये, और पूछा, "क्यों हज़रत इतना बौझके से हुए आप कहाँ जाते हैं" मियाँ जी ने जवाब दिया कि कुछ पूछिये मत, मैंने एक नौकर रक्खा आपके मुँह में सो न जानें कहाँ भाग गया, आपके मुँह में उसी को तालाश करने जाता हूँ अगर कहीं मिला तो इतने जूते लगाऊँ आपके मुँह में कि साला बेदम हो जावें, आपके मुँह में—इस पर उनके मित्र ने कहा अजी तुम्हारे मुँह में!

●

एक लाला साहब जैसे-तैसे इन्ट्रेंस पास हुए अब उन्हें रोटी की फ़िक्र सताने लगी—बड़ी दौड़-धूप के उपरान्त एक जगह के लिये अर्ज़ी उनकी मनज़ूर हुई और हुक्म हुआ कि डाक्टर की हेल्थ सार्टीफ़िकेट पेश करे—लाला साहब कुछ ऊँचा सुनते थे बड़े घबड़ाये उस दफ्तर के और-और मुलाज़िम जो इस मुसीबत को भुगत चुके थे उनसे पूछा, "क्यों भाई वहाँ क्या करना होता है ?" डा० साहब क्या पूछते हैं और किस तरह इमतिहान करते हैं ?" उन लोगों ने कहा, "आँखें चीर कर देखते हैं और मुँह खुलवा कर जीभ का इमतिहान करते हैं" लाला अक़्लमन्द बहुत ज़ियादह थे सब समझ गये—दूसरे दिन डा० साहब के बँगले पर पहुँच खानसामा के हाथ अपना टिकट रवाना किया—भीतर बुलवाये गये—डाक्टर को सलाम कर बैठ गये, डाक्टर ने पूछा—How for have you read Mr. ? आपने फौरन अपनी आँखें चीर कर दिखला दी—इस पर डाक्टर बड़ा झल्लाया और बोला, "टुम काँ टक पड़ा बोलो", यह सुनते ही आप कुर्सी हटाय जमीन पर पड़ गये अपना मुँह अपने हाथों चीर और आँखें फाड़कर दिखलाने लगे—अब साहब के गुस्से का क्या पूछना था घन्टी बजाई और दो चपरासियों को बुलाया, लाला को बाहर निकलवा दिया और दफ्तर में उनकी अर्जी पर He is quite fool and unfit for any post. लिख कर भिजवा दिया—

●

एक पण्डित जी अपने लड़के को पढ़ा रहे थे, "मातृवत् परदारेषु" पर स्त्री को अपनी माँ की बराबर समझे। लड़का मूर्ख था कहने लगा। "तो क्या पिता जी आप मेरी स्त्री को माता के तुल्य समझते हैं ?" पिता रुष्ट हो (कर) बोला "मूर्ख आगे सुन "परद्रव्येषु लोष्ठवत" पराये धन को मिट्टी के ढेले के सदृष्य समझे।" लड़का झट बोल

उठा। "चलो कचालूवाले का पैसा ही बचा।" पण्डित जी ने कहा, श्लोक का अर्थ यह नही हैं, पहले सुन तो ले।"

लड़के ने कहा, "यहा तक तो मतलब की बात थी अच्छा आगे चलिये।" पंडित जी ने फिर कहा, "आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः" "अपने सदृष्य जो औरो को देखता है वही पण्डित है" लड़का कुछ देर सोच के बोला। "पिताजी! तब आप कलुआ मेहतर के लड़के के साथ खेलने को हमें क्यों रोकते हैं।" इस पर पण्डित जी ने उसे हज़ार समझाया पर वह अपनी ही बात बकता गया।

●

(२३ अक्टूबर १८८५)
भारतेन्द्र मासिक पत्र।

हँसी की बातें

एक व्यभिचारिणी स्त्री अपने पति को तिलाञ्जलि दे कर एक रसिक पुरुष के साथ उड़ गई० पति ने स्त्री के बहका ले जाने का रसिक राज पर अदालत में चार्ज किया, तो सुबूत न होने से मुकद्दमा डिसमिस्० पर जब मुद्दई, मुद्दआ अलग कचहरी से जाने लगे तो हँसोड़ मैजिष्ट्रेट ने दोनों पुरुषों को अपने पास खड़ा कर स्त्री से पूछा "वल् औरट! अब तुम इन दोनो में से किस के साथ जायगा?" हाजिर जवाब औरत, क्या कहती है "हुजूर मा बाप है जिसके साथ कर दें, उसी के जाऊं?"

●

एक चौबे जी किसी यजमान के यहाँ लड्डू खाते-खाते अकड़ गये और हुई तयारी पेट फूल कर राम राम सत्त की०

यजमान ने कहा—"चौबे जी को चूरन दो"

चौबे जी मरते-मरते क्या बोले—"अरे भैया पेट में चूरन कू जगे कहाँ? जो चूरन कू ही जगे होती, तो एक लड्डू ही और न खाय लेते?"

●

[हास्य पत्रिका सं० १९३२]

एक मनुष्य की दुःस्वभाव पत्नि अत्यन्त ज्वरक्रान्त हुई और नैराश्य की अवस्था में अपने पति से कहने लगी "मियां। मैं मर जाऊँगी तो तुम कैसे जीओगे?" इस मनुष्य ने उत्तर दिया "बीबी मुझे तो इसकी बात की फिक्र लग रही है कि यदि तुम बच जाओगी तो मैं कैसे जीऊँगा।"

●

राय खिरोधर लाल से एक मुसलमान ने कहा कि "खाने या पूजा के समय हिन्दू लोग पैर धोते हैं," पर हम लोग सिर धोते हैं।" राय-साहिब ने जवाब दिया कि "हिन्दू बनाये गये थे, तब आसमान से सीधे फेंके गये थे और आप लोग सिर के बल से फेंके गये थे इससे जिसको जहाँ कीचड़ लगा था, अब वह जाति वही अङ्ग धोती है।"

●

एक वकील ने किसी गवाह से चिढ़कर कहा "तुम्हारे चिहरे से साफ बदमाश की सूरत झलकती है" गवाह ने जवाब दिया "मुझे आज तक खबर न थी कि मेरा चिहरा आइना है!"

●

एक लड़का किसी हलवाई की दूकान पर गया और चार आने की मिठाई माँगी। हलवाई ने एक हाँडी में मिठाई रखकर उसके हवाले की। लड़के ने कहा "वज़न तो कम मालुम होता है।" हलवाई ने हँस कर जवाब दिया "अच्छी बात है तुम्हे बोझ भी तो कम ढोना पड़ेगा।" लड़का यह सुनकर बोला "ठीक कहते हो" और तीन आना हलवाई के सामने फेंक कर चलता हुआ। हलवाई पुकारा "पैसे तुमने कम दिये हैं पूरा दाम देते जाव" जिस पर लड़के ने जवाब दिया "कुछ हरज नहीं तुम्हें गिनना भी तो कम पड़ेगा।

●

किसी साहूकार के पड़ोस में एक सैदानी रहती थी और अक्सर उसके घर आया जाया करती थी। [illegible] में एक बार लालाजी के यहाँ सराध हुआ। उस रोज भी इत्तिफ़ाक़ से सैदानी जी उनके घर गई। बहू बेटियों ने चार पूरियाँ उसके हाथ पर भी ला धरीं। आपने पूछा "बेटा आज क्या है?" औरतों ने उत्तर दिया "सराध"। बीबी सैदानी गोद पसार कर बोली "हाँ—जय जय सराध लाला जी का सराध। बहू बेटियों का सराध। बाल बच्चों का सराध"

●

एक मगरूर पादरी अपने दोस्तों में कहने लगे "हा आज मुझे कैसे गधों की बात सुनना पड़ा था।" एक तेज तबीयत मेम साहिबा जो वहाँ मौजूद थी बोल उठी "अहा तभी आप उन्हें बार बार मेरे प्यारे भाइयो कह रहे थे।"

●

एक बदमाश जो कई बार कैद हो चुका था फिर किसी जुर्म में गिरफ्तार होकर फ़रासीस के एक मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर आया।

मजिस्ट्रेट ने लानती के तौर पर कहा कि "बड़ी शर्म की बात है कि तुम्हें फिर अपनी हर्कतो की बदौलत अदालत में आना पड़ा, अब तुम्हारी इसी में बिहतरी है कि बुरी सुहबत में वक्त ख़राब करने के बदले मिहनत की आदत डालो," मुजरिम बोला "बुरी सुहबत ! भला आप ऐसा फ़र्माते हैं जब कि आप जानते हैं कि मेरा बहुत जियाद वक्त पुलीस और मजिस्ट्रेटों के दर्मियान सर्फ़ होता है।"

●

एक किसान एक आदमी के यहां गया। सांझ हो चला था। उसने कहा कि कुछ पानी पीने (जलखाने) के लिये मंगाऊं। इसने कहा नहीं अब तो खानी का समय (भोजन करने का समय) हो गया, जो लोग वहाँ बैठे थे। इस बात को सुनकर सब लोग हँस पड़े।!

●

एक पण्डित जी वर्ण विवेक पर कुछ वक्तृता कर रहे थे इतने में एक मसखरा बोल उठा पण्डित जी कुत्ते का क्या जाति है हिन्दू या मुसलमान पण्डित जी ने जवाब दिया, कुत्ता तो हिन्दू मालुम पड़ता है क्योंकि जो मुसलमान होता तो दूसरे कुत्ते को अपने साथ खिलाने में न भूंकता।

●

एक काने ने किसी आदमी से यह शर्त बदी कि जो मैं तुमसे जियादा देखता हूँ तो पचास रूपया जीतूं और जब शर्त पक्की हो चुकी तो काना बोला कि लो मैं जीता, दूसरे ने पूछा क्यों ? इसने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी दोनों आँखें देखता हूं और तुम मेरी एक ही ॥

●

एक बुड्ढा मनुष्य जिसकी कमर बुढ़ापे से झुक गई थी कुबड़े की भांति हाट में चला जाता था एक मसखरे ने पूछा कि "बड़े मियां क्या ढूढते जाते हो" बूढ़े ने उत्तर दिया कि "बेटा मेरी जवानी खो गई है उसी को ढूढता हूं मसखरे ने कहा कि बड़े मियां झूठ क्यों बोलते हो क्यों नहीं कहते कि कबर के लिये जमीन ढूंढ़ता हूं ॥

●

एक गंवार का लड़का बीमार था और उसको दस्त नहीं होता था। वैद्यवर वहां ही बैठे थे। उस गंवार ने कहा कि यदि इस को दस्त होय तो मैं आपको भोजन करा दूं। इस बात को सुनकर कई एक आदमी जो वहां बैठे थे हंस पड़े और वैद्य विचारे लज्जित होकर चले गये।

●

एक बुड्ढा मनुष्य रस्ता भूल गया, गाव के किसी छोकरे से पूछा कि ये नेक बख्त लड़के शहर का कौन रस्ता है, लड़का बहुत चालाक निकला पूछने लगा कि रस्ता तो पीछे बतलाऊंगा, पहिले आप यह फरमाइये कि आप ने मुझे नेक बख्त क्योंकर समझा, बुड्ढे ने कहा अनुमान से, लड़के ने क्या ठीक जवाब दिया कि तो फिर रस्ता भी अनुमान ही से मालुम कर लीजिये।

●

एक आदमी लिफाफा साटने के लिये पानी ढूंढ रहा था दूसरे आदमी ने कहा तुम्हारे मुंह में थूक है क्यों नहीं उससे साट लेते तब उसने कहा क्या तुम्हारे मुंह में पेशाब है!

●

एक खतरानी नवयौवना सुंदरी चतुरी चरफरी वसन्त ऋतु में अपनी बहनेली के यहा गई और कुछ इधर उधर को मन लगन बातें कर रही थी कि प्यासी हुई और पानी मांगा इस को उस मुंह बोली बहन के कोरे कुल्हड़े में भर कर ला दिया जो इस ने मुंह लगा कर पिया तो कुल्इा होठों से लग रहा यह खिलखिला कर हंसी और इस दोहे को पढ़ने लगी ॥

रे माटी के कुल्हड़ा तोहि डारो पटकाय ।
होंठ रखे हैं पीउ कौं तू क्यौं चूसे जाय ॥

यह दोहा सुन उसकी बहनेली ने कुल्हडे की ओर से उत्तर दिया

लात सही मूकी सही उलटे सहे कुदार ।
इन ओठन के कारने सिर पर धरे अंगार ॥

●

एक दिन तुलसीदास गोसाईं बनारस में किसी ठौर पर बैठे थे कि एक रूखड़ फकीर ने आके कहा, अलख, इसके उत्तर में तुलसी दास ने यह दोहा कह सुनाया ॥

तू लख हमैं हमार लख हम हमार के बीच ।
तुलसी अलखै कहा लखै राम नाम भज नीच ॥

इस दोहे को सुन वह मारे लाज के निरुत्तर हो चुप चाप चला गया ।

●

किसी ठौर पर कई एक साहूकार बैठे आपस में अपनी अपनी कमाई का वृत्तान्त कह रहे थे कि एक सुघड़ पुरुष भूला भटका वहा आ निकला, और उनकी बाते सुन हाय कर कविता पढ़ी ॥

जो आये इस जहां में सो कुछ कुछ कमा चले ।
एक बेमरौवतीक़ हम हैं कि दिल भी गंवा चले ॥

●

एक मेम साहब बेतकल्लुफ मेज पर के सब सेब रगड़ जाती थीं और साहब बेचारे बैठे मुंह देखते थे० आखिर साहब से न रहा गया और बोले इंजील में हौआ की खुदगरजी का किस्सा बेशक सच है० आप के इस वक्त के भकोसने (खाने) में मुझे "साक्षात" हौआ की झांकी होती है०

●

[हि० प्र०]

एक शख्श ने एक बड़े आदमी को उर्दू में दरख्वास्त लिखी "खुदा हुजूर की उम्र दराज़ करे हुजूर की नज़र गुरबा परवरी पर ज्यादा है, इससे उम्मेद है कि हुजूर मुझ पर भी नजरे इनायत रक्खें" उसने अपने मुंशी को हुकुम दिया कि इस दरख्वास्त को पढ़ो मुन्शी ने दरख्वास्त इस तौर से पढ़ी, "खुदा हुजूर को उमर दराज़ करे हुजूर की नज़र गुर पापर बरी पर ज्यादा है इससे उम्मेद है हुजूर मुझ पर भी नज़र इनायत रक्खें"

●

एक स्कूल मास्टर हाथ में बेंत लिये हुये लड़के पढ़ा रहे थे बेत सीधा कर बोले "हमारे बेंत के कोने के रूबरू एक गधा बैठा है।" वह लड़का जो बेत के रूबरू बैठा हुआ था बड़ा ढीठ था फौरन कह उठा, "मास्टर साहब बेंत के दो कोने होते हैं आप किस कोने का ज़िकर करते है" । मास्टर बेचारे शरमिन्दा हो चुप हो गये !

●

"तुम्हें गैरों से कब फुरसत हम अपने गम से कब खाली।

चलो बस हो चुका मिलना न हम खाली न तुम खाली।" तीन मेंढक एक के ऊपर एक बैठे थे। ऊपर वाले ने कहा 'जौक शौक', बीच वाला "गुम सुम" सब के नीचे वाला पुकारा 'गए हम'। सो हिंदुस्तान की साधारण प्रजा की दशा यही है, गए हम।

(सं० १९३४ भारतेन्दु, बलिया में व्याख्यान।)

●

(हरिश्चन्द्र चन्द्रिका)

"राजा सकई जयसिंह ने मथुरा मे अब्दुन्नबो खां की मसजिद की गुमटी की उंचाई देख कर कहा कि इस पर से कोई कूदे तो सहस्र मुद्रा दूं० यह सुन कर एक चौबे ने पूछा कि महाराज जो यापै ते कूदैगो वाहि सहस्र रूपया देउगे? कहा "हां०" इतनी बात सुनते ही चौबे जी अपने घर जा एक बुढ़िया सौ बरस की कंठगता प्रान हो रही थी उसे ले आया० उसे देख कर राजा ने कहा "इसे क्यों लाए हो"? बोला यही गुमटी पर सौं कूदैगी सहस्र रूपया देउ० राजा ने कहा बुढ़िया की हांड़ नहीं, उत्तर दिया महाराज आप कौ बूढ़ी मारी ते कहा काम, तुम्हें एक हत्या लेनी है सो लेउ और मोकौं सहस रूपया देउ० इस रहस और अवसर की बानी से प्रसन्न हो राजा ने उसे रूपया दिलवा दिये वह ले अपने घर गया॥"

●

"एक बनिया अपने घर में रात को नींद में अचेत पड़ा सोता था कि एक चूहा उसके पेट पर होकर इधर से उधर चला गया० वह नींद

में चौंक पड़ा, और लगा डाढ़ मार मार रोने और यह कहने लगा कि हाय प्रान गया, हाय प्रान गया, उसके रोने का शब्द सुन के सब घर के लोग घिर आये और लगे पूछने, कहा तुझे क्या दुःख है जो इतना रोता है ? बोला इस घर में रह नहीं सकता, कहा क्यों ? उत्तर दिया एक चूहा मेरी छाती पर हो कर इस ओर से उस ओर चला गया लोगों ने कहा चला गया तो चला गया इस लिए इतना रोना क्या था बोला किसी ने सच कहा है "जा तन लगे सोई तन जाने दूजा क्या जाने रे भाई०" मै उसके जाने पर नहीं रोता, रोता इस कारण हूँ यह पंथा बुरी निकली आज चूहा गया है कल को सांप जायगा तो मै काहे को जीता रहूंगा ॥"

●

"एक साहब के पैर कुछ छोटे बड़े थे। मोची को आपने हुक्म दिया कि ऐसा ही जूता बना लावे० जब जूता बन कर आया और आप बड़ा छोटे पैर मे पहरने लगे तो ख़फा हो कर बोले कि एक से दूसरा छोटा बनाने को कहा था उस के बदले दुष्ट ने दूसरे से एक और बड़ा बना दिया०"

●

"एक जने की भैंस मर गई वह लगा रोने इससे उसके एक पड़ोसी ने आकर पूछा कि भाई तुम रोते क्यों हो बोला मेरी भैंस मर गई जो सारे कुनबे को पालती थी यह बोला भाई धीरज धरो हमे तुम्हें काले धन से लहता नहीं, उसने पूछा तुम्हारा क्या टोटा हुआ उत्तर दिया मेरे भी पकाने की हांडी फूट गई इस बात के सुनते ही वह विचारा हँसकर बोला कि हां भाई सच कहते हो ॥"

●

"एक मथुरा का चौबे कहीं पर चढ़ा पूरियां खाता चला जाता था किसी कान्यकुब्ज पंडित ने देख कर ठठे से पूछा कि चौबे जी तुम जो चौके में न बैठ बैन पर बैठे पूरियां खाते जाते हो सो इसका प्रमान क्या है ? उत्तर दिया, कि प्रसिद्ध कौं प्रमान कछु नहीं चाहियतु। बोला सो क्या ? उसने कहा, कि चौका वाही के मार्ग सों निकरयौ है, इस बात के सुनते ही पण्डित हँस कर रह गया ॥"

●

कोई योग्ती जंगल में बैठा कटोरी में पोस्त घोल रहा था दैवात किसी झाड़ झूड़ से एक खरगोश आ निकल के दौड़ा, तो उसके धक्के से इसकी कटोरी लुढ़क पड़ी यह झुंझलाकर बोला, कि तुझ से क्या कहें, तेरे बाप ही से जाकर कहेंगें, इतना कह कूंड़ी सोटा काख में दबा, नगर में जा हर एक चौपाये को देखता चला; निदान एक गधे को, जो उस के बरन के समान था, पाया, तो वह गधे के पास जा उस की पीठ पर हाथ रख चाहे कि कुछ कहे, वोंही उसने फिर कर एक ऐसी दुलत्ती मारी कि वह बिचारा हाय कर बैठ गया, और हँस कर बोला कि क्यों न हो जिसका बाप ऐसा हो, उसका लड़का वैसा हुआ ही चाहे इतना कह चला आया०

●

बनारस मे एक चौबे ने किसी स्थान पर कितने एक विद्यार्थियों को हिल हिल कर पढ़ते देख किसू पण्डित से प्रश्न किया,

झुकत झुकत विद्यारथी कहा बूढ़े कहा बार।
मैं तोहि पूछूं हे सरबे याको कौन विचार॥

उत्तर दिया—

आगे समुद अगम्य है अपने बैठ करार।
रत्न लैन कों झुकत हैं झिझकत देख अपार ।।

●

सूरज मल्ल के समय में किसी मुसलमान ने ठट्ठे से एक जाट से कहा अबे जाट वे जाट तेरे सिर पर खाट, उसने कहा, अबे मियां वे मियां तेरे सिर पर कोल्हू, वह बोला तुक न मिली, उसने उत्तर दिया कि तुक न मिली तो कहां तो मरो बोझन तो मरोगे ।।

●

परिहासिनी (भा० ह० लिखित, तथा जिसे क्षत्रियपत्रिका सम्पादक म० कु० बाबू रामदीन सिंह ने प्रकाशित किया । पटना— 'खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर । १८८६, हरिश्चन्द ५

●

भेद !

कृष्ण प्रसाद ने दामोदर से कहा "तुमने हमारा भेद क्यों खोल दिया" ।

"ह हा !! इसको भेद खोलना तुम कहते हो ? जब हमने जाना कि हम उसको नहीं छिपा सकते तो हमने क्या बुरा किया कि उस भेद को ऐसे आदमी से कह दिया जो उसे छिपा सकता था" ।।

●

मुंहतोड़ जवाब !

एक ने कहा "न जाने इस लड़के में इतनी बुरी आदतें कहां से आई ? हमें यकीन है कि हमसे इसने कोई बुरी बात नहीं सीखी" ।

लड़का चट से बोल उठा, "बहुत ठीक है क्यों कि हमने आप से बुरी आदतें पाई होतीं तो आप में बहुत सी कम हो जातीं" !!

●

लाला साहब का रामचेरा !

लाला रामशरनलाल ने देर होने पर रामचेरा से खफ़ा होकर कहा "क्यों बे नामाकूल आज तू इतनी देर कर आया कि और नौकरों को काम शुरू किये एक घंटे से ज़ियादः गुजर गया" ।

यह नटखट झटपट बोला "तब लाला साहब ओमें बात का हौ सांझ के आज हम और लोगन से एक घंटा आगौएँ चल जाब बराबर होय जाइब" ।।

●

किसी अमीर ने ज़रा सी शिकायत के लिये हकीम को बुलाया। हकीम ने आकर नब्ज़ देखी और पूछा—"आप की भूख अच्छी तरह लगी है,"

अमीर ने कहा "हां" ।

हकीम ने फिर सवाल किया—"आप को नींद भरपूर आती है" ।

अमीर ने जवाब दिया "हां"

[illegible] बोला "तो मैं [illegible] दवा ऐसी तजवीज़ करता हूँ जिससे यह सब बातें जाती रहें॥"

●

कहते हैं कि मिल्टन की बीबी निहायत बदमिज़ाज थी मगर खूबसूरत भी हद से ज़ियादा थी! लार्ड बकिंगहैम ने एक रोज़ मिल्टन के सामने उसकी नज़ाकत की तारीफ़ करके गुलाब के फूल के साथ उसकी तशबीह (उपमा) दी! मिल्टन ने कहा कि गोकि मैं अंधा हूँ और नज़ाकत को नहीं देख सकता तो भी आप के बात की सचाई पर गवाही देता हूँ। हकीकत में वह गुलाब का फूल है क्योंकि कांटे अक्सर मेरे भी लगते रहते हैं॥

●

एक डाक्टर साहिब कहीं बयान कर रहे थे कि दिल और जिगर की बीमारियाँ औरतों के मर्दों को ज़ियादा होती हैं। एक जवान खूबसूरत औरत बोल उठी "तभी मर्दुए औरों को दिल देते फिरते हैं"।

●

एक शख्स ने किसी से कहा कि अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो मेरा झूठ कोई पकड़ क्यों नहीं लेता। उसने जवाब दिया कि आपके मुँह से झूठ इस कदर जल्द निकलता है कि कोई उसे पकड़ नहीं सकता।

●

एक बेवकूफ इस खयाल से अपने सामने आईना रखकर सो रहा कि देखूँ सोते वक्त मेरी सूरत कैसी मालूम होती है।

●

एक अन्धा बैरागी काशी के बीच मनिकर्निका घाट पर बैठा गहन (ग्रहण) में दही पेड़े खा रहा था, कि देखकर किसी पण्डित ने पूछा, "सूरदास जी ! यह क्या करते हो ?" सूरदास बोला, "महाराज दही पेड़े खाता हूँ।" पण्डित ने कहा, "गहन (ग्रहण) में !" सूरदास ने उत्तर दिया, "बाबा ! मेरे गुरू की दया से सदा ही गहन (ग्रहण) है।" यह सुन पण्डित हँसकर चुप हो रहा।

●

एक सौदागर किसी रईस के पास एक घोड़ा बेचने को लाया और बार बार उसकी तारीफ़ में कहता, "हुजूर यह जानवर गजब का सच्चा है।"

रईस साहब ने घोड़े को खरीद कर सौदागर से पूछा कि घोड़े के सच्चे होने से तुम्हारा क्या मतलब है ! सौदागर ने जवाब दिया, "हुजूर जब कभी मैं इस घोड़े पर सवार हुआ इसने हमेशा गिराने का खौफ दिलाया और सचमुच इसने आज तक कभी झूठी धमकी न दी।"

●

न्याय शास्त्र

मोहिनी ने कहा, "न जानैं हमारे पति से जब हम दोनों की एक ही राय है तब फिर क्यों लड़ाई होती है। क्योंकि वह चाहते हैं कि मैं उनसे दबूं और वही मैं भी !

●

गुरू का गुरू।

बाबू प्रह्लाददास से बाबू राधाकृष्ण ने स्कूल जाने के वक्त कहा "क्यों जनाव मेरा दुशाला अपनी गाड़ी पर लिये जाइयेगा।" उन्होंने

जवाब दिया "बड़ी खुशी से" मगर फिर आप दुशाला मुझसे किस तरह पाइएगा। राधाकृष्ण जी बोले "बड़ी आसानी से, क्योंकि मैं भी तो उसे अगोरने साथ ही चलता हूँ।"

●

अचूक जवाब

एक अमीर से किसी फकीर ने पैसा मांगा, उस अमीर ने फकीर से कहा, "तुम पैसों के बदले लोगों से लियाकत चाहते तो अब तक कैसे लायक आदमी हो गए होते।"

फकीर चटपट बोला, "मैं जिसके पास जो देखता हूँ वही उससे मांगता हूँ।"

●

एक ने एक से कहा, कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी को पारण करना, उसने व्रत तो नहीं किया पर पारण किया जब उसने पूछा कि कहो व्रत किया था, तब वह बोला कि भाई व्रत तो नहीं हो सका पर तुम्हारे डर के मारे पारण कर लिया कि जो बने सोई सही!

●

कोई भलामानुस किसी छात्र के मुख से एक पण्डित की विद्या की प्रशंसा सुन कर स्पृही हो उसके घर भेंट को गया। वह अपने द्वार पर बैठा पोथी देखता था, यह प्रनाम कर उसके सामने संकोच से बैठ बोला, धर्मावतार यह कौन सी पोथी है? उत्तर दिया तू कौन है जो मुझसे पूछता है? कहा आपका सेवक हूँ, बोला जा तुझे इसके समझने की सामर्थ नहीं। इसने कहा खैर जाना गया कि आप दैवी विद्या की

पोथी देखते हैं कि जिससे बिन जांचे आपने मेरी सामर्थ जान ली। इस बात को सुन वह लज्जित हो बोला नीतिशास्त्र की पोथी है, तब वह हँस कर कहा कि तभी आप ऐसे सुशील हैं।

●

कोई क्रोधी अन्धा कहीं को चला जाता था, कि एक अंधे कुए में गिर पड़ा और लगा पुकारने की लोगो चलियो दौड़ियो मैं कुए मे गिर पड़ा! लोग तरस खा दौड़े और कुए के पनघटे पर खड़े हो उसके निकालने का उपाय करने लगे। कुछ देर जो हुई तो वह भीतर से खफा होकर बोला कि शीघ्र निकालते हो तो निकालो नहीं तो मैं कहीं को चला जाता हूँ! तुम लोग मुझे फिर न पाओगे।

●

सुनते हैं कि इबराहीम अहमद की सेज सवा मन फूलों से सँवारी जाती थी। एक दिन बांदी ने सेज बना के अपने जी में विचारा कि इस बिछौने पर सोने से कैसा सुख जी को होता होगा? यह सोच इधर उधर देख वह जो उस पर लेटी तो सुख पाके बेहोश हो सो गई और फूलों के बीच छिप गई। पहर एक पीछे बादशाह भी आ उसी पर लेट गया। घड़ी दो एक पीछे उसने जो करवट ली शाह घबरा कर उठ खड़े हुए और बोले कि देखो इस खाट मे क्या आफत है? एक के कहते दस दौड़ आए और उन्होंने बांदी को निकाल बाहर किया। देख कर महाराज ने कहा, कि इस मुई को मेरे सामने सौ कोड़े मारो। बात के कहते ही लोगों ने बेपीर हो सौ कोड़े गिन कर लगाए, उसने पचास हँस हँसकर और पचास रो रो कर खाए। यह कौतुक देख बाद-शाह ने उसे पास बोलाकर पूछा कि सुन तो मार खाने से आदमी रोता है, तू जो हँसी और रोई दोनों इस का क्या कारन? बोली महाराज

फूलों की सेज पर पहर भर सोने का दण्ड परमेश्वर के यहां न हो वहीं ही हुआ, इस बात को सोचकर मैं हँसी; और आपको परमेश्वर के यहां इस सेज पर नित सोने का न जानूं क्या दण्ड होगा? यह सोचकर के रोई। कहते हैं कि इबराहीम अहमद इस बात के सुनते ही राज छोड़ फकीर हो जंगल को चला गया॥

●

(परिहासिनी, १८८९)

बहुत चूके।

एक जगह ऐसी शादी हुई कि दूल्हह की उमर ६० वर्ष की और दुलहन की १० वर्ष की और दुलहिन के बाप की भी ६० वर्ष की उमर जब शादी हो कर विदा होने लगी तो लड़की के बाप ने अपने हम उमर दामाद से कहा कि आज से मैं अपनी लड़की तुम्हारे सुपुर्द करता हूं, तकलीफ आराम देना अब आप का काम है यह सुन साठा दामाद बोला वाह जी यह क्या आप फरमाते हैं अजी जैसी आप की लड़की वैसी मेरी।

●

मछली भात।

एक अतर फरोश किसी बंगाली बाबू के घर गये और बाबू साहिब से पूछा कुछ इतर लीजियेगा बाबू बोले हां। इस पर इत्तर फरोश ने पिटारी खोल शीशी निकाली बाबू बोले हमरी गदेली पर थोड़ा सा दो उसे हम पहचाने कैसा है। यह सुन कर इत्तर फरोश ने उनकी गदेली पर डाल दिया, कि बाबू साहिब ने उसे पी लिया थोड़ी देर बाद इत्तर फरोश से कहा ले जावो तुम्हारा इत्तर कडुआ है। यह सुन कर वह

पिटारी उठा चल दिया। रास्ते में एक दूसरे बंगाली बाबू बैठे थे। इत्तर फरीश को देख कर बुलाया। इत्तर फरीश बोला बाबू साहिब कुछ लेवगे देखगे कि ऐसे ही बुलाते हो अभी तो एक बाबू साहिब इत्तर पी गये हैं कहीं वैसा ही तो न आप कर बैठें यह सुन बाबू साहिब बोले "वो शोला बेटा इसकी कदर क्या जानता होगा" इससे पी गया हम तुम्हारा इत्तर मोअच्छली (मच्छली) के रोशा में डालकर खायगा।

●

बातर फ़ूगिर लड़का।

एक मियां जी के पास एक लड़का नौकर था, रोज मियां जी सुबह को मछली की शिकार कर लावे और लड़के से कहा हम कचहरी जाते है इन को साफ कर पकाना, लड़के ने मछली को काट कर एक थाली में रख किसी काम को चल दिया, इतने में बिल्ली आ कर मुंड पूंछ को छोड़ सब खा गई, जब लड़का आया और देखा बिल्ली सब खा गई तो कचहरी दौड़ता हुआ गया और कहने लगा मियां जी मियां जी फूल नगर लूट गया, मियां जी ने पूछा किसने लूटा, लड़के ने कहा बिल्ली बिलायत के बादशाह आये थे सो लूट ले गये. फिर पूछा कोई बचे हैं (अर्थात् कुछ दो चार बोटी बची है) लड़के ने कहा सिरदार सिंह और दुमचड़ खां बाकी बचे है (सिर और पूंछ बाकी बच गई है) यह सुन कर मियां जी ने कहा अच्छा उन्हीं की चढ़ाई करो (उन्हीं को पकाओ)। जब लड़का घर आया और चूल्हा सिलगा मछली पकाने बैठा तो देखा निमक नहीं है, तो झट कचहरी को दौड़ा गया और कहने लगा मियां जी मियां जी नूरन-शाह खफा हो गये (निमक नहीं है) यह सुन मियां जी ने कहा कि जाओ, हंस्सी खां से कहो कि घासी खां को लावे घासी खां नूरनशाह को मना लावें (अर्थात् हंसिया से जाकर घास काट कर बेच कर

निमक मोल ले आवो) यह सुनकर लड़का निमक लाया । जब मच्छली हंडी में छोड़ी तो हंडी का मुंह छोटा होने के कारण चमची उसके भीतर न गई तो फिर मियां जी के पास दौड़ा गया और कहा मियां जी मियां जी काले खां लगाम नहीं झेलने (हंडी के मुंह में चमची नहीं जाती । यह सुन कर मियां जी ने कहा तो उलटी लगाम दे देव, गरज़ जब जब कोई गैर मौके की बात का कहना जरूरी समझ पड़े तो यह लड़का इसी तरह बातों को बना कर कहा करे कि दूसरा कोई न समझ सके ।

चुप ।

एक श जिसने शक्कर अपनी उमर भर में कभी नहीं देखी थी और न खाई थी अपनी सुसराल को गया । जब यह खाने को बैठा तो इसकी औरत ने अपने मा की चोरी से इसे थोड़ी सी शक्कर भी परोस दी । जब इसने शक्कर खाई तो इसे बहुत अच्छी मालूम हुई । अपनी औरत से इसका नाम पूछा कि इसे क्या कहते हैं औरत ने समझा नाम लेने से भेद खुल जायगा इससे धीरे से कहा "चुप" जब ये अपने घर लौट आये तो बाजार में बनियों के घर "चुप" तलाश करते फिरें । जिसकी दूकान पर जांय उसी से कहें क्यों भाई तुम्हारे यहां "चुप" है । वह इसे पागल समझ जवाब न देवे आखिरकार एक ने पूछा कैसी चुप माँगते हो, तो आप उसे यह मिसरा बना समझाते हैं ।

दोहा ।

बालू ऐसी खसखसी, उज्वल जैसी धूप ।
ऐसी मीठी कछु नहीं, जैसी मीठी चुप ॥

(हरिश्चन्द्राब्द ५)

मिल्टन से किसी ने पूछा "आप अपनी लड़कियों को कै जबान सिखलाइयेगा ?" उसने जवाब दिया "औरतों को एक ही जबान अच्छी होती है"

●

थानेदार ने एक हलके सिपाही से कहा आज कुदई की चौकी पर तुमको पहरा देना होगा, सिपाही ने जवाब दिया "ह–ह–ह–म पहरा देने न–न–न–जायेंगे" थानेदार ने पूछा "क्यों" सिपाही बोला "ज–ज–जितनी देर में हम कहेंगे क–क–क–कौन है ? उ–उ–उ–उतनी देर में च–च–च–चोर द–द–द–द–दु दूर निकल जायगा।"

●

अकबर बादशाह के सामने एक दिन मियाँ तानसेन ने सूरदास का यह विनय पद गाया ;

"जसोदा बार-बार यह भाषै, है कोई ब्रज में
हितु हमारो चलत गोपालहि राखै।"

बादशाह ने इसके अर्थ पूछे; मियाँ ने कहा जसुदा घड़ी-घड़ी यह कहे है, है कोई ब्रज में मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को रक्खै। मियाँ तो गाय समझाय चले गये, इसमें आप बीरबल, महाराज ने उनसे भी उसका अर्थ पूछा; बीरबल बोले धर्म्मावतार बार कहते हैं पौर को जसुदा जी पौर-पौर यह कहती हैं कि है कोई ब्रज में मित्र हमारा जो गोपाल को न जाने दे। इतने में राजा टोडलमल आये, महाराज ने उनसे भी अर्थ पूछा; कहा पृथ्वीनाथ जसुदा कृष्ण की मा वार कहते हैं पानी की और द्वार को सो पानी का द्वार हुआ घाट इससे अर्थ यह है कि जसुदा घाट-घाट यह कहती हैं कि है कोई ब्रज में मित्र हमारा कि गोपाल चलने से फेर रक्खे। इस बीच

आए मुल्ला फैजी, बादशाह ने उनसे भी इसका अर्थ पूछा; उत्तर दिया कि बाखमअनी आब ओ दर यहाँ आब से मुराद है आँसू और दर से मुराद है आँख, इससे मअने ये निकले कि जसुदा रो कर यह बात कहती है कि है कोई बृज मे दोस्त हमारा जो गोपाल को न जाने दे। इस बीच आये नव्वाब खानखानान, बादशाह ने उनसे भी उसका अर्थ पूछा; तब नव्वाब ने कहा, कि धर्म्मावतार इस बिसन पद का अर्थ किसी और ने भी कहा है? इस बात के सुनते ही जिस जिसने जो जो अर्थ कहे थे महाराज ने कह सुनाये। तब नव्वाब ने कहा महाराज ये तो उस बिसनपद के अर्थ नहीं पर हाँ हर किसी ने अपने मन का अनुभव बखान किया। बादशाह ने पूछा सो क्या? बोला वह बिचारा कलावन्त जैसे एक नोम-तोम शब्दों को घड़ी-घड़ी कहता है उसके मन में यह ध्यान बँधा कि जसुदा घड़ी-घड़ी कहती है। और बीरबल जात का ब्राह्मण पौर-पौर का फिरने वाला उसके मन मे यह ध्यान बँधा कि जसुदा पौर-पौर कहती है। और टोडलमल जात का मुतसद्दी उसके ध्यान में यह बूझ पड़ा कि जसुदा घाट-घ ट कहती है। और फैजी कवि बिन रोने के और अर्थ न सूझा इससे उसके ध्यान में आया कि जसुदा रो रो कहती है।

यह बात सुनकर बादशाह ने कहा अब तुम कहो उसका अर्थ क्या है? निवेदन किया पृथ्वीनाथ बार कहते हैं बाल को सो जसुदा का बाल-बाल यह कहता है कि है कोई बृज में मित्र हमारा जो गोपाल को न जाने दे। अर्थ के सुनते ही बादशाह प्रसन्न हो सबकी प्रशंसा की और बृजभाषा के विस्तार को बहुत सराहा।

●

मुहम्मदतकी बड़े अकलमन्द हैं, कुछ-कुछ आप फारसी भी लिख लेते हैं और कुछ अपने मजहब में भी दखल रखते हैं, एक बेर

आपने एक मौलवी को जो मसजिद में रहते थे खत लिखा और लिफाफे पर पता लिखा कि "लिफाफा हाज़ा दर शहर फलाँ बर खानए खुदा रसीद, बखिदमत मौलवी फलां बिरसद"।

डाक वाले ने "खानए खुदा" का मतलब न समझ कर खत लौटा दिया और उस पर लिख दिया "पता ठीक नहीं। खुदा का घर जमीन पर नहीं है।"

●

एक मेम साहेब अदालत में गई और जज से कहने लगीं मैं अपने शौहर को तिलाक देना चाहती हूँ। जज ने पूछा क्या तुम्हारा शौहर तुमको तकलीफ देता है?! "नहीं"। फिर बात क्या है? क्या वह शराब पीता है? "नहीं।" तो क्या वह बदचलन है? "हाँ"। इसका सबूत? यही कि मेरे तीन लड़कों से मझला उससे नहीं है।

●

एक शख्स ने अपने बेटे से किसी बात पर कहा कि तू उल्लू है, उसके बेटे ने उलट कर कहा कि उल्लू तो नहीं हूँ लेकिन उल्लू का पठा हूँ।

●

दो आदमियों ने किसी देवता से बरदान माँगा। एक ने कहा कि मैं चोरी तो करूँ मगर चोर न कहलाऊँ उसको देवता ने कहा कि जा तू सुनार हो जा।

दूसरे ने कहा कि मैं भौकू तो बहुत मगर कुत्ता न कहलाऊँ। देवता ने कहा कि जा तू भाट हो जा।

●

बड़ा मसखरा।

एक बुन्देलखण्डी मुसाफिर एक गाँव में पहुँचा वहाँ उससे एक मसखरे से भेंट हो गई, मुसाफिर ने सोचा कि इस गाँव के मालगुजार से मुलाकात करना चाहिये, ऐसा सोच उसने उस आदमी से पूछा क्यों भाई इस गाँव का ठेकेदार कौन हैं? मसखरा बोला यहाँ ठेकेदार बहुत हैं, कोई ठेका रखाये है, कोई दाढ़ी रखाये, कोई पट्टे रखाये हैं, ऐसे ऐसे बहुत हैं, आप किसको पूछते हैं मुसाफिर बोला भाई हम यह नहीं पूछते—हम यह पूछते हैं कि इस गाँव का अमली कौन है, मसखरा बोला जनाब तुम्हारे तो अजीब सवाल होते हैं, अरे भाई यहाँ अमली बहुत हैं, कोई भङ्ग का अमली है, कोई गाँजा का अमली है। कोई अफीम का और कोई शराब का ऐसे ऐसे यहाँ हजारों अमली हैं, तुम्हें किसको बताऊँ, मुसाफिर बोला तुम पूरे बेवकूफ हो, हमें यह बताओ कि गाँव का ठाकुर कौन है? मसखरा बोला महाराज एक हो तो बताऊँ यहाँ तो किसी के घर शालिग्राम हैं, किसी के घर श्री कृष्ण हैं, किसी के घर महादेव हैं, ऐसे घर घर ठाकुर बिराजे हैं, मुसाफिर तब खिसिया कर बोला क्या बेवकूफ से काम पड़ा है। अच्छा अब हमको यह बताओ कि इस गाँव का राजा कौन है, मसखरा बोला भाई यहाँ घर-घर के राजा हैं, कल एक कोरी मर गया तो उसकी औरत यह कह-कहकर रोती थी कि हाय मोरे राजा, हाय मोरे राजा, इससे मैं जानता हूँ कि अपने-अपने घर के सब राजा हैं—यह सुनकर मुसाफिर समझ गया कि यह मसखरा है, हमारी बात का जवाब न देगा यह सोच उसने वहाँ से चल दिया।

बैरीवैल

एक साहिब के यहां एक खानसामा नौकर था खानसामा से और मेम साहिबा से बड़ी दोस्ती हो गई, एक रोज़ खानसामा मेमसाहिबा का चूमा ले रहा था कि इतने मे साहिब ने उसे देख लिया और मेमसाहिबा ने भी साहिब को आते देखा इस पर मेमसाहिबा ने खानसामा से कहा "डेखो हमारा साब टुम को चूमते डेखा अब बड़ा मुशकल पड़ा" । खानसामा बोला मेमसाहिबा कुछ परवाह नहीं जब साहिब पहुँचे तो खानसामा ने तुरन्त दुपट्टा शिर से उतार साहिब के पैरों पर रख दिया और कहा हजूर की नौकरी अब मैं नहीं करूँगा आज मुझ को मेमसाहिबा ने घी की चोरी लगाई कि तू घी पी गया और मुझे बुलाकर मेरा मुंह सूँघा । यह सुनकर साहिब ने मेमसाहिब से कहा यह बड़ा ईमानदार नौकर है, यह कभी नहीं चोरी करेगा, हम ने देखा तुमने इसका मुंह सूंघा, यह कह खानसामा से कहा वैल खानसामा टुम हमारी नौकरी करो, हम टुम्हारी तनख्वाह बढ़ावेगा, यह सुन खानसामा बोला "बैरी वैल सर" ।

●

अफीमची !

एक अफीमची रोज़ शाम को एक ग्लास में अपने लिये और दूसरे ग्लास में अपने औरत के लिये दूध लाया करता था, एक रोज दूध लाकर आले पर रख दिया और आप अटारी से नीचे किसी काम को आया, इतने में कहीं से बिल्ली आई और इनका दूध पी गई जब अटारी पर गये और देखा कि मेरे हिस्से का दूध बिल्ली पी गई तो आप वहीं से चिल्ला बीबी को पुकार कर कहने लगे, अरी ओरी मेरा दूध

बिल्ली पी गई मैं अब किसका दूध पीऊँगा, इस पर बीबी ने नीचे से जवाब दिया, "मियां तो आज मेरा ही दूध पी लेना"।

●

अमृत की वर्षा

एक रोज किसी जगह कथा बच रही थी। बहुत आदमी सुनने के लिये आये इतने में एक आदमी को बैठे-बैठे नींद आ गई और एक कुत्ता ने आकर उसके मुंह में पेशाब कर चल दिया थोड़ी देर बाद जब कथा सम्पूर्ण हुई, सब लोग उठ-उठ अपने-अपने घर चले इनको भी किसी ने सोते से जगाया जब घर आते थे तब रास्ते में सब कहने लगे भाई आज की कथा में क्या अमृतवर्षा अर्थात् अच्छी-अच्छी बाते सुनी। इस पर वह आदमी जो सो गया था, चट बोल उठा, हाँ भाई ठीक कहते हो, परन्तु अमृत कुछ कुछ खारा होता है। अगर आप यकीन न लायें तो मेरा मुंह चाट देखो, अभी तक मेरे मुंह में लगा है, सब समझ गये कि कुत्ता मूत गया होगा।

●

मेंम गधा

एक मेमसाहिब को बच्चे के दूध पिलाने को गधी की जरूरत हुई, अपने नौकर से कहा, "वैल नौकर तुम एक गधा तलाश कर लावो", नौकर एक गधा ले आया जब मेंमसाहब ने यह देखा तो नौकर पर खफा होकर बोली हम को साहिब गधा नहीं चाहिये मेंम गधा चाहिये!

●

जातीय पक्षपात !

एक रोज एक कायस्थ जो कि किसी बड़े ओहदे पर थे, कहीं जा रहे थे, बीच रास्ते में एक कैथ (कैथा) का वृक्ष लगा था नौकरों से पूछा यह कौन है; उन्होंने कहा लालासाहिब ये कैथ हैं, यह सुन आप ओहो ये तो हम जात है, अच्छा इन से पूछो किस वास्ते रास्ते में खड़े हैं, नौकरों ने बात बनाकर कहा यह कहते हैं कि हम नंगे हैं और हम को जाड़ा लगता है, यह सुनकर आपने नौकरों को हुक्म लगाया, अच्छा इनको हमारे तोशकखाने से पचीस थान रेशम के दे दो।

दोई दो।

चार चित्र (यार) परदेश निकले। एक रोज चलते-चलते इनको प्यास लगी और रास्ते में कहीं पानी नहीं मिलता था, इत्तिफाकन एक गाँव के किनारे एक दरख्त के साये में जा बैठे, इतने में कुछ फासले पर कुछ औरतें एक कुएँ पर पानी भरती दिखलाई पड़ीं, इस पर एक बोला मुझसे तो अब प्यास साधी नहीं जाती सो मैं तो कुएँ पर जा पानी माँग कर पीऊँगा ऐसा कह चल खड़ा हुआ और कुएँ पर जाकर एक औरत से कहा बाई-बाई मुझे पानी पिला दे, यह सुनकर उस औरत ने पूछा आप कौन हैं? उसने कहा मैं मुसाफिर हूँ, औरत ने कहा मुसाफिर तो दुनियाँ में दो है आप तीसरे कौन जवाब दो तो पानी पिलाऊँ, यह सुन आप लौटे और अपने साथियों से सब हाल कहा, इस पर दूसरा बोला मैं जाता हूँ यह कह चल दिया जाकर उसी औरत से कहा बाई-बाई मुझे पानी पिला दे उसने पूछा आप कौन हैं? उसने कहा मैं गुण्डा हूँ, यह सुन उस औरत ने कहा गुण्डे तो दुनियाँ में दो हैं। आप तीसरे कौन हैं, इस पर

आपको भी जवाब न आया लौट कर दूसरे साथियों से कहा—यह हाल सुनकर तीसरा उठा और कुएँ पर जाकर कहा बाई-बाई मुझे पानी पिला दे उसने पूछा आप कौन हैं? उसने कहा हम गरीब है उस औरत ने कहा गरीब तो दुनियाँ मे दो है आप तीसरे कौन यह सुन आप भी अपना-सा मुँह ले लौटे, यह माजरा सुन चौथा भी चला और जाकर कहा बाई-बाई मुझे पानी पिला दे, उसने कहा तुम कौन हो? उसने कहा हम लुच्चे हैं यह सुन औरत ने कहा लुच्चे तो दुनियाँ में दो हैं आप तीसरे कौन? इसका जवाब दो तो पानी पिलाऊँ। इनसे भी कुछ जवाब न बन पड़ा आप भी लौट आये इतने में उस औरत ने सिर पर घड़ा धर घर की राह ली और घर में घड़ा रखकर लोटे मे पानी भर और दोने में चार लड्डू रख आँचल से ढाँक ले चली और जाकर जहाँ चारों आदमी ठहरे थे पहुँचा और चारो को एक-एक लड्डू खिला पानी पिला रही थी कि य सब माजरा उसका देख किसी ने उसके घर वाले के पास जाकर कहा कि तुम्हारी औरत को चार आदमी भगाए लिये जाते है वो सुनते ही राजा के पास दौड़ा गया और सब हाल कहा राजा ने दस-पन्द्रह आदमी भेज इन्हें उस औरत के साथ अपने दरबार में पकड़ बुलवाया और सब हाल पूछा उन्होंने सब जैसे का तैसा कह सुनाया सब बातें सुन राजा ने उस औरत से दोई-दो के नाम पूछे औरत ने कहा हजूर मुसाफिर दो एक सूरज दूसरा चाँद, भूखे दो एक अन्न दूसरा जल, गरीब दो एक लड़की दूसरी गाय, और लुच्चे दो अगर मेरी जान बकशी जाय तो बतलाऊँ राजा ने कहा अच्छा कहो औरत ने कहा एक लुच्चा तो मेरा खाविन्द है जो बिना समझे आपमे रिपोर्ट की और दूसरे लुच्चा आप हैं जो मुझ-सी पतिव्रता स्त्री को कचहरी में बुला खुला-खुली इजहार लेते हैं मैंने कुएँ पर पानी इनको इस सबब से नहीं पिलाया कि एक तो यह भूखे थे और दूसरे धूप के

मारे चले आये इसमें मैंने यह मुनासिब समझा कि इनको कुछ खिला कर पानी पिलाना चाहिये।

मैं न दूँगा।

एक फकीर एक साहूकार की दुकान पर गया, कहा बाबा कुछ दिला। साहूकार उस वक्त हिसाब लिख रहा था बोला साँई साहिब देखो हमने उस जन्म में बहुत दिया जिसका बदला हमको यह मिला है कि रात दिन तो रुपयों की चौकसी करनी पड़ती है और हिसाब लिखते-लिखते उमर व्यतीत हुई जाती है इससे किसी दूसरे घर जाइये मैं न दूँगा !

एक पुरा उजाड़ !

किसी जगह नुमायशगाह भरी, देखनेवालों से फी आदमी एक रुपया लिया जाता था तब भीतर देखने को जाने पाते थे, कहीं से एक इकचश्म (काना) आया और आठ आना निकाल देने लगा, महसूल लेनेवाले ने कहा, आठ आने और दो, एक रुपया लगता है, एक पुरा उजाड़ बोला कि भाई एक रुपया दो आँखवालों के लिये है क्योंकि वे दोनों आँख से देखेंगे, और मेरी तो एक आँख है मैं तो एक ही आँख से देखूँगा इसलिए आठ आने में मुझे देखने दीजे !

सब खैरियत है !

एक खाँ साहेब परदेश गये, ये ऐसे कंजूस थे कि कभी किसी को

खैरात एक कौड़ी भी न देते थे, यदि खाना खाते वक्त कोई साम्हने आ जाय तो उससे यह भी न पूछें के क्यों भाई, कुछ खाओगे थोड़े दिनों बाद इनके देश का एक आदमी उसी देश में इनको पूछते-पूछते इनके पास गया, उस वक्त खाँ साहेब खाना खा रहे थे! इस आदमी को भूख लगी थी, लेकिन ये खाँ साहेब की आदत जानता था, मन में कहने लगा कि इनके साथ कुछ चाल चली जाय तो खाना खाने को मिले नहीं तो ये काहे को देने चले हैं ऐसा विचार कर खाँ साहेब से बोला "जनाब आपके घरवालों ने आपको सलाम कहा है", खाँ साहेब बोले "क्यों भाई हमारे घर के लोग तो सब खैरियत से हैं न", ये आदमी बोला, जी हाँ सब खैरियत से हैं, खाँ साहेब को रहाई न पड़ी, थोड़ी देर बाद फिर पूछ उठे "सब अच्छी तरह हैं", आदमी बोला "जी हाँ हैं तो सब अच्छी तरह पर आपका टाईगर नाम का कुत्ता मर गया।

खाँ साहेब—क्यों भाई कुत्ता कैसे मर गया।

आदमी—साहेब वह जो आपके ऊँट थे, वे जो मरे सो, वह उनका गोश्त मारे भूख के खा गया इसने मर गया।

खाँ साहेब—अरे ऊँट भी मर गये क्या?

आदमी—जी हाँ जनाब।

खां साहेब—क्यों भाई ऊंट कैसे मरे।

आदमी—जनाब आपकी बीबी जो मरी सो ऊंटों को कोई खाना देनेवाला न रहा, भूख के मारे मर गये।

खां साहेब—है हैं बीबी भी मर गई क्या?

आदमी—हां साहेब।

खां साहेब—या खुदा ये बड़ा गजब हुआ क्यों जी बीबी कैसे मरी।

आदमी—सरकार आपके लड़के जो मरे सो उनके ग़म के मारे बीबी भी मर गई !

खां साहेब—हाय अफ़सोस, लड़के भी न रहे, क्यों जी लड़कों को क्या हुआ ?

आदमी—हुजूर बारिश से आपका घर गिर पड़ा सो उससे दबकर लड़के मर गये।

खां साहेब—हाय कमबख्त ये तो सब चौपट हो गया और तू कहता है सब खैरियत हैं, ऐसा कह खां साहेब ने खाना तो अलग सरका दिया, भूखे उठ बैठे और घर को रवाना हुए। ये आदमी ने भी जब खां साहेब चले गये तब खां साहेब का खाना उठा, खा आगे को चल दिया।

बढ़िया समझ !

तीन बेवकूफ़ एक मीनार के पास से निकले एक ने कहा, अगले जमाने में कैसे लम्बे-लम्बे कारीगर थे। जो इस मीनार की चोटी तक पहुँचे, दूसरा बोला यह अहमक है, इसको हर एक बना सकता है ज़मीन पर लिटाकर बना लिया, फिर खड़ा कर दिया। तीसरा बोला तुम दोनों बेवकूफ़ हो तुम इसे क्या जानो कि यह क्यों कर बनाया गया होगा। सुनो हम बतलाते हैं यह इस तरह बना है पहिले यहां कुआ था उलट कर मीनार हो गया है !

मसखरा

एक मसखरे की माँ मर गई मुहल्ले पड़ोस की औरतें आकर उसे ` लगीं और कहने लगीं बेटा एक तुम्हारी मा मर गई तो

मर जाने दो हम तो तुम्हारी मां मौजूद हैं, तुम्हें कोई बात की तकलीफ़ न होगी।

दैवयोग से कुछ दिनों के बाद एक दिन मसखरे की औरत भी मर गई, तब मसखरा चीखें मार-मार रोने लगा, इसका रोना सुन कई आदमी इसका हाल पूछने लगे, मसखरा बोला जब पहले मेरी मां मर गई थी तब बहुत औरतें मुझे आईं और कहने लगीं कि एक तुम्हारी मा मर गई तो मर जाने दो हम तो तुम्हारी मां मौजूद है और अब इस वक्त जब मेरी औरत मर गई है तो यह कोई नहीं आकर कहती कि एक तुम्हारी औरत मर गई तो मर जाने दो हम तो तुम्हारी औरत मौजूद हैं।

●

मुकड़ गये।

एक काली रण्डी अपने बरामदे में बैठी थी, कि वहाँ से मियाँ अकड़बेग सिपाही ढाल तलवार लगाये निकले रण्डी को देख आप कहते हैं

"या खुदा यह रण्डी का गोया काली ढाल है"

यह सुन रण्डी ने जवाब दिया

"हूती आप ही की पुश्त की"

अकड़बेग यह सुन मुकड़ गये।

●

अफीमची।

एक अफीमची चाँदनी रात में ढालू जमीन पर पेशाब करने को बैठा तो पेशाब लहराती हुई नीचे इसकी तर्फ बहकर आने लगी।

उसी वक्त इनको पिनक का जोर भी सवार था, उसको अपने तर्फ आते देख (आप नशे के बीच तो थे ही) समझे कि काला साँप है जो मुझे काटने को आता है, इस ख़याल से आप ज्यों-ज्यों पीछे खिसके त्यों त्यों पेशाब की धार लहर मारती हुई इनकी तर्फ आवे, यहाँ तक कि वह पेशाब की लहर इनके पैरों से आ लगी तो अफीमची ने आह मार उससे चिपट कर कहने लगा ले मूजी काट खा।

बारी नइंयाँ।

एक स्त्री के पास एक स्त्री आई और कहा बाई आगी दे। इसपर दूसरी एक स्त्री ने आकर कहा बाई भाजी दे। इस पर तीसरी ने आकर कहा बाई पतरी दे। इस पर चौथी ने आकर कहा बाई कइंयाँ ले ले। इन चारों के जवाब पर उसने एक ही बात में चारों को समाधान किया कि "बारी नइंया।" अर्थात् आग लेने वाली के लिये यह जवाब हुआ कि आगी बारी नइंयाँ। भाँजी माँगने वाली के लिये यह जवाब हुआ कि भाजी लगाने की जगह "बारी" बारी नइंयाँ, पतरी माँगने वाली के लिये कि बारी नइंयाँ। "बारी" (एक जाति) और कइंयाँ (गोद) में लेने वाली के लिये कि तुम बारी नइंया (छोटी नहीं हो)

[१८८६]

अन्धी दौलत।

अमीर तैमूरलङ्ग जब हिन्दुस्तान आया तो लोगों से सुन रक्खा था कि हिन्दुस्तान में गाना-बजाना बहुत उमदा गाते हैं, इसलिये

एक गवैया बुलवाया और एक अन्धा गाने को आया और इस तरह गाना सुनाया कि तमाम महफिल खुश हो गई। इस पर अमीर ने गवैया से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? उसने जवाब दिया "दौलत" यह सुनकर अमीर ने हँसी में कहा कहीं दौलत भी अन्धी होती है? गवैया बोला हुजूर अगर दौलत अन्धी न होती तो आज लँगड़े के पास कभी न आती।

●

("परिहासिनी", लेखक भारतेन्दु प्रकाशक तथा सम्पादक म० कु० बाबू रामदीन सिंह, १८८८, खड्गविलास प्रेस बाँकीपुर)

सवाल जवाब

बैसवाड़े देश के किसी गाँव में एक दिन एक स्त्री अपने पति से खूब लड़ी, रात्रि के समय पुरुष को हुक्का पीने की आवश्यकता हुई तो वह कहने लगाः—

"हाथ पसारा सूझत नाहीं अँधियारा है गुप्पा।
ना जानूं कहँ आग धरी है कैसे भरिये हुक्का॥"

स्त्री ने उत्तर दिया—

"हम काहू से बोलत नाहीं हमरे मन में दुक्खा।
चुल्हा ही में आग बहुत है पास धरा है हुक्का॥"

●

एक थानेदार साहब अपने बड़े-बड़े अफसरों के साथ एक दिन थाने के सामने बैठे थे। और आपस में इधर-उधर की बातें कर रहे थे। अचानक एक वृद्ध गाँव से थानेदार साहब के सामने आकर

खड़ा हो गया और राजी खुशी इत्यादि समाचार उनसे पूछने लगा। थानेदार साहब वृद्ध से बातें करने में झेंप रहे थे और इधर-उधर बैठे सज्जनों की ओर भी आँख बचाकर देख लेते। वृद्ध के बातो का धीरे-धीरे जवाब देकर ज़ोर से बोले। "अभी चलो थोड़ी देर में बात करूँगा"। बैठे हुए अफसरों का ध्यान वृद्ध देहाती महाशय ने खींच लिया था। अचानक कोतवाल साहब ने थानेदार से पूछा, "यह कौन है?" थानेदार धीरे से अफसरों की ओर देखकर बोले। "साहब ये हमारे गाँव का आदमी है।"

वृद्ध देहाती महाशय ने थानेदार की ओर बाते सुनकर अफसरों की ओर हाँथ जोड़कर बोले। "अन्नदाता! यह मुझे ठीक से नहीं पहिचानता। इसकी माता मुझे भली-भाँति जानती है" अफसरों ने थानेदार की ओर देखा, उनका मुँह लाज में झुक गया था। अफसरों ने वृद्ध के उत्तर का मतलब समझ कर हँसने लगे।

●

एक मुंसी जी जिस शख्स पर नाराज होते उसे सुअर कह कर अपना गुस्सा शान्त करते थे। एक रोज भोर के समय मुंसी जी अपनी धोती और अंगौछी लेकर दरियाँ नहाने चल पड़े। दरिया के किनारे धोती रख कर हाथ पैर धोने लगे। इतने में एक सुअर आकर उनके धोती के ऊपर अपना खुर रख दिया। यह देख मुंसी जी बोले। "अत् तेरी की! अच्छा अब हो गया, आपको क्या कहे आप तो आप ही हैं। अब तसरीफ का टोकरा ले जाइये। अभी कोई देख भी नहीं रहा है"।

●

एक बार एक रईस किसी रंडी के यहाँ मुजरा सुनने को गया। वहाँ एक गरीब मसखरा भी मौजूद था, रईस को देख वह उनके और

नज़दीक आकर बैठ गया। बाई जी भीतर के कमरे में अपना चेहरा ठीक करने चली गई थीं। मसखरा अपनी दिल्लगीदार बातों से रईस को खुश करने की कोशिश करने लगा। परन्तु खुश होने के बजाय रईस मसखरे पर क्रोधित हो कर बोले "गधे में और तुममें कितना अन्तर है"। वह गरीब मसखरा अपने जगह से रईस जहाँ बैठे थे वहाँ तक की दूरी नाप कर बोला, "बाबू साहब! केवल दो हाथ का"।

●

बादशाह मुहम्मद के समय में जौनपुर और आज़मगढ़ की सरहद पर सबरहद नाम के स्थान पर एक क़ाज़ी का हुकुम चलता था वह अपने इनसाफ के लिये चारो ओर मशहूर था। एक बार उसके सामने एक आदमी अपनी फरियाद लेकर आया। वह क़ाज़ी को अपनी जोरू दिखला कर बोला कि नीरू कसाई ने मेरी बीवी को इस कदर मारा कि उसका चार महीने का गर्भपात हो गया। काज़ी ने नीरू कसाई को अपने सामने बुलवा कर इनसाफ़ किया कि कोई हर्ज की बात नहीं सब ठीक हो जायेगा। तुम अपनी बीवी नीरू के हवाले कर दो और जब तक इस औरत को चार महीने का गर्भ न रह जाय तब तक इसे अपने घर मत बुलाना।

●

गाँव के बाहर एक मन्दिर में एक जुआरी सतरञ्ज में बाजी लगा कर खेल रहा था। एक आदमी दौड़ता हुआ आकर बोला, "चल तेरे घर में आग लग गई है।" जुआरी बोला "अच्छा! चिल्ला मत नहीं तो इधर भी आग लग जायेगी।

●

महन्त जी ।

एक महन्त जी के समीप दक्षिण देश की एक स्त्री चेलिन होने को गई। महन्त जी उसे ऊपर से नीचे तक देखने लगे और फिर बात बना कर बोले, "भक्तियों को चाहिये कि गुरू को तन, मन, धन, अर्पण कर दें॥" दक्षिण देश की स्त्री ने उत्तर दिया "महाराज! मन तो ईश्वर का है और इस मिट्टी रूपी तन पर मेरे स्वामी का अधिकार है और मेरे समस्त सम्पत्ति का अधिकारी मेरा पुत्र है।"

●

एक शराबी शराब के नशे में सड़क के किनारे पड़ा था, अचानक एक कुत्ता आकर उसके मुंह पर पेशाब कर दिया, वह नशे में ही बोला, "अबे क्यों पानी का छींटा देता है उठ तो रहा हूँ। अच्छा पिला दे, प्यास भी लगी है।

●

[परिहासिनी १८८९]

मीठे ठग।

एक बनियाँ के यहाँ सराध था सो उसने विचारा कि एक ब्राह्मण का नेवता तो करना जरूर है पर ब्राह्मण ऐसा निवतना चाहिये जो कम खाता हो, ऐसा विचार कर ब्राह्मण की खोज में निकला, रास्ता में इसे एक मथुरिया चौबे मिले, यह वृद्ध थे सो बनिये ने जाना कि यह बहुत कम खाते होंगे ऐसा विचार कर चौवे से बोला "चौबे जी अब तो आप बूढ़े हो गये आहार भी आपका घट गया होगा" चौबे जी समझ गये कदाचित् इसको निवता करना की मनशा होगी, नहीं तो मेरा आहार क्यों पूछता, कहने लगे "हाँ जजमान अब तो पौवा

कही खाऊँ हूँ" ऐसा सुन के बनियाँ तुरन्त बोल उठा तो चौबे जी काल भोजन हमारे यहाँ कीजिये। इतना कह के चला गया। दूसरे दिन अपनी औरत से बोला कि आज चौबे जी नेवता निमित्त आवेंगे सो जो माँगे मे सरंजाम देना और इतना कह के दूकान को चला गया, थोड़ी देर में चौबे जी भी आ पहुँचे सो झट चौबे जी को मोदिआइन ने बिठाया, चौका-ओंका लगा दिया और पूछने लगी कि चौबे जी मोदी कह गये है कि जो कुछ चौबे जी कहैं सो सब सरंजाम मँगा देना सो कहिये कौन-कौन सरंजाम चाहिये। चौबे जी ने विचारा कि अब तो बनपटा बोले "मोदिआइन जी मँगाय दो कुछ मैंदा कुछ घी कुछ शक्कर कुछ साग-पात", मोदिआइन—"चौबे जी मैदा कितनी मगाऊ"

चौबे जी—"चार सेर"

मो०—"और घी"

चौबे०—"घी अऊ चार सेर"

मो०—"और चौबे जी शक्कर"

चौ०—"शक्कर अढ़ाई सेर बहुत होगी"

मोदिआइन जी ने यह सब घर से निकाल कर रख दिया सो चौबे जी ने कुछ अच्छे बड़े-बड़े लड्डू बनाये जब बन चुके तब मोदिआइन से बोले मोदिआइन कुछ लड्डु आये दच्छना हूँ तो घारा मोदिआइन बोली चौबे जी कह दीजिये क्या दच्छना दूँ मोदी कह गये हैं कि चौबे जी जो माँगे सो देना उन्हें नाराज मत करना सो जो दच्छना आप माँगे सो देऊँ।

चौ०—"दच्छना थोड़ई लूँगा"

मो०—"कितना कुछ"

चौ०—"सेर पीछे १०० रुपया"

मोदिआइन ने ४०० रुपया निकाल के दे दिये सो चौबे जी ने लिये और लड्डू खा के घर गये और सोचने लगे कि बनियाँ के पीछे में यह सब ले आया हूँ ये कुछ न कुछ विहत करेइगो सो ये महाराज झट बीमार होकर पड़े रहे। अब बनियाँ दूकान से घर आया कि चौबे जी ने कुछ तो परसाद छोड़ा ही होगा सो मैं खाऊँगा और आज व्यारी न बनवाऊँगा घर आन के औरत से पूछने लगा :—

बनियाँ—"कायरी चौबे जी आवेते"

स्त्री—"आवोतो तो दै मारो"

बनियाँ—"चौबे जी को खूब भोजन करादये ?"

स्त्री—"हाँ जो न कछू सरंजाम माँगो सो दे दयो तो"

ब०—"चौबे जी ने का बनाओतो"

स्त्री—"लडुआ बनायेते"

ब०—"कछू लड्डुआ बचे है।"

स्त्री—"एक टूका तो बचो नईयाँ सबले उन्नैं के तेंरे लग गये"

ब०—"काये के लड्डुआ बनाएते"

स्त्री—"मगदर के"

ब०—"तो बेसन मगायो हू है"

स्त्री—"हाँ"

ब०—"कितनी"

स्त्री—"४ सेर"

ब०—"अरे राम जी का मओ ४ सेर अरे ४ सेर इकहो ?"

स्त्री—"हाँ"

ब०—"और घी शक्कर"

स्त्री—उतना ही घी और आधी शक्कर लगीती"

ब०—"अरी राड़ घर तो लुटा ढआ कायेंईमैं तोरो भलमनसी दिखा, परो अरी तेल के तेली होत है तो का पहार पे चुपरत है"

स्त्री—"मै का करों तुमई तो कह गये ने के चौबे जो मांगे सो दै दे ओ"

ब०—"और कछु दच्छना दई है"

स्त्री—"हा दच्छना सोई दई है"

ब०—"कितनी"

स्त्री—"४०० रुपया"

ब०—"एँ"

स्त्री—"४०० रुपया"

ब०—"एँरी जो का बतात है"

स्त्री—"बतात काहीं तुमई तो कह गये ने के चौबे जो मागे सो देवईये"

ब०—अरे तोरो सत्यानासा होय गजब तो करदओ देख अब जात हो चौबे को कैसी-कैसी डांटत हो का लुगाइन न्यों ऐसो ठगने परत है जबे तो मोसे कहत तो कि पावभर खात हो अब चार सेर कैसे खागओ।"

ऐसा कहके बनियाँ चौबे जी के घर गया चौबे जी तो पहिले ही जान गये थे कि बनियाँ बिना आये न रहेगा सो ये पहिले से बिमार पड़ रहे थे और चौबन को सिखा दिया कि खूब रोना अब जब बनियाँ चौबे जी के घर पहुँचा तो पूछने लगा कि चौबे जी कहाँ है चौबन बोल आवी मोदी भले आये चौबे तो घड़ी दो घड़ी के है तुमने अच्छा निवता दिया मिठाई में कौन जाने तेरी लुगाई ने विष खवादियो का करो जितनी दच्छना मिली से सब डाक्टरन ने ले लीन्हो और ५०० रु० और मांगत हैं सो अब कहाँ से दें मैं तो अब पुलिस को जाती हूँ और तुम्हें पकड़ाती हूँ मेरा तो जनम भर का नुकसान हुआ ऐसा कह चौबन जी ने बनिये का हाथ पकड़ खूब रोना शुरू किया।

बनिया विचारा और भी घबड़ाया कि कहाँ मैं तो अपने रुपये लेने आया था कहाँ ये दूसरी आफत आन पड़ी विचारने लगा कि जो हुआ सो हुआ रुपया गये सो गये अब किसी तरह घर जाना चाहिये नहीं तो कुछ और विरद खड़ी होगी ऐसा विचार चौबन से हाथ छुड़ाने लगा, चौबन बोली सेठी जी अब कहाँ जाते हो चौबे जी को अच्छा करो नहीं तो कुतवाली चलो बनियाँ और घबड़ाया कहने लगा चौबन जी मैंने खिलाया पिलाया सब कुछ किया अब कुतवाली चलूँ। चौबन जी बोली चलोगे कैसे नहीं, न चलो तो मैं यही चपरासी लाऊँगी और नहीं तो ५०० रुपया और धरो जिससे चौबे बचे और चौबे मरे तो फाँसी तुम्हें लगी। बनिया झट धीरे से ५०० रुपया रख दिये और पछताता हुआ घर चला गया।

●

[हास्य मञ्जरी, १८५९ सम्पादक, पं० सूर्यनारायण शर्मा]

अखबारों के नादिहन्द।

एक समाचार पत्र के सम्पादक ने मूल्यमार ग्राहकों (नादिहन्दो) से घबरा कर विज्ञापन दे दिया कि प्यारे पाठक गण! यदि मूल्य न दोगे तो यह पत्र बन्द हो जायगा, इसको पढ़कर एक नकटे नादिहन्द ने ≈)॥ ढाई आने में पत्र को इस आशय से रजिस्टरी करके ऐडीटर के पास भेजा कि यार जो लोग तबही कीमत देंगे जब पत्र बन्द हो जायगा, बीच में अगर मूल्य दें तो क़सम है"। सोला आने के एडीटर कुछ मसखरे थे इरादा पत्र बन्द करने का तो था मगर उस पत्र को पढ़कर फिर भी एक अङ्क अखबार का निकाला, और उसमें लिखा के माके पेट में से बच्चा बोलता है कि बच्चा मर जावें तो हम पैदा होवें जिसको भरोसा नहीं हमारे आफिस में यह अजीब

तमाशा आया है आकर देख ले मगर अखबार का पिछला दाम चुका देना होगा। बस इसको पढ़कर धड़ाधड़ कीमत आने लगी, तब अखबार वाले ने दूसरा नोटिस दिया। "अब कुपूत का बाप न मरेगा क्योंकि उसके मार को उसके भाई-बन्धु और ग्राहक हलुआ पूरी खिलाकर ताजा बनाने लगे हैं। और सहायक हकीमों ने बहार जीवन की ऐसी उमदा दवा दी है कि बुड्ढे के सैकड़ों कुपूत उसके सामने पैदा होकर मर जाँयगे पर उस खांगड़ का बाल भी बाँका न होगा।

●

[हास्य रत्नाकर सम्वत् १९६३]

मथुरा में बदले बिना ब्याह होय नाय सकै. एक बिरियाँ एक चौबे जू ने बदले लुगाई बहुतई छोटी पाई कन्धा पै चढ़ाये सड़क में लिये जातहते काऊ दिल्लगीबाज जजमानने पूछी चौबे जू का छोरियै लिये जाओ दियो जजमान छोरी-छोरा सब याई में है।

●

वहीं से शुरू करो

किसी महाजन की बरात चली और जहाँ को जाती थी वहाँ पहुँची शादी बड़ी खुशी से हुई जब बारात विदा होने लगी तब झोली में रुपये भर कर एक आदमी बाँटने को निकला पर बाँटने वाला सोचने लगा किस तरफ से बाँटू तो वहाँ भाँड़ भी थे। (भाड़ = नकल करने वाले) भाँड़ कहने लगे कि पहिले हमारे तरफ से शुरू करो। तब लोगों ने कहा मारो सालों को जूता इस पर भाँड़ कहने लगे फिर अगर ऐसा हो तो वहीं से शुरू करो !

(सूर्यनारायण शर्मा)

●

एक चौबे का लड़का रास्ते में बैठा उँगलियों से जमीन कुरेद रहा था कोई आदमी उससे पूछने लगा लड़के तेरा क्या खो गया है ? उस लड़के ने कहा मेरा बाप खो गया है। आदमी ने कहा क्या उसी को ढूँढ़ता है ? लड़का बोला हाँ ! आदमी ने कहा तेरे बाप को जो हम ढूँढ़ दें तो क्या देगा ? लड़के ने कहा आधा तेरा आधा मेरा। आदमी सुनकर शर्मिन्दा हुआ और चला गया।

●

मुँह तोड़ जवाब।

एक ब्राह्मण गङ्गा स्नान कर रहा था, जब स्नान कर चुका तो एक लोटा जल लेकर उसने सूर्यनारायण को चढ़ाया, उसका यह हाल एक पादरी साहब वहाँ खड़े-खड़े देख रहे थे, जब वह घर जाने लगा तो पादरी साहिब ने उससे पूछा क्यों जी महाराज जो तुमने एक लोटा जल सूर्य देवता को चढ़ाया वह पहुँच गया ? ब्राह्मण ने जवाब के बदले उनके बाप-दादों को गाली दी, इस पर साहब ने ब्राह्मण से पूछा आप तो हमारे बाप-दादों को गाली देते है। ब्राह्मण ने कहा अगर आपके बाप-दादों को गाली पहुँची तो हमारे सूर्य्य देवता को भी पानी पहुँच गया।

(सम्पादक मु० नानक चन्द १६३८ ई०)

●

[सम्वत् १९६५ दिल्लगियों का ढेर]

वाह वारे बुद्धि।

चन्दा नामी हैदराबादी रण्डी किसी के यहाँ नाचने गई, संयोग से किसी का जोड़ा जूता उसके दामन से अटक कर घसीटता चला

आया। एक साहिब दिल्लगी से कहने लगे "क्यों बीबी ! तुम्हारा जोड़ा साथ-साथ रहता है ?" रण्डी ने कहा "सच है पर शरम की बात यह है कि अमीरों का जोड़ा नौकरों के बगल में रहता है।" मियाँ की सारी दिल्लगी भूल गई।

●

सम् १९४३

श्री वारांगना रहस्य महानाटक

(चतुर्थ गर्भाङ्क)

शुद्धाख्यां शिववाहिनीं करलसत्पात्राङ्कुशां भैरवीं
भक्ताभीष्ट वरप्रदां मुकुरलां संसार बन्धोच्छ्दाम्।
पीयूषाम्बुधिमथनोद्भवरसां सान्द्रिद्धिशालां परां
वीराराधित पदुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्॥
गंग भंग दुइ बहिन है रहत सदाशिव संग
मुरदा तारनि गंग है जिन्दा तारनि भंग॥

छानो बूटी।

●

पिए भंग रंग पर करत काज शंकर
शिव बम् बम् भोला हो॥

छानो बूटी।

●

जे नर पीअहिं भंग मिअल्ल घोअत घोटल छना।
ते बैकुण्ठे जाहि नतिल पुतल कुटुम्ब घना॥

छानो बूटी।

●

ज्वान खाय मन मस्त रहै गजमत्त के दन्त उखारन को।
बाल पियै बौराय जाय अरू वृद्ध पियै झखमारन को
विजया जिन देहु गवारन को॥

छानो बूटी।

●

घर के जानै मर गये मन में परम अनन्द।
लिहैं जात बैकुण्ठ को मोहना तेरी भंग॥

छानो बूटी।

●

भर दे मग्ज़ शराब के प्याले को भंग से।
गाढ़ी छनैगी आज किसी सज़्ब रंग से॥

छानो बूटी।

●

विजया ऐसी छानिये ज्यों जमुना की कीच।
घर के जानै मर गये आप नशे के बीच॥

छानो बूटी।

●

लाख उपाय करो जग माही।
बिना भांग भलमंशी नाहीं॥

छानो बूटी।

●

भज मन भंग दूध अरू खांड़ ।
होत भोरहि छानि करके डकरिये ज्यों सांड़ ॥
छानो बूटी ।

●

चौबे पढ़े न फारसी मये न दफ्तर बन्द ।
कृपा भई श्रीकृष्ण की भर भर लोटे भंग ॥
छानो बूटी ।

●

औ पहिले पहरे जो नर पीये उनके चुचड़े रे कान ।
तवा तगारी बेंच कर लोटे पर धरा ध्यान० देखो जी भाँग के लच्छन
छानो बूटी ।

●

भाँग खाय औ भांग खाय औ भांग खाय के सोवै ।
उठै तब फेरि भांग खाय तब दुख दलिद्दर रोवै ॥
छानो बूटी ।

●

भंग भागिड़दी भंग को भूरड कर के,
पाङ्ग भागिड़दी पाग से धोय डारा ॥
सांग सागिड़दी सिल्ल पर रक्ख कर के
रांग रागिड़दी रग्गड़ा जोर मारा ॥
छानो बूटी ।

●

सबुज रंग मेरे मन भावे
वा बिन मोहि न कछू सुहावे;
उतरत चढ़त मरोरत अंग
कह सखि सज्जन नहि सखि भंग ॥

छानो बूटी ।

अधेले की बूटी मिरच दमड़ी की ले लई
मसाला पैसे का रगड़ कर धरी
साथ साफी पानी जुगत सों छानो सहज में
पियैगा जो कोई हर हर भजेगा मस्त से
औ कागवाली, भोगविलासी, दौलतदासी
सत्यानाशी, छूनै चाँजुलियाँ पत्ती ॥

छानो बूटी ।

वास्ता मय् से न अपने को कभी बद्रीनाथ ।
भंग के रंग बरहमन् हैं जमाने वाले ॥

छानो बूटी ।

[हि० प्र०, नवम्बर १९०६ ई०]

अलमस्ती का एक चित्र

कोई दिन दूध मलाई ताजी, कोई दिन सूखी रोटी भाजी
कोई दिन कन्दमूल फल राजी, कोई दिन बिना आहार ॥१॥
कोई दिन घाम प्यास हेरानो, कोई दिन जाड़ा जटिलहि मानो
कोई दिन सुखद नींद मनमानी, कोई दिन पड़ती मार ॥२॥
कोई दिन प्रेम पंथ के योगी, कोई दिन राजा पण्डित भोगी
कोई दिन कुली व काहिल रोगी, कोई दिन अपढ़ गँवार ॥३॥
कोई दिन टमटम घोड़ा गाड़ी, कोई दिन नगर दीप वर झाड़ी
कोई दिन सभा समुन्दर खाड़ी, कोई दिन कारागार ॥४॥
कोई दिन धोती सही मोटी, कोई दिन पैंट व पगरी छोटी
कोई दिन बलकल पत्ती खोंटी, कोई दिन नङ्गे यार ॥५॥
जग झंझट का देख बहाना, रोना हँसना आना जाना।
लोचन ध्यान न इन पर लाना, करना देश सुधार ॥

लोचन प्रसाद

●

[मार्च १९०६ ई०]

गर्दभ

गर्दभ तुम्हारी सहन शीलता किमि कोउ करै बखान।
रजक केर तुम संपत सगरी है यह बात पुरान ॥

लाद पीठ पै लादी बाकी पहुचायो तेहि घाट।
तहू कृतघ्न रहै धोबी वह यहै जगत को ठाठ॥

●

उष्ट्र।

तुम्हरी दशा उष्ट्र जी ऐसी जैसे भारत वासी।
लादौ फांदौ गठरी ढोरहु तबहु सदा उदासी॥
कबहु मगन तुमहि नहि देखा काम करहु चहे कितनी।
कारण यही नकेल तुम्हारी रही अन्य के कर मो।

●

आदमी—

ये लीला है अद्भुत तेरी हे आदम के पूत।
बड़ी घमराडी बातें करता तू शैतां का दूत॥
पूरब पश्चिम कही क होवे आदत मे तू बन्दर है।
पशुओ के सब ऐगुन तुझ मे तू भी अजब मुछन्दर है॥

●

खटमल बाईसी

जगत के कारन करन चारो वेदन के
कमल में बसे वे सुजान ज्ञान धरि कै।
अवनी के पोषन दुष सोषन तिहुलोकन
के समुद्र मे जाय सोए सेस सेज करि कै॥

मदन जरायो औ संघारे दृष्टी ही से
सृष्टी बने है पहार डेहू भाजि हरि खरि कै।
विधि हरि हर और इन ते न कोऊ तेऊ
खाट पै न सोवैं खटमलन के डरि कै ॥६॥

●

कोऊ कवि कहैं सुरमंडल की झांई यह
ताकी कालिमा है बात ग्रंथनियों चली हैं ॥
कोऊ कहत जम्बू दीप जामुन को तरु एक
ताकी परछाईं यह अवलौन हली है।
जैसी जैसी मति जाकी त्योंही त्यों कहत पर
प्रीतम के मन मानी यहैं बात भली है ॥
ऊंचो मुख करि दोनो खटमल फूक कहूँ मेरे
जान याते छाती निसिपति की जली है ॥७॥

●

खाट धूप बीच जारे खटमल जरावने को
याते सूर भई चित चिन्ता यह कल मैं।
मेरी कोऊ जानि मोपै कोप करि बैठे फिर
मोही ठौर नाही तीनो लोक के महल मैं ॥
बरट पै नट जैसे ऐसे कै किरिन पर कोऊ
चढ़ि धावै आय कूदै एक पलमैं।

याही डर दिन कर डोलत है घर घर कांपत
हैं थर थर देखी जाय जल मैं ॥११॥

गिर ते गिरन दावानल की दहन कारे नाग
की डसनि भली बूड़ो जैबो जल को।
गोली की जलनि तरवार की लगन कहा
बान घाव कहा तोन गोलहू है सल को ॥
जहर लहर केती अहर तहर करैं बीज
की तरन दुख मान एक पलको।
कोऊ ऐसे नाहि जासौ ऐसे दुःख होत जान
सब तै बुरो है एक काट खटमल को ॥१४॥
(अली मुहिब्ब खां उपनाम 'प्रीतम' कवि)

बुढ़िया बखान।

दोहा।

सजन हमारे थे भले हमैं बहुत सकुचांय।
हम चाहैं जो कछु करैं कबहु न टुक रिसियांय ॥
आप चहै जाड़न मरें हमैं दुशाला देहि।
नित उठि गोत उढ़ारहीं तभू बलैया लेंहि ॥
आप चहै भूखे रहै साग पात भरि पेट।
मेव मिठाई पै हमै लावैं चदर लपेट ॥

आप न पहिरैं पानहीं ओढ़ै बसन पुरान।
जरी किनारीदार हम धरैं थान के थान॥
रही कमाई ससुर की सो सब लीन बेचाय।
नख सिख गहना हम लदी तभू न कोख जुड़ाय॥

सवैया!

नथिया पहिरौ जस चाक कुम्हार को,
मूंगा ओ मोती नगीन खाग।
दाल सी हाल रही झूलती पुनि
नाक कटी फटी केतिक वारा।
फुल्ली खुली मानो शूल हुलो,
दिलदारन के हिय रे खर घारा।
सोहैं बुलाक झलाक मलाक
तिलाक हमैं पल नेक उतारा॥

(पण्डित देवकी नन्दन तिवारड़ी की आज्ञा-
नुसार बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने भारत
जीवन प्रेस मे छापा था।)

●

चरपरी चटनी:—

चटनी बनी मजेदार। आती खट्टे की बहार॥
चटनी बनी मेरी अनमोल। जिसमे मिले मसाले तोल॥
इसमे पड़ा अर्क पोदीना। जिसको खाते अहल मदीना॥

सब हिकमत छान बनाया। चाटे शुद्ध होय मन काया ॥
इसमे मिला मसाला घनियाँ। जिसको खाते है सब बनियां ॥
चटनी चाटैं एडिटर लोग। जिसको व्यापा सेडिशन रोग ॥
चटनी चाटैं सन्त महन्त। फैल.वें अपना मुक्तों मुक्तों पन्थ ॥
चटनी चाटैं लोग लुगाई। जिसमें पड़ी पसेरिन राई ॥
चटनी चाटैं हुंडीवाल। फौरन हो जावैं कङ्गाल ॥
चटनी जब से हिन्द में आई। तब से सुस्ती आलस छाई ॥
चटनी चाटै जो व्यापारी। पावै रोजगार में ख्वारी ॥
चटनी चाटैं हिन्दू लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग ॥
चटनी साहब लोग जो लावैं। सारा हिन्द हजम कर जावैं ॥
चटनी अमले लोग जो खाते। दूनी रिशवत तुरत पचाते ॥
चटनी सभी महाजन खाते। जिससे रकम हज़म कर जाते ॥
चटनी खाया है बंगवासी। पैदा हुई हसद की खांसी ॥
चटनी ग्राहक जन जो खावैं। चन्दा सालो का तुर्त चुकावैं ॥
चटनी ऐसी यह फैलाया। तन धन दौलत मान नसाया ॥
मेरी चटनी है पचलोना। जिसको खाता स्याम सलोना ॥
मेरी चटनी जो कोई खाय। मुझको छोड़ अन्त नहिं जाय ॥

(हिन्दी प्रदीप, १८९७ ई० सितम्बर-अक्टूबर)

●

लहने को मिला घल छुंदलछा, अलु भोगन को मिली छुंदल नाली।
लद्दु अनेकन भोजन को मिले, छैन के हेत ऐ छेज छुखाली ॥

कै छलधा जुअती छव अंगन, लाओन तेल फुएल छुशाली।
ह्वै गल में बइयाँ छुस छो इमि, बीतन है नित लात उजाली॥

(पाखंड-विडंबन)
संवत १६२६

●

धन्य वे लोग जो मांस खाते।
मच्छ बकरा लवा ससक हरना चिड़ा भेड़ इत्यादि
नित चाभ जाते हैं॥
प्रथम भोजन बहुरि होइ पूजा मुनित अति ही सुखमा
भरे दिवस जाते हैं।
स्वर्ग को वास यह लोक में है तिन्हैं नित्य यहि रीति
दिन जे बिताते॥

●

राग सोरठ

सुनिए चित धरि यह बात।
बिना भक्षण मांस के सब व्यर्थ जीवन जात॥
जिन न खायो मच्छ जिन नहि कियो मदिरा पान।
कछु कियो नहि तिन जगत में यह सुनिहचै जान॥
जिन न चूम्यौ अधर सुन्दर और गोल कपोल।
जिन न परस्यौ कुंभ-कुच, नहिं लखि नासा लोल॥
एकहू निसि जिन न कीना भोग, नहिं रस लीन।
जानिए निहचै ते पशु हैं तिन कछू नहिं कीन॥

दोहा

एहि असार संसार में चारि वस्तु है सार।
जूआ मदिरा मांस अरू नारी-संग विहार॥

क्यों कि

मांस एव परो धर्म मांस एव परागतिः।
मांस एव परो योगी मांस एव परं तपः॥"

(वैदिकी हिंसा हि० न भ०)

●

मदिरा महिमा गान

मदिरा को तो अन्त अरू आदि राम को नाम।
तासों तामैं दोष कछु नहि यह बुद्धि ललाम॥
तिष्ठ तिष्ठ क्षण मद्य हम पियैं न जब लौं नीच!
यह कहि देवी क्रोध सों हत्यौ शुम्भ रन बीच॥
मद पी विधि जग को करत, पालत हरि करि पान।
मद्यहि पी कै नाश सब करत शम्भु भगवान॥
विष्णु वारूनी, पोर्ट पुरूषोत्तम, मद्य मुरारि।
शांपिन शिव, गौड़ी गिरीश, ब्रांडी ब्रह्म बिचारि॥

●

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरू सैयद सेख पठान!
दै बताइ मोहि कौन जो करत न मदिरा पान॥

पियत भट्ट के टट्ट अरु गुजरातिन के वृन्द।
गौतम पियत अनन्द सों पियत अग्र के नंद॥
ब्राह्मण सब छिपि छिपि पियत जामैं जानि न जाय।
पोथी के चोंगान भरि बोतल बगल छिपाय॥
वैष्णव लोग कहावही कंठी मुद्रा धारि।
छिपि छिपि कै मदिरा पियहिं, यह जिय माँझ विचारि॥
होटल में मदिरा पियै, चोट लगे नहिं लाज।
लोट लए ठाढ़े रहत टोटल देवै काज॥
राजा राजकुमार मिलि बाबू लीने सङ्ग।
नार-बधुन लै बाग में पीअत भरे उमङ्ग॥

●

पीले अवधू के मतवाले प्याला प्रेम हरी रस का रे!
तननुं तननुं तननुं तननुं में गाने का है चसका रे॥
निनि धध पप मग गम रिरि सासा भरले सुर अपने बस का रे।
धिधकट धिधकट धिधकट धाधा बजे मृदंग थाप कसका रे॥
पीले अवधू के०।

भट्ठी नहिं सिल लोढ़ा नहीं बोरधार।
पलकन की फेरन में चढ़त धुआँधार॥
पीले अवधू के०।

कलवारिन मदमाती काम कलोल।
भरि भरि देत पियलवा महा ठठोल॥
पीले अवधू के०।

अरी गुलाबी गाल को लिए गुलाबी हाथ !
मोहि दिखाव मद की झलक छलक पियालो साथ ॥
पीले अवधू के० मतवाले ।

बहार आई है भर दे बादए गुलगूँ से पैमाना !
रहे लाखों बरस साक़ी तेरा आबाद मैखाना ॥
सम्हल बैठो अरे मस्तो जरा हुशियार हो जाओ ।
कि साक़ी हाथ में मै का लिये पैमाना आता है ॥
उड़ाता खाक सिर पर झूमता मस्ताना आता है ।
पीले अवधू के मतवाले--अहाँ-अहाँ-अहाँ ॥
यह अउरङ्ग हे लोग चतुरङ्ग ही गाते है ।
न जाय न जाय मो सो मदवा भरीलो न जाय ॥

तब फिर कहाँ से—

ड्रिङ्क डीप ऑर टेस्ट नॉट द पीयरियन स्प्रिङ्ग
Drink deep & taste not the Pirian Spring
पीले अवधू के मतवाले प्याला प्रेमहरी रस का रे।
(वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति सम्वत् १९३०)

●

अन्धेरे नगरी अनबूझ राजा । टका सेर भाजी टका सेर खाजा ॥
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे । जैसे भँडुए पण्डित तैसे ॥
कुल मरजाद न मान बड़ाई । सबै एक से लोग-लुगाई ॥
जात-पाँत पूछै नहि कोई । हरि को भजै सो हरि का होई ।

बेश्या जोरू एक समाना। बकरी गऊ एक करि जाना॥
साँचे मारे मारे डोलैं। छली दुष्ट सिर चढ़ि-चढ़ि बोलैं॥
प्रगट सभ्य अन्तर छलधारी। सोइ राजसभा बल भारी॥
साँच कहैं ते पनही खावैं। झूठे बहुविधि पदवी पावैं॥
छलियन के एका के आगे। लाख कहौ एकहु नहिं लागे॥
भीतर होइ मलिन की कारो। चाहिए बाहर रंग चटकारो॥
धर्म अधर्म एक दरसाई। राजा करे सो न्याय सदाई॥
भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अमले औरु प्यादे॥
अन्धाधुन्ध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत बिदेसा॥
गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई। मानहुँ नृपति बिधर्मी कोई॥
ऊँच नीच सब एकहि सारा। मानहुँ ब्रह्म ज्ञान बिस्तारा॥
अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा॥

(अन्धेर नगरी सम्वत् १९३८)

●

आयो आयो बसन्त आयो आयो बसन्त। बन में महुआ टेसू फुलन्त॥
नाचत हैं मोर अनेक भाँति, मनु भैंसा का पड़वा फूलफालि।
बेला फूले बन बीच बीच, मानो दही जमायो सींच सींच॥
बहि चलत भयो है मन्द पौन, मनु गदहा को छान्यो पैर।
गेंदा फूले जैसे पकौरि। लड्डू से फले फल बौरि बौरि॥
खेतन में फूले भात-दाल। घर में फूले हम कुल के गाल॥
आयो आयो बसन्त आयो आयो बसन्त॥

(कर्पूर—मञ्जरी सं० १९३३)

●

सरद निसा निरमल दिसा गरद रहित नभ स्वच्छ।
सबके मन आनन्द बढ्यो लखि आगम दिन अच्छ॥
पितृ पच्छ को जानि के ब्राह्मन-मन सानन्द।
निरखहिं आश्विन मास सब ज्यों चकोर-गन चन्द॥
लखि आगम नवरात को सबको मन हुलसात।
लखन राम-लीला ललित सजि-सजि सबही जात॥
छुट्टी भई अदालतन आफिस सब भए बन्द।
फिरे पथिक सब भवन निज धरि-धरि हिए अनन्द॥
बङ्गालियन के हूँ भयो घर-घर महा उछाह।
देवी-पूजा की बढ़ी चित्त चौगुनी चाह॥
नाच लखन मद-पान को मिल्यो आइ सुभजोग।
दुरगा के परसाद सों मिलिहैं सब ही भोग॥
कोउ गावत कोऊ हँसत मङ्गल करन विचारि।
आगत पतिका बनि रहीं परदेसिन की नारि॥
(बकरी—विलाप, कवि-वचन-सुधा आश्विन कृ० ११ सं० १६३१)

(इन्दर सभा उरदू में एक प्रकार का नाटक है वा नाटकाभास है और यह बन्दर सभा उसका भी आभास है)

[आना राजा बन्दर का बीच सभा के]

सभा में दोस्तो बन्दर की आमद-आमद है।
गधे औ फूलों के अफसर की आमद-आमद है॥

मरे जो घोड़े तो गदहा य बादशाह बना।
उसी मसीह के पैकर की आमद-आमद है॥
व मोटा तन व थुँदला-थुँदला यू व कुची आँख
व मोटे ओठ मुछन्दर की आमद-आमद है॥
है खर्च-खर्च तो आमद नहीं खर-मुहरे की
उसी विचारे नए खर की आमद-आमद है॥१॥
[बन्दर सभा, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका जुलाई १८७९ ई०]

●

ई—कासी

स्थान—गैबी, पेड़, कूँआ, पास बावली

(दलाल, गङ्गापुत्र, दूकानदार, भँडेरिया और भूरीसिंह बैठे हैं)

दलाल—कहो गहन यह कैसा बीता? ठहरा भोग विलासी।
माल-वाल कुछ मिला, या हुआ कोरा सत्यानासी?
कोई चूतिया फँसा या नहीं? कोरे रहे उपासी?

गङ्गापुत्र—मिलै न काहे भैया, गङ्गा मैया दौलत दासी॥
हम से पूत कपूत की दाता मनकनिका सुखरासी।
भूखे पेट कोई नहिं सुतना, ऐसी है ई कासी॥

दूकान०—परदेसियों बहुत रहै आए?

गङ्गा—और साल से बढ़कर।

भँडे०—पितर-लौदनी रही न अनसिया,

भूरी०—रङ्ग है पुराने झंझार॥

खूब बचा ताड़यो, का कहना,
तू ही चूतिया हराटर।
भँडे०—हम न ताड़बै तो के तड़िए ? यही किया जनम भर ॥
दलाल—जो हो, अब की भली हुई, यह अमावसो पुनवासी।
गङ्गा०—भूखे पेट कोई नहि सुतता, ऐसी है ई कासी ॥
भूरी०—यार लोग तो रोजै कड़ाका कर थैं ऐ पैजामा।
गङ्गा०—ई तो झूठ कहथौ, सिहा,
भूरी०—तू सच बोल्यो, मामा ॥
गङ्गा०—तोहैं का, तू मार-पीट के करथो अपना कामा।
कोई का खाना, कोई की रएडी, कोई का पगड़ी जामा ॥
भूरी०—ऊ दिन खोपट दूर गए अब सोरहा दएड एकासी।
गङ्गा०—भूखे पेट कोई नहि सुतता, ऐसी है ई काशी ॥
भूरी०—जब से आये नए मिस्टर तब से आफत आई।
जान छिपावत फिरीथे खटमल—
दूकान०—ई तो सच है भाई ॥
भूरी०—ई है ऐसा तेज गुरू बरसन के देथै लदाई।
गोविन्द पालक मेकलोडो से एकी जबर दोहाई ॥
जान बचावत छिपत फिरीथै घुस गइ सब वदमासी।
गङ्गा०—भूखे पेट तो कोई नहीं सुतता, ऐसी है ई कासी ॥
भूरी०—तोरे आँख में चरबी छाई माल न पायो गोजर।
कैसी दून की सूझ रही है असमानों के उप्पर ॥

नर न भए हो पैदा करके, घर के माल चुतरे नर।
बछिया के बाबा, पँड़िया के ताऊ, घुमनि क घुमघुम झरझर।
कहाँ की ई तूँ बात निकास्यो खासो सत्यानासी।
भूखे पेट कोई नहिं सुनता, ऐसी है ई कासी॥

(गाता हुआ एक परदेसी आता है)

परदेसी—देखी तुमरी कासी, लोगो, देखी तुमरी कासी।
जहाँ बिराजैं विश्वनाथ विश्वेश्वर जी अविनासी॥
आधी कासी भाँट-भँडेरिया बाह्मन औ संन्यासी।
आधी कासी रण्डी मुण्डी राँड़ खानगी खासी॥
लोग निकम्मे भङ्गी गञ्जड़ लुच्चे बे-बिसवासी।
महा आलसी झूठे शुहदे बे-फिकरे बदमासी॥
आप काम कुछ कभी करैं नहिं कोरे रहैं उपासी।
और करे तो हँसैं बनावैं उसको सत्यानासी॥
अमीर सब झूठे औ निन्दक करैं घात विश्वासी।
सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलैं बात अकासी॥
मैली गली भरी कतवारन सड़ी चमारिन पासी।
नीचे नल से बदबू उबलै मनो नरक चौरासी॥
कुत्ते भूँकत काटन दौड़ैं सड़क साँड़ सों नासी।
दौड़ैं बन्दर बने मुछन्दर कूदैं चढ़े अगासी॥
घाट जाओ तो गङ्गापुत्तर नोचैं दै गल फाँसी।
करैं घाटिया बस्तर-मोचन दे देके सब झाँसी॥

राह चलत भिखमङ्गे नोचैं बात करे दाता सी।
मन्दिर बीच भँड़ेरिया नोचैं करै धरम की गाँसी॥
सौदा लेत दलालो नोचैं देकर लासालासी।
माल लिए पर दुकनदार नोचैं कपड़ा दे रासी॥
चोरी भए पर पूलिस नोचै हाथ गले बिच ढाँसी।
गए कचहरी अमला नोचैं मोचि बनावैं घासी॥
फिरैं उचक्का दे दे धक्का लूटैं माल मवासी।
कैद भए की लाज तनिक नहि बे-सरमी नङ्गी-सी॥
साहेब के घर दौड़े जावैं चन्दा देहि निकासी।
चढ़ै बुखार नाम मन्दिर का सुनहि होय उदासी॥
घर की जोरू लड़के भूखे बनै दास औ दासी।
दालकी-मएडी रएडी पूजें मानो इनकी मासी॥
आप माल कचरैं छानैं उठि भोरहिं कागाबासी।
बाप के तिथि दिन बाह्मन आगे धरैं सड़ा औ बासी॥
करि बेवहार साक बाँधैं बस पूरी दौलत दासी।
घालि रूपैया काढ़ि दिवाला माल डेकारैं ठाँसी॥
काम कथा अमृत-सी पीयैं समुझैं ताहि बिलासी।
राम नाम मुँह से नहिं निकसै सुनतहि आवै खाँसी
देखी तुमारी कासी भैया, देखी तुमारी कासी

भूरी०—कहो ई सरवा अपने शहर की एतनी निंदा कर गवा; तूँ लोग कुछ बोलत्यौ नाहीं ?

गंगा०—भैया, अपना तो जिजमान है अपने न बोलेंगे चाहे दस गारी दे ले।

भँडे०—अपने जिजमानै ठहरा।

दलाल०—और अपना भी गाहकै है।

दुकान०—और भाई हमहूँ चार पैसा एके वदौलत पावा है।

झूरी०—तू सब का बोलबो, तू सब निरे दब्बू चप्पू हौ, हम बोलबै! (परदेसी से) ए चिड़ियाबावली के परदेसी फरदेसी! कासी की बहुत निंदा मत करो। मुँह बल्सैये, का कहैं के साहिब मजिस्टर हैं नाहीं तो निंदा करना निकास देते।

परदेसी—निकास क्यों देते? तुमने क्या किसी का ठीका लिया है?

झूरी०—हाँ हाँ, ठीका लिया है मटियाबुर्ज।

परदेसी—तो क्या हम झूठ कहते हैं?

झूरी०—राम राम, तू भला कबौं झूठ बोलबो, तू तो निरे पोथी के बेठन हौ।

परदेसी—बेठन क्या।

झूरी०—बे त मत करो गप्पो के, नाहीं तो तोरी अरबी-फारसी घुसेड़ देबै!

परदेसी—तुम तो भाई अजब लड़ाके हो, लड़ाई मोल लेते फिरते हो! बे ते किसने किया? यह तो अपनी अपनी राय है; कोई किसी को अच्छा कहता है, कोई बुरा कहता है, इससे बुरा क्या मानना!

झूरी०—सच है पनचोरा, तू कहै सो सच, बुड्ढी तू कहे सो सच!

परदेसी—भाई अजब शहर है, लोग बिना बात ही लड़े पड़ते हैं।

(सुधाकर आता है)

(सब लोग आशीर्वाद, दंडवत, आओ-आओ शिष्टाचार करते हैं)

गंगा०—भैया इनके दम के चैन है। ई अमीरन के खेलउना हैं।

झूरी०—खेलउना का हैं ढाल, खजानची, खिदमतगार सबै कुछ हैं।

सुधाकर—तुम्हें साहब चरिये बूकना आता है!

झूरी०—चरौं का, हमहन झूठ बोलीलः, अरे बखत पड़े पर तू रंडी ले आवः; मंगल के मुजरा मिले ओमें दस्तूरी काटः; पैर दाब, रूपया-पैसा अपने पास रक्खा, यारन के टूरे से भाँसा बतावः। ऐ! ले गुरु तोहीं कह; हम झूठ कहवई।

गंगा०—अरे भैया बिचारे ब्राह्मण कोई तरह से अपना कालक्षेप करयै, ब्राह्मण अच्छे हैं।

भँडे०—हाँ भाई न कोई के बुरे में, न भले मे और इसमें एक बड़ी बात है कि इनकी चाल एक-रंगी हमेसा से देखी थै!

गंगा०—और साहेब एक अमीर के पास रहे से इनकी चार जगह जान-पहिचान होय गई। अपनी बात अच्छी बनाय लिहिन है।

दुकान०—हाँ भाई, बाजार में भी इनकी साख बँधी है।

सुधाकर—भया भया, यह पचड़ा जाने दो, कहो यह नई सूरत कौन है?

झूरी०—गुरू साहब, हम हियाँ भाँग का रगड़ा लगावत रहे, बीच मे गहन के मारे-पीटे ई धुआँकस आ गिरे।

आके पिंजड़े में फँसा अब तो पुराना चंडूल।
लगी गुलसन की हवा दुम का हिलाना गया भूल॥

(परदेसी मुँह के पास चुटकी बजाता है और नाक के पास से उँगली लेकर दूसरे हाथ की उँगली पर घुमाता है)

परदेसी—भाई तुम्हारे शहर सा तुम्हारा ही शहर है, यहाँ की लीला ही अपरंपार है!

झूरी०—तोहूँ लीला करथौ।

परदेसी—क्या?

मूरी०—नहीं ई जे तोहूँ रामलीला मे जाथौ कि नाहीं ?

(सब हँसते हैं)

परदेसी—(हाथ जोड़कर) भाई, तुम जीते हम हारे, माफ करो ।

मूरी०—(गाता है) तुम जीते हम हारे साधो, तुम जीते हम हारे ।

सुधाकर—(आप ही आप) हा ! क्या इस नगर की यही दशा रहेगी ? जहाँ के लोग ऐसे मूर्ख हैं वहाँ आगे किस बात की वृद्धि की संभावना करें । केवल यह मूर्खता छोड़ इन्हें कुछ आता ही नहीं ! निष्कारण किसी को बुरा-भला कहना ! बोली ही बोलने में इनका परम पुरुषार्थ । अनाप शनाप जो मुँह में आया बक उठे, न पढ़ना न लिखना ! हाय ! भगवान् इनका कब उद्धार करेगा !!

मूरी०—गुरु, का गुड़बुड़ गुड़बुड़ जपथौ ?

सुधाकर—कुछ नहीं भाई यही भगवान का नाम ।

मूरी०—हाँ भाई, संझा भई एह बेरा टैं हैं न किया चाहिए, राम-राम की बखत भई, तो चलो न गुरू ।

सब—चलो भाई !

(जवनिका गिरती है)

●

(प्रेमजोगिनी, दूसरा गर्भांक)
संवत् १९३२

हाय ! भारत

आलस्य—हहा ! एक पोस्ती ने कहा, पोस्ती ने पी पोस्त नौ दिन चले अढ़ाई कोस । दूसरे ने जवाब दिया, अबे वह पोस्ती न होगा

डाक का हरकारा होगा। पोस्ती ने जब पोस्त पी तो या कूँड़ी के उस पार या इस पार ठीक है।

एक बारी में दो चेले लेटे थे और उसी राह से एक सवार जाता था। पहिले ने पुकारा "भाई सवार सवार, यह पक्का आम टपक कर मेरी छाती पर पड़ा है, जरा मेरे मुँह में तो डाल।"

सवार ने कहा "अजी तुम बड़े आलसी हो। तुम्हारी छाती पर आम पड़ा है सिर्फ हाथ से उठा कर मुँह मे डालने में यह आलस है।'

दूसरा बोला "ठीक है साहब, यह बड़ा ही आलसी है। रात भर कुत्ता मेरा मुँह चाटा किया और यह पास ही पड़ा था पर इसने न हाँका।"

सच है कि जिंदगी के वास्ते तकलीफ उठाना, मजे में हालमस्त पड़े रहना। सुख केवल इसमें है "आलसी पड़े कुएँ में वहीं चैन है।"

(ग़ज़ल गाता है)

दुनिया में हाथ-पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठके कहीं जाना नहीं अच्छा॥
बिस्तर पर मिस्ले लोथ पड़े रहना हमेशा।
बंदर की तरह धूम मचाना नहीं अच्छा॥
"रहने दो जमीं पर मुझे आराम यहीं है।"
छेड़ो न नक्शेया हैं मिटाना नहीं अच्छा॥
उठ करके घर से कौन चले यार के घर तक।
"मौत अच्छी है पर दिल का लगाना नहीं अच्छा॥"
धोती भी पहिने जब कि कोई गैर पिन्हा दे।
उमरा को हाथ पैर चलाना नहीं अच्छा॥

सिर भारी चीज है इसे तकलीफ हो तो हो।
पर जीभ बिचारी को सताना नहीं अच्छा॥

फाकों से मरिए पर न कोई काम कीजिए।
दुनिया नहीं अच्छी है जमाना नहीं अच्छा॥

सिजदे से गर बिहिश्त मिले दूर कीजिये।
दोजख ही सही का झुकाना नहीं अच्छा॥

मिल जाय हिंद खाक में हम काहिलों को क्या।
ऐ मीरे-फर्श रंज उठाना नहीं अच्छा॥

और क्या। काजी जी दुबले क्यों, कहैं शहर के अंदेशे से। अरे "कोउ नृप होय हमें का हानी, चेरि छाँड़ि नहि होउब रानी।"

आनन्द से जन्म बिताना।

"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥"

"जो पढ़तव्यं सो मरतव्यं, जो न पढ़तव्यं सो भी मरतव्यं, तब फिर दन्तकटाकट किं कर्तव्यं?" भई जात में ब्राह्मण, धर्म में बैरागी, रोजगार में सूद और दिल्लगी में गप सब से अच्छी। घर बैठे जन्म बिताना, न कहीं जाना और न कहीं आना! बस खाना, हगना, मूतना सोना, बात बनाना, ताना मारना और मस्त रहना! अमीर के सर पर और क्या सुरखाब का पर होता है, जो कोई काम न करे वही अमीर। "तवंगरी बदिलस्त न बमाल।" (अमीरी हृदय से है, धन से नहीं है।) दोई तो मस्त है या मालमस्त या हालमस्त। (भारतदुर्दैव को देख कर उसके पास जाकर प्रणाम करके) महाराज। मैं सुख से

सोया था कि आपकी आज्ञा पहुँची, ज्यों-त्यों कर यहाँ हाजिर हुआ! अब हुक्म !

भारतदुर्दैव—तुम्हारे और साथी सब हिन्दुस्तान की ओर भेजे गए हैं, तुम भी वहीं जावो और अपनी जोगनिन्द्रा से सब को अपने वश में करो।

आलस्य—बहुत अच्छा ! (आप ही आप) आह रे बप्पा! अब हिन्दुस्तान मे जाना पड़ा ! तब चलो धीरे-धीरे चलें। हुक्म न मानेंगे यो लोग कहेंगे "परबस खाइ भोग करि नाना, समरभूमि भा दुरलभ प्राना।" अरे करने को दैव आप ही करेगा, हमारा कौन काम है, पर चलें !

(यही सब बुड़बुड़ाता हुआ जाता है, मदिरा आती है)

मदिरा—भगवान् सोम की मैं कन्या हूँ। प्रथम वेदों ने मधु नाम से मुझे आदर दिया। फिर देवताओं की प्रिया होने से मैं सुरा कहलाई और मेरे प्रचार के हेतु श्रौत्रामणि यज्ञ की सृष्टि हुई। स्मृति और पुराणों मे भी प्रवृत्ति मेरी नित्य कही गई। तंत्र तो केवल मेरे ही हेतु बने ! संसार में चार मत बहुत प्रबल हैं, हिंदू, बौद्ध, मुसलमान और क्रिस्तान ! इन चारो में मेरी चार पवित्र प्रतिमूर्ति विराजमान हैं ! सोमपान, वीराचमन, शराबुनतहूरा और बापटैज़िंग वाइन ! भला कोई कहे तो इनको अशुद्ध कहा ही तो क्या हमारे चाहने वालों के आगे वे लोग बहुत होगें तो फी सैकड़ा दस होंगे, जगत में तो हम व्याप्त हैं।

हमारे चेले लोग सदा यही कहा करते हैं ! और फिर सरकार के राज्य के तो हम एकमात्र भूषण हैं।

दूध सुरा दधिहू सुरा, सुरा अन्न धनधाम।
वेद सुरा ईश्वर सुरा, सुरा स्वर्ग को नाम॥

जाति सुरा विद्या सुरा, बिनु मद रहै न कोय।
सुधरी आजादी सुरा, जगत सुरामय होय॥

× × × ×

(भारत दुर्दशा, चौथा अङ्क सम्वत् १६३३)

उर्दू का स्यापा

[सं० १९३१]

अलीगढ़ इंस्टिट्यूट गज़ट और बनारस अखबार के देखने से ज्ञात हुआ कि बीबी उर्दू मारी गई और परम अहिंस निष्ठ होकर भी राजा शिवप्रसाद ने यह हिंसा की—हाय हाय! बड़ा अंधेर हुआ मानो बीबी उर्दू अपने के साथ सती हो गई। यद्यपि हम देखते हैं कि अभी साढ़े तीन हाथ की ऊँटनी भी बीबी उर्दू पगुर करती जीती है, पर हमको उर्दू अखबारों की बात का पूरा विश्वास है। हमारी तो वही कहावत है—"एक मियाँ साहब परदेश में सरिश्तेदारी पर नौकर थे। कुछ दिन पीछे घर का एक नौकर आया और कहा कि मियाँ साहब, आप की जोरू रांड हो गई। मियाँ साहब ने सुनते ही सिर पीटा, रोए गाए, बिछौने से अलग बैठे, सोक माना, लोग भी मातम-पुरसी को आए। उनमें उनके चार मित्रों ने पूछा कि मियाँ साहब आप बुद्धिमान होके ऐसी बात मुँह से निकालते हैं, भला आपके जीते आपकी जोरू कैसे राँड़ होगी? मियाँ साहब ने उत्तर दिया—

"भाई बात तो सच है, खुदा ने हमें भी अकिल दी है, मैं भी समझता हूँ कि मेरे जीते मेरी जोरू कैसे राँड होगी। पर नौकर पुराना है, झूठ कभी न बोलेगा।"

जो हो "बहर हाल हमें उर्दू का गम वाजिब है" तो भी हम यह स्यापे का प्रकर्ण यहाँ सुनाते हैं। हमारे पाठक लोगों को रुलाई न

आवे तो हँसने की भी उन्हें सौगन्द है, क्यों कि हाँसा-तमासा नहीं बीबी उर्दू तीन दिन की पट्ठी अभी जवान कट्ठी मरी हैं।

[अरबी, फारसी, पश्तो, पंजाबी इत्यादि कई भाषा खड़ी होकर पीटती हैं।]

है है उर्दू हाय हाय। कहाँ सिधारी हाय हाय॥
मेरी प्यारी हाय हाय। मुंशी मुल्ला हाय हाय॥
वल्ला बिल्ला हाय हाय। रोयें पीटैं हाय हाय॥
टाँग घसीटैं हाय हाय। सब छिन सोचैं हाय हाय॥
डाढ़ी नोचैं हाय हाय। दुनिया उलटी हाय हाय॥
रोजी बिलटी हाय हाय। सब मुखतारी हाय हाय॥
किसने मारी हाय हाय। खबर-नवीसी हाय हाय॥
दाँता-पीसी हाय हाय। एडिटर-पोशी हाय हाय॥
बात-फरोशी हाय हाय। वह लस्सानी हाय हाय॥
चरब-जुबानी हाय हाय। शोख-बयानी हाय हाय॥
फिर नहिं आनी हाय हाय॥

[हरिश्चन्द्र चन्द्रिका जून सन् १८७४ ई०]

(परिशिष्ट)

हास्य और साहित्यिक प्रयोगों की परम्परा

हास्य सर्वाङ्गीण मानवता का अभिन्न अङ्ग है। हास्य के अभाव में मनुष्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती और इसीलिये यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने मानव की परिभाषा को इस प्रकार निरूपित किया था : 'मनुष्य एक ऐसा जीव है, जो हँसता है।' आज भी आधुनिक मनोविज्ञान के स्रष्टा तथा विचारक सभी मूल-प्रवृत्तियों (Instincts) में हँसने को ही ऐसी प्रधान प्रवृत्ति मानते हैं, जिसके आधार पर मानव जाति को जन्तु-जगत के अन्य सदस्यों से अलग किया जा सके। हास्य एक सार्वभौमिक समस्या है और साथ ही हल भी। मनुष्य हँसकर बहुत कुछ खोता है, जैसा कि 'जो हँसा सो फंसा' कहावत में प्रकट है; लेकिन हँसकर मनुष्य बहुत कुछ प्राप्त भी करता है, भीषण से भीषण दुख को, सतत तथा अथक परिश्रम की श्रान्ति को मुस्कान की एक हल्की रेखा समाप्त कर सकती है। हास्य एक ऐसा अस्त्र है, जो मानव-सभ्यता के विनाश के लिये नहीं, प्रत्युत स्वस्थ एवं स्थायी सुख की प्राप्ति के लिये प्रयोग मे आता है। हास्य में

सुधार की शक्ति है, प्रेम का बल है और सहानुभूति की क्षमता है। मनुष्य सुख और दुःख के झोंके से अपनी रक्षा करने के लिये सहज ही में हँस देता है।

हास्य का मूल—हास्य निश्चय ही उद्देश्यजन्य होता है। इसके मूल में बहुत-सी प्रवृत्तियाँ या तो व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कार्य करती हैं। इसके कारण के विषय में अनेक विश्लेषण प्रस्तुत किये गये हैं। अरस्तू ने नाटक-विधान की विवेचना में अपना यह मत प्रकट किया है कि हास्य के सृजन के लिये किसी निम्न कोटि के पात्र का अवलम्बन लेना चाहिये; इस पात्र के शारीरिक गठन में कुरूपता या अनावश्यक विचित्रता से दर्शकों को हास्य की प्रेरणा मिलनी चाहिये, लेकिन पात्र की अव्यवस्था की सीमा में दुःख या करुणा के लिये कोई स्थान नहीं होना चाहिये। उनके इस विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि हास्य को प्रधान नायक के उत्तरदायित्व से मुक्त रखा गया; यह हास्य के प्रति उनकी हीनभावना की परिचायिका है। सामान्य धारणा में भी हास्य को कोई सम्मानजनक स्थिति नहीं प्राप्त है, गंभीरता से एक सात्त्विक गुण का बोध होता है।

अरस्तू की परिभाषा सर्वथा अपूर्ण तथा एकाङ्गी है। मनुष्य निश्चय ही ऐसे विचित्र रूपों को देखकर हँस पड़ता है, जिससे पूर्वज्ञान तथा दुःख का स्पर्श न हो। यदि किसी व्यक्ति की नाक टेढ़ी है, तो हँसा जा सकता है; लेकिन यदि उसकी नाक रोग के कारण कट गई है, तो हास्य का प्रभाव न होकर घृणा या दया का प्रकोप होगा। जीवन में बहुत से ऐसे अवसर भी आते हैं, हास्य को उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ सर्वथा भिन्न होती हैं। टामस हाब्स के विचार से हास्य का कारण हँसने वाले के मन में प्रधानता या गर्व के भाव हैं। हम जब किसी मनुष्य को कोई आशातीत गलती करते पाते हैं, तो हँस पड़ते हैं; क्योंकि हमारा अज्ञात मस्तिष्क शीघ्र ही इस मनुष्य से अपनी तुलना

करके अपने को ऊँचा समझ बैठता है। क्या कारण है कि श्यामपट्ट पर जब अध्यापक कोई गलती करता है तो विद्यार्थी खिलखिला पड़ते हैं? इस प्रकार के विचारकों का कथन है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक हास्यजनक परिस्थिति में हास्य का कर्त्ता (Subject) निश्चय ही हास्य के कर्म (object) से अपने को अच्छा समझता है। जब एक युवक एक लम्बी पत्नी के साथ एक नाटे पति को जाते देखता है, तो अचानक ही वह हँस पड़ता है; लेकिन कदाचित एक नाटा युवक इस परिस्थिति की ओर ध्यान न दे। युवक अपने को नाटे पति की तुलना में अधिक योग्य समझता है और नाटा पति उसके लिये विनोद का साधन बन जाता है। अपने गौरव का प्रकाश हास्य का अतुल साधन है।

हास्य वस्तुतः आनन्द की सरल तथा हार्दिक अभिव्यक्ति है, आनन्द की सृष्टि हृदय में भिन्न भिन्न कारणों से हो सकती है। कदाचित मनुष्य का हृदय सबसे अधिक उस समय आनन्दित होता है जब वह अपने सापेक्ष मूल्यांकन में अपने को बड़ा समझ बैठता है। लेकिन साथ ही आनन्द को उत्पन्न करने वाली अन्य शक्तियाँ भी हैं, जो मानव-हृदय को गुदगुदा देती हैं; इन शक्तियों में लिंग (Sex) का भी कम महत्त्व नहीं है। फ्रायड तो जीवन को लिंग का ही पर्याय समझता है, लेकिन इसे इतने व्यापक रूप में स्वीकार न करने पर भी हास्य के ऊपर उसके प्रगाढ़ प्रभाव को पूर्णतः अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यदि किसी दँढ़री को दुलहिन के भेष में सजाया जाय या किसी भालू महिला को आधुनिक सभ्यता में दिखलाया जाय, तो संसार के किसी भी भाग के लोग हँसी से फूट पड़ेंगे। इसका अभिप्राय यह है कि यह प्रक्रिया सार्वभौमिक है। लिंग-भावना से व्यक्ति अपने जीवन की विशेष अवस्थाओं में मग्न हो उठता है और इस आनन्द की विह्वलता इतनी गाढ़ी होती है कि हास्य स्वाभाविक हल बन जाता है। यदि किसी युवती के शरीर

के किसी अंश से हवा के झोंकों में वस्त्र खिसक जाता है, तो हास्य के आलम्बन से लैंगिक प्रखरता साकार हो जाती है।

हास्य का सबसे बड़ा प्रेरक आनन्द है या आनन्द प्राप्ति की आशा है। जब किसी भावना के केन्द्रण से मस्तिष्क संपृक्त हो जाता है, जब किसी विशेष मुद्रा के निरन्तरता से मानसिक श्रान्ति हो जाती है, जब एक ही दिशा में अधिक श्रम से व्याकुलता बढ़ने लगती है, तो हास्य का आश्रय अनिवार्य आवश्यकता हो जाती है। हास्य से मनोवैज्ञानिक हीनता की भावनाओं तथा सतत चेष्टा से उत्पन्न अरुचि को मनुष्य मोड़ देता है और नवीन शक्तियों का उसके भीतर स्वतः संचार होने लगता है। आनन्द के लिये नवीनता कौतूहल, तथा विचित्रता आवश्यक परिस्थितियाँ हैं। यदि आनन्द की एक परिस्थिति मनुष्य के जीवन में स्थायी हो जाय, तो वह आनन्द के स्थान पर कुछ ऐसे भावों को जन्म देने लगती है, जिन्हें यदि 'दुख' न भी कहा जा सके, तो कम से कम 'सुख' की संज्ञा नहीं दी जा सकती। हास्य की भूमिका में भी व्यक्ति परिवर्त्तन चाहता है। मेरी समझ से नवीनता हास्य के लिये एक अनिवार्य दशा है। हास्य की परम्परा शाश्वत है और इसलिये हास्य अब मनुष्य के लिये प्रेरित अवसर ही नहीं, बल्कि स्वजन्य स्वभाव है।

हास्य की प्रकृति :—हास्य की सृष्टि के लिये दो आवश्यक तत्वों की उपस्थिति अनिवार्य है; एक तो हास्य का कर्त्ता, (Subject) जिसके भीतर हास्य की प्रेरणा उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त हास्य की प्रेरणा को उत्पन्न करने के लिये किसी सामग्री या वस्तु (Object) का होना भी उसी प्रकार आवश्यक है। जब दर्शक नाटक में विदूषक को देख कर हँसते हैं तो दर्शक हास्य के कर्त्ता हैं और विदूषक हास्य का कर्म, (Object) है। हास्य के कर्त्ता और कर्म दोनों ही हास्य के आकार, क्षेत्र तथा पूरी प्रकृति को प्रभावित करते हैं हास्य की एक ही सामग्री

किसी कर्त्ता को मुस्कराने के लिये विवश करती है, किसी कर्त्ता को खिलखिला देती है, किसी कर्त्ता के लिये वही इतनी गाढ़ी होती है कि वह हँसी में फूट पड़ता है और कोई कर्त्ता ऐसा भी हो सकता है, जिस पर उस सामग्री का कोई भी प्रभाव ही न पड़े। एक बार मणिकर्णिका घाट पर एक शव का दहन हो रहा था, वहाँ पर शव के सम्बन्धी बिलख रहे थे। करुणा का अन्तिम तथा उग्रतम रूप वर्त्तमान था। एक वृद्ध सन्यासी भी वहीं पर था—जटाधारी, श्वेत वेश, तिलक और हाथ में माला आदि। घाट पर से चित्रपट के विज्ञापन के लिये कोई टोली निकली, जिसमें कोई व्यक्ति वेश्या के वेश में नृत्य कर रहा था। सन्यासी की दृष्टि ज्यों ही नृत्य-संलग्न वेश्या पर पड़ी, हाथों में कमण्डल और माला धारण किये ही वह भी वेश्या के साथ मिलकर नाचने लगा। घाट पर उपस्थित अधिकांश लोग खिलखिला पड़े, लेकिन मृत व्यक्ति की माता का क्रन्दन न रुक सका; मैंने देखा उसी के साथ अन्य रोने वाली स्त्रियों के चेहरे पर आँसू के धार के साथ ही मुस्कान की छिपी और अस्पष्ट रेखा भी दौड़ गई और इस दृश्य में बीभत्स रस की झांकी हुई। सन्यासी को देखकर कुछ लोगों के हृदय में क्षोभ, क्रोध और घृणा का भी जन्म हुआ। हास्य की सामग्री या उसका कर्म तो सन्यासी ही था, किन्तु कर्त्ता अनेक थे और भिन्न-भिन्न प्रभाव था प्रत्येक कर्त्ता के हृदय पर, क्योंकि कर्त्ता स्वयं भिन्न-भिन्न वस्तुगत तथा व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधीन थे। हास्य वस्तुतः एक मानवीय प्रतिक्रिया (reaction) है, जिसकी उत्पत्ति के लिये प्रेरणा या उत्तेजना (Stimulus) का होना आवश्यक है और प्रतिक्रिया तथा उत्तेजना दोनों एक दूसरे की प्रकृति को निर्धारित करती हैं।

हास्य का वर्गीकरणः—हास्य को रूप, आकार, सामग्री की प्रकृति, प्रयोग की प्रकृति, प्रभाव के क्षेत्र तथा प्रभाव की सीमा आदि आधारों पर कई प्रकार के वर्गों में विभाजित किया जा सकता

है। प्रहसन, उपहास, अट्टहास, विनोद, चुटकुला, व्यङ्ग आदि हास्य के रूप हैं। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामुहिक जीवन तक इसके प्रयोग सम्भव हैं। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयोग होने के कारण हास्य के प्रकार वैयक्तिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, शिक्षा-सम्बन्धी, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि हो सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में व्यङ्ग-चित्र, व्यङ्गोक्तियाँ तथा हास्य प्रधान लेख छपते हैं, जिनका प्रयोजन पाठक के मानसिक बोझे को हल्का करना होता है। भिन्न भिन्न देशों में भी हास्य की अपनी विशेषतायें होती हैं। भारतीय हास्य के रूपों में लिंग-प्रधानता होती है। व्यवहार, साहित्य तथा सांस्कृतिक प्रयोगों में अधिकांश हास्य को लिंग-भावना ही प्रेरित करती है। अंग्रेज अपने हास्य में बुद्धि-प्रधान होते हैं, प्रायः उनकी हास्योन्मुख अभिव्यक्तियों में वैयक्तिक प्रतिभा तथा बुद्धि-सौजन्य का प्रकाश होता है। अमेरिका के लोग सामान्यतः भाव-प्रधान हास्य के प्रेमी होते हैं। रूसी हास्य में इतनी नीरसता होती है, कि संसार के अन्य देशों के निवासी इससे प्रभावित कम हो सकते हैं। आदर्श हास्य का मानदण्ड उसकी पूर्ण हानिरहितता तथा उसके उद्देश्य की पवित्रता है। जब कोई व्यक्ति अचानक फिसल जाता है, तो हमें हँसी आ जाती है; इस हास्यजनक परिस्थिति को उत्पन्न करने की मंशा न तो गिरने वाले व्यक्ति के हृदय में थी और न तो दर्शक के हृदय में ही। ऐसे हास्य को स्वयं होने वाला या स्वाभाविक समझा जा सकता है, किन्तु चित्रपट पर जब गोप, याकूब या आगा आते हैं, तो उनके द्वारा जिस हास्य की सृष्टि की जाती है, वह संयोजित तथा अभिप्रायपूर्ण रहती है। हास्य की सामग्री स्वयं भी उपस्थित हो सकती है और उसे विशेष प्रेरणा तथा प्रयोजन से नियत भी किया जाता है और इस दशा से हास्य की प्रकृति बदल भी सकती है।
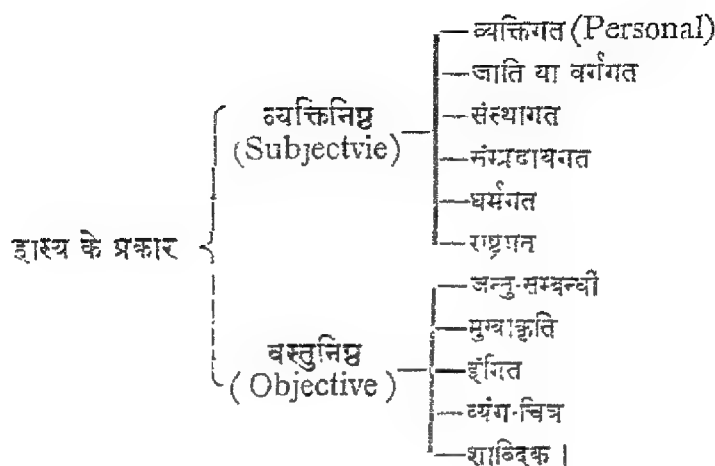
व्यक्तिनिष्ठ हास्यः—जिस हास्य में व्यक्ति को व्यक्तिगत या सामूहिक प्रकार से हास्य की सामग्री बनाया जाय, उसे व्यक्तिनिष्ठ हास्य कहते हैं। इस हास्य का प्रत्यक्ष प्रयोग अत्यन्त ही कलह-जनक सिद्ध होता है। 'हँसी में ठट्ठा' एक प्रचलित कहावत है और इसका प्रादुर्भाव केवल व्यक्तिनिष्ठ हास्य में ही संभव है। विचारकों ने हास्य के मौलिक आधार में दूसरों के प्रति हीनता तथा अपने प्रति महानता के भाव को प्रधान माना है और ऐसा समझा जाता है कि अपनी महानता का अनुभव तथा प्रकाश व्यक्ति तभी कर सकता है जब कि उसके सापेक्ष मूल्य भी वर्त्तमान हो। एक व्यक्ति की महानता के लिये दूसरे व्यक्ति में हीनता का रहना अनिवार्य है, और यही व्यक्तिनिष्ठ हास्य-प्रयोगों की सार्थकता के पक्ष में तर्क है। व्यक्ति अपनी 'महानता' की स्थापना किसी दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रहार बिना किये भी कर सकता है, वास्तव में व्यक्तित्व का वास्तविक विकास सृजन से होना चाहिये, न कि ध्वंस से।

व्यक्तिगत हास्य को यथासंभव निर्दोष तथा मानव-मंगल-मूलक होना चाहिये। भारतेन्दु युग की हास्य-साधना में सुधार-भावना संलग्न है।

एक गृहस्थ को सात-आठ लड़के थे, एक आदमी से उसने कहा "मेरी किस्मत कुछ ऐसी फिरी है कि मुझसे एक रुपया भी नहीं पैदा होता।" वह आदमी बोला "चार लड़के तुमने कैसे पैदा किये।"

"एक भले आदमी ने किसी हकीम से पूछा सुँघनी से दिमाग को कुछ नुकसान तो नहीं पहुँचता? हकीम ने जवाब दिया हरगिज नहीं क्योंकि जिसको कुछ भी दिमाग है वे सुँघनी सूँघते ही नहीं।"

इन चुटकुलों में सुधार का उद्देश्य है और व्यक्तिगत आक्षेप रहते हुये भी नेक राय के रूप में उपस्थित किये गये हैं, किन्तु इसी स्थान पर यदि व्यक्तिगत विनोद का निम्नलिखित रूप अपनाया जाय, तो वह अनावश्यक विग्रह का कारण भी बन सकता है;

एक आदमी लिफ़ाफ़ा साटने के लिये पानी ढूँढ़ रहा था दूसरे आदमी ने कहा तुम्हारे मुँह में थूक है क्यों नहीं उससे साट लेते तब उसने कहा क्या तुम्हारे मुँह में पेशाब है!

जाति या वर्गगत हास्य:—व्यक्तिगत सीमाओं को लाँघने पर परिवार पीढ़ी या वर्ग और जाति को हास्य का कर्म (object) बनाया जाता है। जातिगत हास्यों की प्रेरणा विशेष जाति की विशेष प्रवृत्तियों से ली जाती है। इसका आधार जाति की महानता में विश्वास होता है। जिस प्रकार व्यक्तिगत हास्य का उद्देश्य व्यक्ति की महानता को साकार करना होता है, उसी प्रकार जातीय या वर्गीय हास्य के मूल में जातीय गौरव को प्रतिष्ठित करना तथा इस उद्देश्य-सिद्धि के लिये अन्य जातियों को नीचा दिखाना होता है। वर्गगत हास्य में सुधारात्मक मूल्य अति क्षीण होता है।

एक वकील ने किसी गवाह से चिढ़कर कहा "तुम्हारे चिहरे से

साफ बदमाश की सूरत झलकती थी।" गवाह ने जवाब दिया, "मुझे आज तक खबर न थी कि मेरा चिहरा आयना है!"

हलवाई भागा दुकान तज,
दारोगा बेमान गिरे।
चौबेजी की वह डकार सुन,
अच्छे खासे ज्वान गिरे (पृष्ठ ५५)
बाभन कुल के हैं कलङ्क
धिक्कार तुम्हारी वाणी पर (पृष्ठ ६०)
(चूनाघाटी, श्रीयुत चोंच)

संस्था तथा सम्प्रदायगत हास्य:—व्यक्तियों के समूह विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित होकर 'संस्था' या 'सम्प्रदाय' आदि रूपों में संस्थापित होते हैं। प्राकृतिक नियम है कि जब कोई विचार रूढ़िवत हो जाता है, तो उसके विरुद्ध विद्रोह होता है और नवीन मान्यताओं के द्वारा उसे नया रूप देने की चेष्टा की जाती है। संस्थायें और सम्प्रदाय भी रूढ़ियों के बन्धन से हास्यास्पद हो जाते हैं तथा इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हिन्दी-साहित्य की परम्पराओं में भरी पड़ी हैं; 'आर्यसमाजी श्वसुर' में मोहनलाल गुप्त लिखते हैं—

"मेरे ससुर जेलर हैं। हैं तो नहीं, रह चुके हैं पर जीवन में एक बार जो जेलर हुआ, वह हमेशा के लिये जेलर रह जाता है।"
प्रातःकाल उठना आर्य-समाजी के लिये महान आदर्श है, इसलिये जब आर्य-समाजी श्वसुर पाँच बजे दामाद को उठाते हैं तो दामाद अपने अनुभव बताता है—

"ठीक ५ बजे किसी ने जगाया। पहले कन्धा पकड़कर झकझोरा तो मुझे ऐसा लगा कि कोई अहीर बाला मथनी के स्थान पर मुझे कुंडा में खड़ा कर दूध बिलो रही है। मैंने आँख नहीं खोली।....

मालूम हुआ कि भूकम्प आया है और कोई यक्ष मेरी पलंग उड़ाकर अफगानिस्तान की ओर लिये जा रहा है।" (मखमली जूती, पृष्ठ १०) धर्मगत हास्य का उदाहरण इसी पुस्तक में संकलित सामग्री में पृष्ठ २० पर है।

राय खिझोधर लाल से एक मुसलमान ने कहा "खाने या पूजा के समय हिन्दू लोग पैर धोते हैं। पर हम लोग सिर धोते हैं।" राय साहिब ने जवाब दिया कि "हिन्दू बनाये गये थे, तब आस्मान से सीधे फेंके गये थे, और आप लोग सिर के बल फेंके गये थे, इससे जिसको जहाँ कीचड़ लगा था, अब वह जाति वहीं अंग धोती है।"

भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र ने 'पाँचवें पैगम्बर' में लिखा है—

"लोगों दौड़ो, मैं पाँचवा पैगम्बर हूँ, दाऊ, ईसा, मूसा, मुहम्मद ये चार हो चुके मेरा नाम चूसा पैगम्बर है, मैं विधवा के गर्भ से जन्मा हूँ और ईश्वर अर्थात् खुदा की ओर से तुम्हारे पास आया हूं इसे मुझ पर ईमान लाओ नहीं तो ईश्वर के कोप में पड़ोगे।"

राष्ट्रगत हास्यः—राष्ट्रीय विशेषताओं और विषमताओं का भी हास्य के भीतर समावेश किया जाता है। राष्ट्रीय आधारों पर जिन हास्यों की सृष्टि होती है, उन पर राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों की गहरी छाप होती है। भारतेन्दु युग के हास्य की सबसे बड़ी प्रतिभा उसमें अन्तर्निहित स्वराष्ट्र-प्रेम तथा विदेशी साम्राज्यवादी राष्ट्र के प्रति विद्रोह है। भारतेंदु ने अंग्रेज-स्तोत्र में अंग्रेजी साम्राज्यवाद का हास्य किया है,

"चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनों भुजा है अमेल तुम्हारे नख हैं अन्धेर तुम्हारा पृष्ठ है और आमदनी तुम्हारा हृदय है, अतएव हे अँगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेवा तुम्हारा चरण है, खिताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव हे विराटरूप अँगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

विलायती सभ्यता के प्रति प्रेम की मखौल उड़ाते हुये श्री बेढ़ब बनारसी 'उपहार' में (१०६ पृ०) पर लिखते हैं;

"विलायत से हो आने का महत्व आज वही है, जो सौ साल पहले बदरीनाथ, काशी या मक्का हो आने का था।........"

"जैसे खराद पर चढ़ाने से बरतन पर चमक आ जाती है, जैसे कपड़ा धोने के बाद लोहा करने से उसमें एक चमक आ जाती है, जैसे कचौड़ी को एक बार सेंकने के पश्चात् फिर सेकने से उसमें कुरकुरापन आ जाता है, उसी प्रकार सब कुछ पढ़-लिख लेने के बाद लन्दन जाकर लौट आने से रौनक आ जाती है।...."

दाँव-पेंच (पृष्ठ ७२) में एक नये राष्ट्र 'नापाकिस्तान' की कल्पना ललितकुमार सिंह 'नटवर' इन वाक्यों में करते हैं;

"संसार में जितने दुखी, असहाय, पीड़ित और कमजोर जीव हैं—चाहे वे दो पाये हो या चौपाये—सबों का संगठन करने के लिये एक अलग इस्तान 'नापाकिस्तान' के नाम से कायम हो, जो बलवानों के 'पाकिस्तान' से एकदम दूर रहे।...."

इसके लिये गधों की सभा में प्रस्ताव उपस्थित किया गया,

"....अन्त में मैं मनुष्यों को चेतावनी देती हूँ कि वे आपस में गधा कहने की आदत से बाज आवें। इससे हमारे समाज का अपमान होता है।"....*गर्दभ नेताओं के आशीर्वचनों के बाद सभी गधे-गधियों ने दुम उठाकर और कान खड़ेकर सभापति के प्रस्तावों (नापाकिस्तान की स्थापना) को स्वीकार किया।*

वस्तुनिष्ठ हास्यः—व्यक्तिनिष्ठ हास्य-प्रयोगों में हास्य की मौलिक आवश्यकताओं की साधना सरल है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति, जाति, वर्ग, वर्ण, लिंग, समुदाय, सम्प्रदाय, धर्म या राष्ट्र को दूसरे की तुलना में उत्तम या अधम समझ सकना या नियत करना तो स्वाभाविक भी

है और संभव भी, किन्तु वस्तु को हास्य की सामग्री बनाना साधारण बुद्धि की सीमा से परे है। वस्तुनिष्ठ हास्य भी स्वजन्य या प्रेरित हो सकते हैं। जन्तुओं के द्वारा उत्पन्न हास्य भी अत्यन्त ही मनोरंजक तथा साथ ही हानिरहित होता है। यदि हम जन्तुओं में कुछ ऐसे गुण सहसा पाते हैं, जिनके विषय में हमारी बिल्कुल ही कल्पना नहीं थी, तो हम हास्य के प्रभाव से अपने को बचा नहीं सकते। सर्कस के बंदरों को साइकिल चलाते देख, घोड़े पर कुत्ते की सवारी देखकर हमारी हास्य प्रवृत्ति उत्तेजित हो जाती है। बच्चों के लिये उपदेश-मूलक कहानियाँ लिखी गई हैं जिनमें कहानियों के पात्र जन्तु बनाये जाते हैं। जन्तुओं की कहानी सुनने से बच्चे उसे शीघ्रता से ग्रहण करते हैं तथा साथ ही उनका मनोरंजन भी होता है। बिल्ली और कुत्ते प्रत्येक घर में बच्चों की क्रीड़ा के सर्वप्रथम साथी हैं।

विदूषक प्रायः अपनी मुखाकृतियों तथा शारीरिक इंगितों के द्वारा हास्य उत्पन्न करते हैं। कुछ लोगों का चेहरा इतना असंगत तथा संतुलनहीन रहता है, कि उन्हें देखकर हँसना पड़ता है, लेकिन हास्य का यह रूप व्यक्तिनिष्ठ हो जाता है। वास्तव में हास्य के ये रूप अत्यन्त ही प्रारम्भिक हैं। मानव-सभ्यता के विकास की अवस्थाओं के साथ क्रम से हास्य की अभिव्यक्तियों की भी उन्नति हुई है। प्रत्येक शरीर के प्रत्येक अंग के कार्य निश्चित होते हैं और प्रत्येक अंग से हम एक निश्चित प्रकार की कार्यावली की आशा करते हैं, यदि इस नियत क्रम से कोई नवीन, कौतूहलपूर्ण परिवर्त्तन होता है, तो वही परिवर्त्तन हास्य का विषय बन जाता है। कभी-कभी यदि एक ही कार्यावली की सतत पुनरावृत्ति की जाय, तो हास्य उत्पन्न होता है। संस्कृत के विद्यार्थियों द्वारा "रामः रामौ रामाः" को कंठस्थ करने की तपस्या हास्यास्पद ही हो जाती है। जब कोई व्यक्ति चलते-चलते या बैठे-बैठे अचानक गिर पड़ता है, तो आप हँस पड़ते हैं और यह हँसी उस व्यक्ति से उत्पन्न नहीं होती

बल्कि हँसी की सामग्री उसके *गिरने की अद्भुत क्रिया* है। मुखाकृति या इंगितों में जब भी कोई नवीन, विषम, अद्भुत, कौतूहलपूर्ण, आकस्मिक तथा हानिरहित परिवर्त्तन होगा, तो मानव हृदय में हास्य के लिये वह उपकरण बन जायगा। नाटकों में तथा चित्रपटों पर पात्र इस विधि द्वारा हास्य का प्रायः सृजन किया करते हैं। नारद-मोह में उनकी मुखाकृति ही हास्य की सामग्री है।

व्यंग चित्रः—व्यंग-चित्रों का प्रचलन इस युग में समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं के द्वारा अत्यन्त अधिक हुआ है। व्यङ्ग-चित्र के विषय भी सामयिक व्यक्ति, जाति, प्रथा, नेता या राष्ट्रीय दृष्टिकोण आदि होते हैं। व्यङ्ग-चित्र व्यक्तिनिष्ठ होते हुये भी इतने प्राञ्जल तथा विकसित होते हैं कि जिन व्यक्तियों को व्यङ्ग-चित्र का कर्म (object) बनाया जाता है, वे भी स्वयं इसे प्रत्यक्ष या सीधा प्रहार नहीं मानते। हास्य विनोद के लेखक प्रायः चित्रकारों के समीप अपना फोटो ले जाते हैं और निवेदन करते हैं कि उनका व्यङ्ग-चित्र बनाया जाय और इन व्यङ्ग-चित्रों से वे अपनी बुद्धि के आकार में विस्तार तथा रूप में अलङ्करण करते हैं। मनुष्य के रूप, आचरण, विचार आदि में यदि जिह्वा या लेखनी द्वारा विषमता प्रदर्शित की जाती है, तो वह तिलमिला जाता है; परन्तु यदि वे ही भाव चित्रों के द्वारा उपस्थित किये जाँय, तो आघात की प्रबलता या प्रखरता क्षीण होने लगती है। 'शंकर्स वीकली' में एक राजनीतिक नेता का व्यङ्ग-चित्र निकला था, जिसमें सामान्य दृष्टिकोण से उनकी तीव्र आलोचना की गई थी; किन्तु अपना व्यङ्ग-चित्र देखकर वे स्वयं हँस पड़े। व्यङ्ग चित्रों में शिष्ट समाज के लिये हास्य का रूप ग्राह्य तथा निष्काम हो जाता है।

व्यङ्ग-चित्रों में राजनीतिक दाँव पेंच को दिखाना पत्र-पत्रिकाओं

का दैनिक कार्यक्रम-सा हो गया है। एक व्यङ्ग-चित्र में स्टालिन सप्रेम चर्चिल की ओर सिगार बढ़ा रहे हैं और चर्चिल का एक हाथ तो सिगार की ओर बढ़ रहा है किन्तु दूसरी ओर वे अपना मुख आइसन हावर की दिशा में करके प्रश्न कर रहे हैं, 'क्या मैं यह सिगार ग्रहण कर सकता हूँ?' दूसरे व्यङ्ग-चित्र में चीन के राष्ट्र का एक हाथी के रूप मे चित्रित किया गया। हाथी के शरीर पर *लाल चीन* लिखा है और उसकी पूँछ पर *राष्ट्रीय चीन*। आइसन हावर साहब हाथी की पूँछ पकड़ कर चिल्ला रहे हैं, 'हाथी यही है।' तीसरे व्यङ्ग चित्र में पाकिस्तानी सरकार को एक *अधेड़ महिला* के रूप में चित्रित किया गया और पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान को तीन चार साल के बच्चों के रूप में; बच्चे माँ के स्तन से दूध पीने के लिये चिल्ला रहे हैं, किन्तु माँ एक दूसरे युवक बच्चे की ओर अपना स्तन बढ़ा रही है। यह युवक बच्चा पुर्त्तगाल का प्रतीक है। इस प्रकार के व्यङ्ग-चित्रों से राजनीतिक वैषम्य का चित्रण कर उच्चकोटि का हास्य उत्पन्न किया जाता है।

शाब्दिक हास्य :—शब्द मानव-कल्पनाओं, भावनाओ तथा विचारों के मूर्त्त रूप है। इनमें प्रधानतः तीन शक्तियाँ—अभिधा, लक्षणा तथा व्यञ्जना अन्तर्निहित होती है। शब्दों के प्रयोग में इन तीन शक्तियों के मेल या विषमता से सहज हास्य जन्म लेता है। 'तोंद' शब्द की शक्तियों पर बेढ़क का हास्य-प्रयोग देखिये:—

"बिना राजा के राज्य हो सकता है, बिना मूँछ के आदमी हो सकता है, बिना रुपये के बङ्क हो सकता है, बिना कुछ जाने सम्पादक हो सकता है, बिना प्रेम के विवाह हो सकता है और बिना अधिकार के स्वराज्य हो सकता है *परन्तु बिना तोंद के कोई महाजन आपने देखा है? अगर तोंद नहीं तो महाजन नहीं है।*—आशा है

अगली असेम्बली में कोई देश-हितैषी सज्जन 'तोंद प्रोटेक्शन बिल' पेश करेंगे। *तोंद राष्ट्र की सम्पत्ति है, देश का सहारा है।"*

पृष्ठ ५० में 'बारी नाइयों' मे 'बारी' शब्द के कई अर्थ किये गये हैं जिससे कई प्रश्नो का उत्तर एक ही साथ प्रकट हो जाता है। पृष्ठ ४१ पर 'बड़ा मसखरा' में शब्द के अर्थ की भिन्न शक्तियों के उपयोग से हास्य का आयोजन है। पृष्ठ ३८ पर 'बार-बार' शब्द के कई अर्थ स्वानुभूति पर आधारित बीरबल, राजा टोडरमल, मुल्ला फैजो, नव्वाब खानखानान के द्वारा उपस्थित किये गये हैं। शाब्दिक हास्य में अलंकारो का विधान होता है। शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ से, भिन्न भिन्न अर्थ के शब्दो के समान उच्चारण से, शब्दों की अभिधा, व्यञ्जना और लक्षणा शक्तियों से, भिन्न-भिन्न वाक्य-विन्यास तथा शब्दों को बाह्य और आन्तरिक प्रेरणा से हास्य के विविध रूपों को अनुप्राणित किया जाता है।

हिन्दी की हास्य-परंपरा

हिन्दी-साहित्य के विकास के साथ ही साथ हास्य के प्रयोगों की अवस्थायें भी विकसित हुई हैं। वीरगाथा काल में वीर रस प्रधान था और शृंगार रस सहचर। वीरत्व का प्रदर्शन तथा आभास दोनों ही हीनता और श्रेष्ठता के संतुलन पर आश्रित है, एतदर्थ वीरगाथा-काल के गायक कवियों ने अपने नायक की महानता की स्थापना के लिये विरोधी नायकों की हीनता को तीव्र बनाया है और पूरे के पूरे काव्य मे केवल उन्हीं स्थलों पर हास्य की झलक दीख जाती है। भक्ति-काल मे कबीर की खरी-खोटी आलोचनायें हास्य ही नहीं व्यंग, और कटाक्ष की भी पैनी उक्तियाँ हैं। तुलसी और सूर के हास्य में शिष्टता तथा धर्म-भावना श्रद्धा की लहर उत्पन्न करती हैं। रीतिकालीन हास्य का आधार तो लिंग-भावना ही हो सकती थी; इस युग में साहित्य के क्षेत्र में समस्त प्रयोगों का आधार नायिका के सौन्दर्य-वर्णन की स्पर्धा तक

सीमित था। वीरबल और अकबर के हास्य-प्रधान चुटकुले भारतीय जनता के मनोरंजन के अच्छे साधन समझे जाते हैं। हिन्दी गद्य साहित्य के साथ ही साथ हास्य का भी नवीन आवरण में उदय हुआ और इसलिए भारतेन्दु को 'आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता' के साथ ही यदि 'नवीन हास्य का जनक' भी कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। भारतेन्दु के बाद व्यंग, हास्य, उपहास, परिहास के कई लेखक हैं, जिन्होंने इस दिशा में पूर्ण या आंशिक प्रयत्न किये हैं। प्रेमचन्द्र, निराला, पं० बदरीनाथ भट्ट, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', अन्नपूर्णानन्द, शिवपूजन सहाय, हरिशंकर शर्मा 'बचनेश', यशपाल, 'बेढब' बनारसी श्री नारायण चतुर्वेदी, 'बेधड़क', शारदा प्रसाद 'भुशुंडि', कृपाशंकर श्रीवास्तव, अमृतलाल नागर, कौतुक बनारसी, सरयू पण्डा गौड़, केशव चन्द्र वर्मा, वंशीधर शुक्ल, 'देहाती', रमई काका, राधाकृष्ण, जी. पी. श्रीवास्तव, उमादत्त सारस्वत 'दत्त' तथा विन्ध्याचल गुप्त आदि हैं। इनके हास्य-प्रयोगों के तुलनात्मक मूल्यांकन से साहित्यिक प्रयासों की दिशायें निश्चित होंगी तथा ऐतिहासिक कर्त्तव्य की भूमिका बन सकेगी।

भारतेंदुकालीन हास्य की विशेषतायें

भारतेन्दु-युग में उनके साथ ही बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं० बद्री नारायण चौधरी "प्रेमघन", पं० प्रतापनारायण मिश्र, पं० बाल कृष्ण भट्ट, श्री ब्रजमोहन कूल, शुक्राचार्य, श्री राधाचरण गोस्वामी आदि भी साहित्य-साधना में संलग्न थे और उन लोगों ने हास्य के उदय में सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण योग दिया है। इस काल के रहस्य की विशेषताओं पर युग की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का गहरा छाप है। तत्कालीन भारत विदेशी साम्राज्यवाद के चंगुल में फँसता जा रहा था और भारतेन्दु-कालीन प्रत्येक साहित्य-साधक किसी न किसी रूप में विदेशी शासन का विरोध करता था।

भारत दुर्दशा' और 'अन्धेर नगरी' में भारतेन्दु ने स्वयं इस चेतना की ओर ध्यान को प्रेरित किया। अंग्रेजों पर व्यंग करते हुये भारतेन्दु जी लिखते हैं।

"हे श्वेतकांत—तुम्हारा अमल धवल द्विरद रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुख मंडल देख करके हमें वासना हुई कि हम तुम्हारा स्तव करैं, अतएव हे अगरेज! हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

........तुम नृसिंह हो क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनोंपन तुममें है। टैक्स तुम्हारा क्रोध है और परम विचित्र हो........

अंग्रेजी-शासन भारत में केवल पिट्ठुओं तथा दलालों पर आश्रित था, जो अपनी निजी ख्याति तथा लोभ के लिये राष्ट्रीय हितों को तिलांजली दे रहे थे, जिन्हें अपनी मातृभूमि से, उसकी संस्कृति से, उसके विचार-दर्शन से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था और वे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए चाटुकारिता-वृत्ति अपना चुके थे। भारतेंदु इनकी मखौल उड़ाते हैं,

"हे सर्वद! हमको धन दो, मान दो, यश दो, हमारी सब वासना सिद्ध करो, हमको चाकरी दो, राजा करो, रायबहादुर करो, कौंसिल का मिंबर करो हम तुमको प्रणाम करते हैं........

हे सौम्य! हम वही करेंगे जो तुमको अभिमत है, हम बूट पतलून पहिरेंगे, नाक पर चश्मा देंगे, काँटा और चिमचे से टिबिल पर खायेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

भारत में आलस्य और प्रमाद का साम्राज्य था, लोगों में मिथ्या-भिमान और अहंकार ने घर कर लिया। पारस्परिक कलह की ज्वाला में लोग जल रहे थे, क्योंकि स्वजन-प्रेम राष्ट्रीय गौरव के अभाव में सम्भव ही नहीं होता। 'भारत दुर्दशा' में भारतेन्दु इसे चित्रित करते हैं।

आलस्य—'एक बारी में पहले दो चेले लेटे थे और उसी राह से एक सवार जाता था। पहिले ने पुकारा—भाई सवार! यह पक्का आम टपक कर मेरी छाती पर पड़ा है जरा मेरे मुँह में डाल दो—सवार ने कहा—'अजी तुम बड़े आलसी हो। तुम्हारी छाती पर आम पड़ा है, सिर्फ हाथ से उठाकर मुँह में डालने में आलस है। दूसरा बोला—ठीक है साहब! यह बड़ा ही आलसी है। रात भर कुत्ता मेरा मुँह चाटा किया और यह पास ही पड़ा था, पर इसने न हाँका।"

'बुढ़े मुँह मुँहाँ से लोग! देखे!! तमासे!!!' प्रहसन में श्री राधाचरण गोस्वामी साठ साल के सेठ नारायण दास का चरित्र उनकी रखेली मिताबी से कहलाते है, क्योंकि सेठ एक मुसलमान स्त्री के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं।

"थू थू! मुसलमान के घर में आ करके तो उलटो होय है। थू थू! मुर्गा के पङ्ख, प्याज के छिलका! छिः छिः! पर क्या कहूँ लाला जाने कब ये पाप छोड़ेंगे। इतने बूढ़े हो गये पर अब तक मन में ज्वान पट्ठा ही बने है। आज तीन बरस से नौकरी करूँ हूँ इतने दिन में कितने भले घर की बहू-बेटी, राँड़, सुहागन मैंने खराब करी...."

तत्कालीन भारतीय जनता की हीन मनोवृत्ति को अत्यन्त नग्न रूप में भारतेन्दु ने शब्द-बद्ध किया है;

मिल जाय हिन्द खाक में हम काहिलों को क्या।
ए मीरे फर्श रंज उठाना नहीं अच्छा।

धर्म के क्षेत्र में बाह्याडम्बर, सामाजिक सम्बन्धों में अविश्वास, राजनीतिक दशा में दास-प्रवृति 'कोई हो नृप हमें का हानी' चेरी छोड़ न होइब रानी।', शिक्षा में विदेशीपन आदि साहित्यिक प्रतिभा के अनुकूल न थे और इसलिये भारतेन्दु युग के लेखकों को अपने

व्यङ्ग, हास, प्रहसन, निबन्धों द्वारा इन अर्थ-सामाजिक (Socio-economic) दुर्व्यवस्थाओं से तीव्र सङ्घर्ष करना पड़ा है। *'जयनार सिंह'* प्रहसन की भूमिका में लेखक पं० देवकी नन्दन त्रिपाठी अत्यन्त स्पष्टता से मुखपृष्ठ पर ही अपने प्रहसन के गुण—

"नौतिहा प्रकाश प्रहसन, वञ्चक विश्वास निदर्शन, भारत निराश निराकरण"

बतलाते हैं; उनके उद्देश्य की पवित्र उत्कटता उन्हीं के शब्दों मे प्रकट हो जाती है,

"इस प्रहसन के बनाने और छपाने का एतना ही प्रयोजन है कि नौतिहा (ओझा) आदि वञ्चनों की धूर्त्तता और जो लोग उन पर विश्वास करके वैद्यक-शास्त्र को तुच्छ समझते है, उनकी अज्ञानता का प्रकाश होवे।"

पं० प्रताप नारायण जी मिश्र ने 'जुआरी-खुआरी प्रहसन'; कलि प्रभाव, 'त्रप्यन्ताम' आदि मे सामाजिक कुरीतियों की धज्जियाँ उड़ाने का सफल प्रयास किया है। 'कचहरी' को जीवित नरक की कल्पना करने वाले मिश्र जी उसे 'कच' अर्थात् बालों को भी 'हरी' अर्थात् हर लेने वाली बिभीषिका बतलाते हैं। कचहरी की यह व्याख्या आज हमारे लिये भी उसी प्रकार कटु सत्य बनी हुई है। राधाचरण गोस्वामी के प्रहसन राष्ट्र-प्रेम तथा समाज-सुधार की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। बाल कृष्ण भट्ट ने अपने निबन्धों, नाटकों, लेखों, चुटकुलों आदि से पराधीनता जन्महीन प्रवृत्तियों पर मार्मिक प्रहार किया है। भारतेन्दु-युग के लेखक, कवि, नाटककार, हास्य लेखक, आलोचक सभी युग की सबसे बड़ी आवश्यकता—सुधार को अपनी कृतियों का आधार बनाते हैं और इसीलिये स्वयं भारतेन्दु के व्यापक व्यक्तित्व में—उनके कवि, कथाकार, नाटककार, प्रहसन-लेखक, पत्रकार—में वर्त्तमान की करुण विडम्बना के प्रति विद्रोह तथा

भविष्य में सुधार की आशा के प्रति सङ्केत मिलता है। भारतेन्दु ने वस्तुतः हिन्दी-साहित्य को ही जन्म नहीं दिया, उन्होंने भारत की राजनीतिक चेतना का भी श्री गणेश किया और इस चेतना को जागृत करने के लिये उनके पास हास्य, व्यङ्ग, प्रहसन आदि ही साधन थे, अस्त्र थे और इसलिये अभिव्यक्ति की ये साधनाये उस युग के साहित्यिकों के लिये साध्य बन गईं।

कुछ आलोचकों का मत है कि भारतेन्दु-युग का प्राण आनन्द की पूजा से तन्मय है। जीवन चाहे किसी भी परिस्थिति में कितना ही त्रस्त क्यों न हो—लेकिन आनन्द से उसके पूर्ण वियोग की अवस्था को मृत्यु की ही संज्ञा दी जा सकेगी। भारतेन्दु-युग की साहित्यिक कृतियों में जीवन के प्रति जो सजीव स्पन्दन है, आनन्द की आत्मा में जो उत्कट प्रवेश है, 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' की साधना में जो अद्वितीय इच्छा-शक्ति है, उसका अभाव किसी भी रोग-ग्रस्त युग को निष्प्राण बना सकता है। हमारे वर्त्तमान साहित्यिकों का यह परम एवं चरम कर्त्तव्य है कि वे जीवन की इस आस्था को पुनरानु प्राणित करें। हास्य का आनन्द निष्कलङ्क और मङ्गल-मूलक है और उसकी साधना का प्रारम्भ तथा अन्त दोनों इस शाश्वत उद्देश्य की सीमा में पल्लवित हों।

शान्त्यालय
बी० ७।११७ बागहरा
वाराणसी
१५ नवम्बर १९५६

कृष्णमोहन गुप्त
एम. एस सी., एल एल. बी., साहित्य रत्न
व्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय
एम० ए०

'भारत दुर्दशा' और 'अन्धेर नगरी' में भारतेन्दु ने स्वयं इस चेतना की ओर ध्यान को प्रेरित किया। अंग्रेजों पर व्यंग करते हुये भारतेन्दु जी लिखते हैं।

"हे श्वेतकांत—तुम्हारा अमल धवल द्विरद रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुख मंडल देख करके हमें वासना हुई कि हम तुम्हारा स्तव करैं, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

........तुम नृसिंह हो क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनोंपन तुममें है। टैक्स तुम्हारा क्रोध है और परम विचित्र हो........

अंग्रेजी-शासन भारत में केवल पिट्ठुओं तथा दलालों पर आश्रित था, जो अपनी निजी ख्याति तथा लोभ के लिये राष्ट्रीय हितों को तिलांजली दे रहे थे, जिन्हें अपनी मातृभूमि से, उसकी संस्कृति से, उसके विचार-दर्शन से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था और वे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए चाटुकारिता-वृत्ति अपना चुके थे। भारतेंदु इनकी मखौल उड़ाते हैं,

"हे सर्वद ! हमको धन दो, मान दो, यश दो, हमारी सब वासना सिद्ध करो, हमको चाकरी दो, राजा करो, रायबहादुर करो, कौंसिल का मिंबर करो हम तुमको प्रणाम करते हैं........

हे सौम्य ! हम वही करेंगे जो तुमको अभिमत है, हम बूट पतलून पहिरेंगे, नाक पर चश्मा देंगे, काँटा और चिमचे से टिबिल पर खायेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

भारत में आलस्य और प्रमाद का साम्राज्य था, लोगों में मिथ्याभिमान और अहंकार ने घर कर लिया। पारस्परिक कलह की ज्वाला में लोग जल रहे थे, क्योंकि स्वजन-प्रेम राष्ट्रीय गौरव के अभाव में सम्भव ही नहीं होता। 'भारत दुर्दशा' में भारतेन्दु इसे चित्रित करते हैं।

भविष्य में सुधार की आशा के प्रति सङ्केत मिलता है। भारतेन्दु ने वस्तुतः हिन्दी-साहित्य को ही जन्म नहीं दिया, उन्होंने भारत की राजनीतिक चेतना का भी श्री गणेश किया और इस चेतना को जाग्रत करने के लिये उनके पास हास्य, व्यङ्ग, प्रहसन आदि ही साधन थे, अस्त्र थे और इसलिये अभिव्यक्ति की ये साधनायें उस युग के साहित्यिकों के लिये साध्य बन गई।

कुछ आलोचकों का मत है कि भारतेन्दु-युग का प्राण आनन्द की पूजा से तन्मय है। जीवन चाहे किसी भी परिस्थिति में कितना ही त्रस्त क्यों न हो—लेकिन आनन्द से उसके पूर्ण वियोग की अवस्था को मृत्यु की ही संज्ञा दी जा सकेगी। भारतेन्दु-युग की साहित्यिक कृतियों में जीवन के प्रति जो सजीव स्पन्दन है, आनन्द की आत्मा में जो उत्कट प्रवेश है, 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' की साधना में जो अद्वितीय इच्छा-शक्ति है, उसका अभाव किसी भी रोग-ग्रस्त युग को निष्प्राण बना सकता है। हमारे वर्त्तमान साहित्यिकों का यह परम एवं चरम कर्त्तव्य है कि वे जीवन की इस आस्था को पुनरानुप्राणित करें। हास्य का आनन्द निष्कलङ्क और मङ्गल-मूलक है और उसकी साधना का प्रारम्भ तथा अन्त दोनों इस शाश्वत उद्देश्य की सीमा में पल्लवित हों।

शान्त्यालय
बी० ७।११७ बागहरा
वाराणसी
२५ नवम्बर १९५६

कृष्णमोहन गुप्त
एम. एस सी., एल एल. बी., साहित्य रत्न
ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय
एम० ए०

'भारत दुर्दशा' और 'अन्धेर नगरी' में भारतेन्दु ने स्वयं इस चेतना की ओर ध्यान को प्रेरित किया। अंग्रेजों पर व्यंग करते हुये भारतेन्दु जी लिखते हैं।

"हे श्वेतकांत—तुम्हारा अमल धवल द्विरद रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुख मंडल देख करके हमें वासना हुई कि हम तुम्हारा स्तव करें, अतएव हे अगरेज! हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

........तुम नृसिंह हो क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनोंपन तुममें है। टैक्स तुम्हारा क्रोध है और परम विचित्र हो........

अंग्रेजी-शासन भारत में केवल पिट्ठुओं तथा दलालों पर आश्रित था, जो अपनी निजी ख्याति तथा लोभ के लिये राष्ट्रीय हितों को तिलांजली दे रहे थे, जिन्हें अपनी मातृभूमि से, उसकी संस्कृति से, उसके विचार-दर्शन से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था और वे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए चाटुकारिता-वृत्ति अपना चुके थे। भारतेंदु इनकी मखौल उड़ाते हैं,

"हे सर्वद! हमको धन दो, मान दो, यश दो, हमारी सब वासना सिद्ध करो, हमको चाकरी दो, राजा करो, रायबहादुर करो, कौंसिल का मिंबर करो हम तुमको प्रणाम करते हैं........

हे सौम्य! हम वही करेंगे जो तुमको अभिमत है, हम बूट पतलून पहिरेंगे, नाक पर चश्मा देंगे, काँटा और चिमचे से टिबिल पर खायेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

भारत में आलस्य और प्रमाद का साम्राज्य था, लोगों में मिथ्या-भिमान और अहंकार ने घर कर लिया। पारस्परिक कलह की ज्वाला में लोग जल रहे थे, क्योंकि स्वजन-प्रेम राष्ट्रीय गौरव के अभाव में सम्भव ही नहीं होता। 'भारत दुर्दशा' में भारतेन्दु इसे चित्रित करते हैं।

आलस्य—'एक बारी में पहले दो चेले लेटे थे और उसी राह से एक सवार जाता था। पहिले ने पुकारा—भाई सवार! यह पका आम टपक कर मेरी छाती पर पड़ा है जरा मेरे मुँह में डाल दो—सवार ने कहा—'अजी तुम बड़े आलसी हो। तुम्हारी छाती पर आम पड़ा है, सिर्फ हाथ से उठाकर मुँह में डालने में आलस्य है। दूसरा बोला—ठीक है साहब! यह बड़ा ही आलसी है। रात भर कुत्ता मेरा मुँह चाटा किया और यह पास ही पड़ा था, पर इसने न हाँका।'"

'बुड़े मुँह मुँहाँ से लोग! देखे!! तमासे!!!' प्रहसन में श्री राधाचरण गोस्वामी साठ साल के सेठ नारायण दास का चरित्र उनकी रखेली सिताबी से कहलाते हैं, क्योंकि सेठ एक मुसलमान स्त्री के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं।

"थू थू! मुसलमान के घर में आ करके तो उलटो होय है। थू थू! मुर्गा के पङ्ख, प्याज के छिलका! छिः छिः! पर क्या कहूँ लाला जाने कब ये पाप छोड़ेंगे। इतने बूढ़े हो गये पर अब तक मन में ज्वान पट्ठा ही बने हैं। आज तीन बरस से नौकरी करूँ हूँ इतने दिन में कितने भले घर की बहू-बेटी, राँड़, सुहागन मैंने खराब करी...."

तत्कालीन भारतीय जनता की हीन मनोवृत्ति को अत्यन्त नग्न रूप में भारतेन्दु ने शब्द-बद्ध किया है;

मिल जाय हिन्द खाक में हम काहिलों को क्या।
ए मीरे फर्श रंज उठाना नहीं अच्छा।

धर्म के क्षेत्र में बाह्याडम्बर, सामाजिक सम्बन्धों में अविश्वास, राजनीतिक दशा मे दास-प्रवृत्ति 'कोई हो नृप हमें का हानी' चेरी छोड़ न होइब रानी।', शिक्षा में विदेशीपन आदि साहित्यिक प्रतिभा के अनुकूल न थे और इसलिये भारतेन्दु युग के लेखकों को अपने

व्यङ्ग, हास, प्रहसन, निबन्धों द्वारा इन अर्थ-सामाजिक (Socio-economic) दुर्व्यवस्थाओं से तीव्र सङ्घर्ष करना पड़ा है। *'जयनार सिंह'* प्रहसन की भूमिका में लेखक पं० देवकी नन्दन त्रिपाठी अत्यन्त स्पष्टता से मुखपृष्ठ पर ही अपने प्रहसन के गुण—

"नौतिहा प्रकाश प्रहसन, वञ्चक विश्वास निदर्शन, भारत निराश निराकरण"

बतलाते हैं; उनके उद्देश्य की पवित्र उत्कटता उन्हीं के शब्दों में प्रकट हो जाती है,

"इस प्रहसन के बनाने और छपाने का एतना ही प्रयोजन है कि नौतिहा (ओझा) आदि वञ्चनों की धूर्त्तता और जो लोग उन पर विश्वास करके वैद्यक-शास्त्र को तुच्छ समझते हैं, उनकी अज्ञानता का प्रकाश होवे।"

पं० प्रताप नारायण जी मिश्र ने 'जुआरी-खुआरी प्रहसन'; कलि प्रभाव, 'त्र्यप्यन्ताम' आदि में सामाजिक कुरीतियों की धज्जियाँ उड़ाने का सफल प्रयास किया है। 'कचहरी' को जीवित नरक की कल्पना करने वाले मिश्र जी उसे 'कच' अर्थात् बालों को भी 'हरी' अर्थात् हर लेने वाली विभीषिका बतलाते हैं। कचहरी की यह व्याख्या आज हमारे लिये भी उसी प्रकार कटु सत्य बनी हुई है। राधाचरण गोस्वामी के प्रहसन राष्ट्र-प्रेम तथा समाज-सुधार की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। बाल कृष्ण भट्ट ने अपने निबन्धों, नाटकों, लेखों, चुटकुलों आदि से पराधीनता जन्यहीन प्रवृत्तियों पर मार्मिक प्रहार किया है। भारतेन्दु-युग के लेखक, कवि, नाटककार, हास्य लेखक, आलोचक सभी युग की सबसे बड़ी आवश्यकता—सुधार को अपनी कृतियों का आधार बनाते हैं और इसीलिये स्वयं भारतेन्दु के व्यापक व्यक्तित्व मे—उनके कवि, कथाकार, नाटककार, प्रहसन-लेखक, पत्रकार—में वर्त्तमान की करुण विडम्बना के प्रति विद्रोह तथा

भविष्य में सुधार की आशा के प्रति सङ्केत मिलता है। भारतेन्दु ने वस्तुतः हिन्दी-साहित्य को ही जन्म नहीं दिया, उन्होंने भारत की राजनीतिक चेतना का भी श्री गणेश किया और इस चेतना को जागृत करने के लिये उनके पास हास्य, व्यङ्ग, प्रहसन आदि ही साधन थे, अस्त्र थे और इसलिये अभिव्यक्ति की ये साधनायें उस युग के साहित्यिकों के लिये साध्य बन गई।

कुछ आलोचकों का मत है कि भारतेन्दु-युग का प्राण आनन्द की पूजा से तन्मय है। जीवन चाहे किसी भी परिस्थिति में कितना ही त्रस्त क्यों न हो—लेकिन आनन्द से उसके पूर्ण वियोग की अवस्था को मृत्यु की ही संज्ञा दी जा सकेगी। भारतेन्दु-युग की साहित्यिक कृतियों में जीवन के प्रति जो सजीव स्पन्दन है, आनन्द की आत्मा में जो उत्कट प्रवेश है, 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' की साधना में जो अद्वितीय इच्छा-शक्ति है, उसका अभाव किसी भी रोग-ग्रस्त युग को निष्प्राण बना सकता है। हमारे वर्त्तमान साहित्यिकों का यह परम एवं चरम कर्त्तव्य है कि वे जीवन की इस आस्था को पुनरानुप्राणित करें। हास्य का आनन्द निष्कलङ्क और मङ्गल-मूलक है और उसकी साधना का प्रारम्भ तथा अन्त दोनों इस शाश्वत उद्देश्य की सीमा में पल्लवित हों।

शांत्यालय
बी० ७।११७ बागहरा
वाराणसी
१५ नवम्बर १९५९

कृष्णमोहन गुप्त
एम. एस सी., एल एल. बी., साहित्य रत्न
ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय
एम० ए०